जून 2017 प्रथम पक्ष

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का पाक्षिक मुखपत्र

स्थापित–1906

पृष्ठः 52 मूल्यः 7.00 रुपये

उपाध्याय श्रमण पू. श्री फूलचंद जी म. सा. स्मृति दिवस 17 जून

भरी गर्मी में पक्षियों को लगती प्यास कर रहे हैं हम सबसे पानी की आस
फ़र्ज हमारा न भूले, मूक-बधिर के लिए, लाभ भरपूर उठायें, हो पुण्य का आभास

जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से परम श्रद्धेय गुरु भगवंतों को हार्दिक-हार्दिक वंदन-नमन

RNI NO. - 2123/57
Date of Posting 07-08/06/2017
at Lodhi Road, H.O. New Delhi-110003
जून 2017, प्रथम पक्ष

Postal Regn. No. DL(ND) 11/6156/2015-16-17
U(C) 66/2015-17 Licenced to Post
Without Pre-Payment
Date of Printing 04 June 2017

श्री अशोकलाल जी पारख जैन

सौ. इंदुमती पारख जैन

मानव सेवा योजना आधार स्तम्भ

श्रीमान अशोकलाल जी बन्सीलालजी पारख जैन

कॅमल हाऊस, अहमदनगर (महाराष्ट्र)

राष्ट्रसंत आचार्य भगवंत पूज्यश्री आनंदऋषि जी म.सा. के वास्तव्य से पुनीत हुई। अहमदनगर की पावन धरा पर आपने पारख परिवार को वास्तव्य करने का सुअवसर मिला। यही हमारे लिए एक बड़ी उपलब्धि है क्योंकि अहमदनगर शहर एक छोटा राजस्थान ही है। जहाँ हजारों समाज बाँधव अपने परिवार के साथ सुखी जीवन अनुभव कर रहे हैं। वही खुशी पारख परिवार को भी अहमदनगर में मिल रही है।

जैसे राजस्थान प्रदेश की पावन धरा में सैंकड़ों तीर्थ स्थान बसे हुए हैं, जहाँ हम दर्शन पाते ही बड़ा आनंद लेते हैं, वैसे ही अहमदनगर शहर एक बड़ा तीर्थ स्थान ही है। आचार्य भगवंत की समाधि, साध्वी निवास, भक्त निवास से परिपूर्ण धार्मिक परीक्षा बोर्ड का परिसर हमेशा साधु–साध्वी जी के वास्तव्य से प्रसन्न रहता है। ऐसे अहमदगनर शहर में पारख परिवार को कॅमल सुपरफाईन सागो इस ब्रॉण्ड से व्यवसायिक स्थिरता प्राप्त हुई और आज अत्र–तत्र सर्वत्र कॅमल एक लोकप्रिय ब्रॉण्ड बन चुका है। अहमदनगर के आड़त बाजार में मैसर्स अशोक बन्शीलाल पारख यह व्यवसायिक प्रतिष्ठान एक विश्वसनीय पीढ़ी के रुप में सर्वत्र सादर प्राप्त कर रहा है। इस व्यवसाय के संस्थापक सदस्य श्री अशोकलाल जी पारख, उनकी धर्मपत्नी सौ. इंदुमती पारख, सुपुत्र श्री अतुलजी, अभयजी तथा स्नूषा, दर्शना एवं मीना नाती– पोती समृद्ध परिवार के साथ जीवन का आनंद ले रहे हैं।

हर मनुष्य जन्म लेता है, अनेकों समस्याओं के बाद उसे किए कष्ट की फलश्रुती मिलती है। मैं कर सकूं तो अच्छा ही करुंगा, कभी किसी का बुरा नहीं चाहूँगा। इस जीवन प्रणाली का सुखद अनुभव लेते हुए पूरा पारख परिवार धर्म प्रेम, समाज प्रेम तथा व्यवसाय में अपनी श्रद्धा अर्पित कर रहा है। धार्मिक क्षेत्र में जैन श्रावक संघ के कार्यकारिणी सदस्य के रुप में श्री अशोक जी एवं उनका समस्त पारख परिवार यथोचित योगदान देते हैं। समाज में तथा अन्यंत्र भी पारख परिवार का नाम सर्वत्र सम्मान से लिया जाता है। बाराही माह तथा पर्युषण पर्व में सभी साधु–संतों की सेवा में पारख परिवार अग्रसर रहता है। ऐसे धर्मनिष्ठ पारख परिवार को मानव सेवा योजना के आधार स्तम्भ बनने पर श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की ओर से हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद।

मोहनलाल चोपड़ा जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष) **डॉ. अशोककुमार एन.पगारिया जैन** (राष्ट्रीय महामंत्री) **महेन्द्र बोकरिया जैन** (राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष) **महेश डाकोलिया जैन** (अध्यक्ष-मानव सेवा योजना) **राजेन्द्र लोढ़ा जैन** (मंत्री-मानव सेवा योजना)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-110001

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन द्वारा जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526, वेस्ट रोहतास नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12-शहीद भगतसिंह मार्ग, नई दिल्ली- 110 001 से प्रकाशित

श्रमण संघीय एवं जैन कॉन्फ्रेंस की आध्यात्मिक, सामाजिक गतिविधियाँ

रेलमगरा (राजस्थान) में अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर श्रमण संघीय महामंत्री पू. श्री सौभाग्यमुनि जी म. 'कुमुद' के सान्निध्य में श्री संपतलाल जी मेहता जैन को समाज रत्न तथा श्री इंद्रमल जी पगारिया जैन को समाज भूषण की पदवी से अलंकृत

रेलमगरा (राजस्थान) में अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर श्रमण संघीय महामंत्री पू. श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद' प्रवचन फ़रमाते हुए तथा साथ मे मंचासीन पू. श्री मदन मुनि जी म. तथा पू. श्री कमल मुनि जी म.

यमुना विहार दिल्ली में आयोजित किये गये नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का उप.प्र.पू. श्री सुव्रत मुनि जी म. आदि ठाणा के सान्निध्य में फीता काटकर उदघाटन करते हुए दिल्ली प्रांतीय अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन तथा साथ में दिल्ली प्रांतीय कार्यकर्त्ता।

अम्बाला (हरियाणा) में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल जी चोपड़ा जैन का माला पहनाकर स्वागत करते दिल्ली प्रांतीय अधिकारीगण।

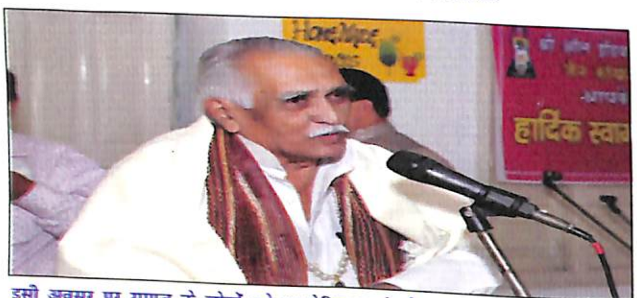

इसी अवसर पर समाज के लोगों को सम्बोधित करते जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल जी चोपड़ा जैन।

यमुना विहार दिल्ली में उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी पू. श्री पदमचंद जी मं. के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में आयोजित नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर के अवसर पर मौजूद दिल्ली प्रांतीय अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन एवं उनकी टीम।

अम्बाला (हरियाणा) में आयोजित महिला अधिवेशन के अवसर पर अपना उद्बोधन देते हुए जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय मंत्री श्री विमल जी जैन तथा उपस्थित महिला सदस्याएं।

अम्बाला (हरियाणा) में आयोजित महिला अधिवेशन के अवसर पर राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा सौ. रूचिरा जी सुराणा जी जैन राष्ट्रीय मंत्री श्रीमती मीना जी जैन को सम्मानित करती।

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का पाक्षिक मुखपत्र

श्रमणसंघ निर्देशेः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः।
स्थानकवासिजैनानां कॉन्फ्रेंसनामविश्रुता, समाजोत्थानकार्येषु संस्थेयमस्ति तत्परा।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

वर्ष-60 | अंक-11 | जून 2017 | प्रथम पक्ष | 07-08 जून | मूल्य एक प्रति 7 रुपये

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय	श्री अशोककुमार एन. पगारिया जैन	07
अध्यक्षीय उद्‌गार	श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन	09
धर्म के नाम पर ...	पू. श्री आनंदऋषि जी म.	10
काम करों	पू. श्री देवेन्द्र मुनि जी म.	12
श्रमण संघ के तीन ...	पू. श्री शिव मुनि जी म.	13
यातना से यत्ना तक ...	पू. श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद'	14
चाणक्य की झोपड़ी	पू. डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि जी म.	16
अब मन वीणी ...	पू. श्री आरतीज्योति जी म.	17
संयम की बेजोड़ ...	पू. श्री शैली जी म.	19
महासाध्वी राजस्थन प्रवर्तिनी ...	श्री औंकार सिंह सिरोया जी जैन	21
मेवाड़ संघ शिरोमणी ...	श्री प्रसन्न कुमार संचेती जी जैन	22
समर वैकेशन ...	श्री सुनील जी चोपड़ा जैन	23
दुराग्रही न बने ...	श्री अतुल जी जैन	24
अल्पसंख्यक युवाओं के ...	श्री संदीप जी भण्डारी जैन	26
पू. श्री अम्बेश गुरु जी ...	श्री पुखराज जी सोनी 'बिनोल'	28
पूज्य उपाध्यायश्री जी ...	डॉ. दीलीप धींग	29
श्रीसंघ की महत्ता ...	श्री तारांचद जी जोगराज जैन	33
पूज्या श्री शांतिकुंवर जी ...	सौ. प्रभा कल्याणमल जी जैन	35
स्वाध्याय अपनाए ...	सौ. दीपाली मुगदिया जी जैन	36
महिला शाखा द्वारा आयोजित गतिविधियाँ		38
समाचार प्रकाश		41
शोक समाचार		49

प्रधान सम्पादक
अशोककुमार एन. पगारिया जैन

सम्पादन सहयोगी
शेर सिंह जैन
बालचंद खरवड़ जैन

केन्द्रीय कार्यालय

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली

जैन भवन

12, शहीद भगत सिंह मार्ग
गोल मार्केट, नई दिल्ली-110 001

दूरभाषः 011 - 23363729, 23365420
फैक्स : 011 - 23344380
E - mail
aissjc1906@gmail.com
Website
www.jainconference.org

जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता हेतु शुल्क

संस्थागत	रु. 750/-
व्यक्तिगत	रु. 1000/-
पति-पत्नी के लिए	रु. 1500/-
जैन प्रकाश हेतु आजीवन सदस्यता	
12 वर्ष	रु. 1000/-

सम्पादक एवं जैन कॉन्फ्रेंस का लेखक के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं है। कृपया मौलिक विचार ही प्रेषित करें। किसी लेखक या पुस्तक से ली गई सामग्री का आभार अवश्य प्रकट करें। लेख एक पृष्ठ तक सीमित रखें तथा अपना नाम, पता एवं मोबाईल नंबर अवश्य लिखें। समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युग प्रधान, आगम अतिधन्वा,
आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनि जी महाराज
युवाचार्य श्री महेन्द्र ऋषि जी महाराज

उपाध्याय मण्डलः श्री विशाल मुनि जी महाराज 'वाचनाचार्य'
श्री मूलचंद जी महाराज
श्री रमेश मुनि जी महाराज
श्री जितेन्द्र मुनि जी महाराज
श्री प्रवीण ऋषि जी महाराज
श्री रवीन्द्र मुनि जी महाराज

प्रवर्तक मण्डलः श्री रूपचंद जी महाराज 'रजत'
श्री रमेश मुनि जी महाराज
श्री कुन्दन ऋषि जी महाराज
श्री सुमन मुनि जी महाराज
श्री रतन मुनि जी महाराज
श्री मदन मुनि जी महाराज
श्री प्रकाश मुनि जी महाराज 'निर्भय'
डॉ. श्री राजेन्द्र मुनि जी महाराज

महामंत्री - श्री सौभाग्य मुनि जी महाराज 'कुमुद'

मंत्री मण्डलः श्री शिरीष मुनि जी महाराज
(शिवाचार्य मुख्य सचिव)
श्री आशीष मुनि जी महाराज
श्री कमल मुनि जी महाराज 'कमलेश'

सलाहकार मण्डलः श्री सुमतिप्रकाश मुनि जी महाराज
श्री सहज मुनि जी महाराज
श्री सुकन मुनि जी महाराज
श्री सुरेश मुनि जी महाराज 'शास्त्री'
श्री तारक ऋषि जी महाराज
श्री रमणीक मुनि जी महाराज
श्री दिनेश मुनि जी महाराज
श्री विनय मुनि जी महाराज 'भीम'
श्री राम मुनि जी महाराज 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डलः श्री ज्ञानप्रभा जी महाराज
श्री चंदना जी महाराज
श्री सुधा जी महाराज
श्री सुप्रभा जी महाराज
श्री सरिता जी महाराज

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

विश्वस्त मण्डल (2011-2017)

1. श्री केसरीमल बुरड़ जैन, बैंगलोर - चेयरमैन
2. श्री कांतिलाल जैन, मुंबई - सदस्य
3. श्री नेमीचंद चोपड़ा जैन, पाली - सदस्य
4. श्री राजेन्द्र कीमती जैन, हैदराबाद - सदस्य
5. श्री राजेन्द्र प्रसाद कोठारी जैन, बैंगलोर - सदस्य
6. श्री शेर सिंह जैन, दिल्ली - सदस्य
7. श्री चन्दनमल चोरड़िया जैन, इन्दौर - सदस्य
8. श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नासिक - सदस्य
9. श्री पारस छाजेड़ जैन, मुंबई - सदस्य
10. श्री रमेश चंद जैन (काहनी), दिल्ली - सदस्य

पदेन सदस्य -

11. श्री अविनाश चोरड़िया जैन - पदेन सदस्य
12. श्री बालचंद खरवड़ जैन - पदेन सदस्य
13. श्री नेमनाथ जैन, इन्दौर - पदेन सदस्य
14. श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - पदेन सदस्य
15. डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन - पदेन सदस्य

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के पदाधिकारीगण (वर्ष 2016-2018)

	एस.टी.डी.	दूरभाष कार्यालय	दूरभाष निवास	मोबाइल	फैक्स
राष्ट्रीय अध्यक्ष :					
श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	0253	2461546, 2465569	2460026, 2461546	09423962818 09423963100	2461546
निवर्तमान अध्यक्ष :					
श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	0731	401157, 4011111		09303232777	4011110
चेयरमैन विश्वस्त मण्डल :					
श्री केसरीमल बुरड़ जैन, बैंगलोर	080	25475895, 25478567	25475901, 25475695	09844152853	41250211
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण :					
श्री जे. डी. जैन, गाजियाबाद	0120	2706100	2750100	09810006462	
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	02932	280898,280899	222125,325125	09829025729	222125
श्री सुवालाल वाफना जैन, धुले	02562	232033, 233133	235544, 235555	09422296155	
प्रमुख मार्गदर्शक :					
श्री कान्तिलाल एच. जैन, मुंबई	022	26398752	26352434	09821033225	26356983
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, दिल्ली	011	43573099,43573499		09313813899	23346899
श्री रामकुमार जैन, लुधियाना	0161	2449493, 2447538	2448714, 4413040	09814002335	2449957
श्री चंदनमल चोरड़िया जैन, इन्दौर	0731	2540914	2540900	09826022621	
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष :					
श्री विलास लोढा जैन (वरिष्ठ), अहमदनगर				09960666065	
श्री वालचंद खरवड़ जैन, मुंबई	022	29255921, 29250508	25222104	09821668548	29200223
श्री भंवरलाल डी. वोहरा जैन, मोलेला (राज.)				09324556349	
श्री ओंकारसिंह सिरोया जैन, उदयपुर	0294	2414033	2410374	09414167574	
श्री बालासाहेब चोरड़िया जैन, मुंबई	022	26367681	26367381	09324122233	
श्री तनसुख झामड़ जैन, औरंगाबाद	0240	2337015, 2324811	2480979	09822659910	
श्री रमेश भण्डारी जैन, इंदौर	0731	460069 4070069		09302103817	2460069
श्री विमलप्रकाश जैन, जालंधर	0181	5001111, 5019611		09815184311	
श्री भंवरलाल भण्डारी जैन, हैदराबाद				09440897417	
श्री वी. शांतिलाल पोखरना जैन, बैंगलोर			9845155799	09342535887	
श्री जगदीश चन्द्र जैन, पानीपत	0180	4009181		09896200081	
राष्ट्रीय महामंत्री :					
डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, पुणे	020	46703433	09422036831	09028736831	
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष :					
श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, दिल्ली	011	43573099, 43573499		09868125710	23346899
राष्ट्रीय मंत्री :					
श्री विमल जैन, अम्बाला	0171	3294322	09216701008	09466701008	
श्री संजय जैन, 'निशा' लुधियाना	0161	2621237		09417253101	
श्री कंवरलाल सूर्या जैन, भीलवाड़ा	01482	236641	239104	09414113056	
श्री सोहनलाल भण्डारी जैन, नाशिक				09823079708	
श्री ललित मोदी जैन, नाशिक	0253	2599400	2599500	09422246500	
श्री जयकुमार जैन, दिल्ली	011	27372290		09810672111	
श्री विजय डागा जैन, मुंबई	022	28470384	28398165	09821095976	
श्री पारस दुग्गड़ जैन, धुले	02562	278519		09423193447	
श्री सुशील जैन, गाजियाबाद				09810078214	
श्री आनंद कोठारी जैन, बैंगलोर	080	28538338		09341234176	
श्री प्रसन्नकुमार संचेती जैन, चेन्नई				09035010666	
श्री सागर सांखला जैन, भोसरी				08888090999	

सम्पादकीय

जैन कॉन्फ्रेंस की गतिविधियों में आई तीव्रता

– **डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन,** राष्ट्रीय महामंत्री, जैन कॉन्फ्रेंस

E-mail : ashokpagariyaandco@gmail.com

समसम्मानीय भाईयों एवं बहनों,

सादर जय जनेन्द्र!

गर्मी की छुट्टियाँ खत्म होने वाली हैं और बच्चों के स्कूल जून महीने के में शुरू होने वाले हैं। आप सभी अभिभावक विशेष रुप से बच्चों को स्कूल में दाखिल करने हेतु प्रवेश लेना, किताबें खरीदना, नई यूनिफॉर्म आदि लेने में व्यस्त होंगे। अभी 12वीं परीक्षा का रिजल्ट घोषित हुआ है। मैं उन सभी छात्र-छात्राओं (विद्यार्थियों) का तहेदिल से अभिनंदन करता हूँ जो उत्तीर्ण हुए और उनके आगे का कैरियर (भविष्य) के लिए ढ़ेर सारी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

इस माह के अंक में हम जैन छात्र-छात्राओं के लिए **'अल्पसंख्यक समाज'** की हैसियत से सरकार द्वारा जितनी भी छात्रवृत्तियाँ एवं सभी छात्रवृत्तियों के लिए आवश्यक दस्तावेज तथा स्कील डवलपमेन्ट के बारे में भी संदीप जी भंडारी का लेख प्रकाशित कर रहे हैं, मुझे आपसे अनुरोध है कि इन लेखों को पढ़कर जानकारी हासिल करें और सभी छात्र-छात्राओं को स्कॉलरशिप दिलाने हेतु प्रयास करें। वैसे तो अपने जैन समाज की कई संस्थाएँ जो जैन समाज के छात्र-छात्राओं के लिए गुणवत्ता के आधार पर छात्रवृत्तियाँ देती हैं, उन सभी संस्थाओं की जानकारी भी हम प्रकाशित करेंगे, उसका भी आप लाभ उठा सकते हैं।

जून माह का बहुत ही महत्त्व होता है, इसी महीने में वर्षा ऋतु की पहली बारिश प्रारंभ होती है, साधु-संतों की वर्षावास की तैयारियाँ भी इसी माह में होती है। छात्रों में परीक्षाओं के निर्णय इसी महीने में घोषित होते हैं। इसलिए सभी के लिए यह माह बड़ा व्यस्त होता है। आप सभी को मैं इस माह की सफलता के लिये धन्यवाद देता हूँ।

जैन कॉन्फ्रेंस संविधान संशोधन का कार्य प्रगति पर है, सदस्यों की संविधान संशोधन/ सुधार हेतु विशेष रुची को मद्देनजर रखते हुए अन्य सुझाव भेजने की तारीख 30 जून 2017 तक बढ़ायी गयी है। आपके सुझाव दिनांक 30 जून 2017 तक लिखित रुप से जैन भवन, नई दिल्ली में ई-मेल, डाक, कुरिअर द्वारा भेज सकते हैं और अगर आप चाहें तो 21 जुलाई 2017 को प्रातः 10:30 बजे से जैन भवन में पधारकर स्वयं उपस्थित होकर अपने सुझाव के बारे में विस्तृत चर्चा कर सकते हैं।

जैन कॉन्फ्रेंस एवं अखिल भारतीय स्वाध्याय संघ की ओर से पंच दिवसीय स्वाध्याय शिविर आयोजन नासिक में होने जा रहा है। दिनांक 21 जून 2017 से 25 जून 2017 तक यह **'पंच दिवसीय शिविर'** का आयोजन चोपड़ा लान्स, नाशिक, (महाराष्ट्र) में किया जा रहा है। स्वाध्याय शिविर में स्वाध्यायियों के आवास-निवास तथा गौतम प्रसादी की पूरी व्यवस्था / प्रबंध किया जा रहा है। मेरा आपसे अनुरोध है कि इस स्वाध्यायी शिविर में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर शिविर को सफल बनावें तथा जैन कॉन्फ्रेंस के इस नये उपक्रम में अपना योगदान दें।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के पदाधिकारीगण (वर्ष 2016-2018)

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री **श्री दिनेश एम. सुराणा जैन,** दिल्ली	011	27296131		09310054428	
राष्ट्रीय प्रचार - प्रसार मंत्री : **श्री सुभाष जैन 'लिली',** मंगलदेश (पंजाब) **श्री रिखबलाल सांखला जैन,** मुंबई				09814699393 09820668898	
राष्ट्रीय युवा शाखा : अध्यक्ष- **श्री शशिकुमार कर्नावट जैन 'पिन्टू',** मालेगांव महामंत्री- **श्री रवि मदनलाल लोढ़ा जैन,** औरंगाबाद	0240		2338224	09823955515 09822276008	
राष्ट्रीय महिला शाखा : अध्यक्षा - **श्रीमती रुचिरा ललित सुराणा जैन,** मुंबई महामंत्री - **श्रीमती विनिता राजेन्द्र ओरड़िया जैन,** सूरत			09423966963	09820004079 09426115241	
जीवन प्रकाश योजना : अध्यक्ष - **संजय बोथरा जैन,** घोटी मंत्री - **श्री लादुलाल बाफना जैन,** मुंबई				09822596781 09833866852	
जीव दया योजना : अध्यक्ष - **श्री प्रकाश सिंघवी जैन,** सूरत मंत्री - **श्री छितरमल रांका जैन,** सूरत				09879550981 08980018801	
मानव सेवा योजना : अध्यक्ष - **श्री महेश डाकोलिया जैन,** इंदौर मंत्री - **श्री राजेन्द्र लोढ़ा जैन,** इन्दौर	0731 0731	2531066 28753681	2970666 2780090, 2785232	07773866000 09425062147	531066
ज्ञान प्रकाश योजना : अध्यक्ष - **श्री भंवरलाल पगारिया जैन,** बैंगलोर मंत्री - **श्री अशोक कुमार धोका जैन,** बैंगलोर				09448238429 09844058123	
वैय्यावच्च समिति : अध्यक्ष - **श्री कांतिलाल चोपड़ा जैन,** नाशिक मंत्री - **श्री महावीर नाहर जैन,** वड़गांवशेरी, पुणे	0253	2575799		09422944800 09822285538	

:: सम्माननीय प्रांतीय अध्यक्ष मण्डल ::

- श्री आनन्दमल छल्लानी जैन (तमिलनाडु) मो. : 098410 30035
- श्री महावीरचंद अलिजार जैन (आंध्र प्रदेश) मो. : 094924 44444
- श्री सुरेशचन्द छल्लाणी जैन (कर्नाटक) मो. : 093412 32573
- श्री अतुल जैन (दिल्ली) मो. : 098110 75336
- श्री विनय जैन (हरियाणा) मो. : 086075 00001
- श्री राकेश जैन 'लक्की' (पंजाब) मो. : 098150 20661
- श्री मनमोहन जैन (उत्तर प्रदेश) मो. : 098370 67082
- श्री विमल तातेड़ जैन (मध्य प्रदेश) मो. : 098260 62838
- श्री नेमीचंद धाकड़ जैन (राजस्थान) मो. : 094220 74172
- डॉ. गुमानसिंह पीपाड़ा जैन (पश्चिम बंगाल) मो. : 098300 30774
- श्री मनीश नारायणदास लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र) मो. : 094222 22138
- श्री कांतिलाल बोथरा जैन (मुंबई-पुणे) मो. : 094223 05755
- श्री चन्द्रेश आर. कन्हारा जैन (गुजरात) मो. : 095958 91111

:: सम्माननीय प्रांतीय महामंत्री मण्डल ::

- श्री महावीरचन्द बोहरा जैन (तमिलनाडु) मो. : 096772 47246
- श्री दिलीप कुमार धारीवाल जैन (आन्ध्र प्रदेश) मो. : 098480 54130
- श्री मनोहरलाल लुकड़ जैन (कर्नाटक) मो. : 098806 28555
- श्री जसवंत जैन (दिल्ली) मो. : 098104 35108
- श्री राजेन्द्र जैन (हरियाणा) मो. : 099963 33388
- श्री अरुण जैन (पंजाब) मो. : 098155 66885
- डॉ. रश्मिकांत जैन (उत्तर प्रदेश) मो. : 098083 79242
- श्री संजय नवलखा जैन (मध्य प्रदेश) मो. : 094251 01230
- श्री बलवंत सिंह हींगड़ जैन (राजस्थान) मो. : 098297 85197
- श्री आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल) मो. : 098302 49151
- श्री मनोजकुमार एम. सेटिया जैन (महाराष्ट्र) मो. : 094222 21511
- श्री रविन्द्र रमनलाल लुकड़ जैन (मुंबई-पुणे) मो. : 098231 29411
- श्री दिनेश संचेती जैन (गुजरात) मो. : 093769 01329

जैन कॉन्फ्रेंस की गतिविधियाँ जोर-शोर से जारी हैं। युवा शाखा एवं महिला शाखा की गतिविधियाँ एवं उपक्रम सौल्लास सम्पन्न हो रहे हैं। जीवन प्रकाश योजना तथा मानव सेवा योजना के माध्यम से समाज के जरुरतमंद छात्र-छात्राओं एवं महिलाओं के लिए अर्थिक सहायता दी जा रही है। आप भी इस जनसेवा के पक्ष में दान देकर अपनी आहुति (भागीदारी) निभा सकते हैं। आप भी इस कार्य से जुड़ जाईये यही मेरा आपसे करबद्ध निवेदन है।

जैन प्रकाश के बारे में फिर आपसे अनुरोध करता हूँ कि एक परिवार में एक जैन प्रकाश भेजने हेतु अपना अनुरोध पत्र भेजिए तथा जिन-जिन सदस्यों को 'जैन प्रकाश' पाक्षिक मिलता नहीं हैं, उन्हें अपना सदस्यता फार्म तथा निवास, पत्राचार पता भेजकर या पत्र द्वारा भेजने की कृपा करनी है। जिससे इस समस्या का शीघ्र समाधान हमारी ओर से किया जाएगा। आपकी जैन भवन के व्यवस्थापन तथा कामकाज के विषय में किसी भी प्रकार की शिकायत हो तो हमें लिखित रुप से भेजने की कृपा करें, हमारी पूरी कोशिश रहेगी कि आपकी समस्या का समाधान करने का प्रयास करेंगे, क्योंकि हमारा विश्वास है कि : -

There can't be a lock manufactured without key. Similarly there can't be a problems without solution. We have to find it out with patience.

हर समस्या का समाधान होता है, बस ढूढ़ने के लिए प्रयास करने की आवश्यकता है और इस कार्य में हमें आप सभी का सकारात्मक सहयोग चाहिए। हम अपेक्षा रखते हैं कि हम सब मिलकर जैन कॉन्फ्रेंस की गतिविधियों को सुचारू रूप से कार्यान्वित करेंगे। धन्यवाद!

इस पखवाड़े में उपाध्याय श्रमण पूज्य श्री फूलचंद जी म. सा. का स्मृति दिवस एवं आचार्य श्री काशीराम जी म. सा. जन्म दिवस है। सभी गुरु-भगवंतों के पावन श्रीचरणों में हार्दिक वंदन अभिनंदन एवम! नमन !

।।नमो लाए सव्व साहूणं।।

✧✧

महाभारत ...

हस्तिनापुर राज्य के महामंत्री विदुर धर्मनिष्ठ एवं दूरदर्शी महापुरुष थे। महाराज धृतराष्ट्र समय-समय पर उनका मार्गदर्शन प्राप्त करते रहते थे। विदुर निर्भीकता के साथ उन्हें सारी बात कहते और सलाह देते। संयोग ऐसा था कि विदुर की सलाह टालने पर धृतराष्ट्र को कष्ट उठाना पड़ता था, इसलिए वह प्रायः उनकी बात टालते नहीं थे।

जब दुर्योधन धर्म विरुद्ध और मर्यादाहीन आचरण करने लगा तो विदुर चिंतित हो उठे। उन्हें कौरवों के अनिष्ट की अशंका सताने लगी। उन्होंने इस संबंध में महाराज को सचेत करने का फैसला किया।

विदुर ने धृतराष्ट्र से निवेदन किया - 'राजन्! हमारे धर्मशास्त्र कहते हैं कि संपूर्ण कुल के हित के लिए एक व्यक्ति का त्याग, ग्राम हित के लिए कुल का त्याग, देश हित के लिए ग्राम का त्याग तथा आत्मकल्याण के लिए भूमंडल का त्याग ही धर्म है। आपको कुल और राज्य के हित में अपने पुत्र का त्याग करना होगा।' धृतराष्ट्र ने यह सलाह नहीं मानी, परिणामस्वरूप महाभारत हुई।

अध्यक्षीय उद्‌गार

प्रकृति एवं प्राणियों के सहयोगी बनकर चलें

– **मोहनलाल चोपड़ा जैन,** राष्ट्रीय अध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस
E-mail : chopdagroup@gmail.com

सम्माननीय बन्धुओं, बहनों

सादर जय जिनेन्द्र!

प्रकृति और प्राणियों के सहयोगी बनकर चलने का अर्थ स्वयं के लिए सहयोगी बनना है। जीवन और जगत का संपूर्ण व्यवहार प्रकृति और प्राणियों के पारस्परिक सहयोग से चलता है। **"परस्परोप ग्रहो जीवानाम्"** का सूत्र इसी ओर संकेत करता है। भगवान महावीर ने प्रकृति एवं प्राणियों की रक्षा एवं सहयोग के लिए बुनियादी रूप से चिंतन दिया है। साधु और गृहस्थ इन दोनों के महाव्रतों और अणुव्रतों का प्रारम्भ सबसे पहले **'अहिंसा'** से होता है। जैसा हम स्वयं के लिए चाहते हैं, वैसा ही अन्यों के लिए चाहें और करें। मन, वचन और कर्म से स्वार्थ के वशीभूत होकर प्रकृति और प्राणियों की हिंसा और विराधना पाप है।

भारतीय दर्शनों में प्रकृति और प्राणियों की रक्षा के लिए निश्चित रूप से काफी कुछ कहा गया है, किंतु जैन धर्म में इस दृष्टि से बड़ी सूक्ष्मता के साथ चिंतन हुआ है। पृथ्वी, पानी, वायु, अग्नि, वनस्पति आदि सभी में जीवों की सत्ता है। जब इनके साथ छेड़छाड़ होती है तो सम्पूर्ण पर्यावरण प्रदूषण का शिकार बनता है। यह सर्व विदित है कि आज पर्यावरण प्रदूषण और असंतुलन तेजी से बढ़ रहा है। यही एक कारण है कि ग्लोबल वार्मिंग से धरती का तापमान बढ़ा है और बढ़ेगा जिससे ग्लेशियर पर जमी बर्फ पिघलने लगेगी, समुद्र में पानी की मात्रा बढ़ जायेगी। अर्थात् हर साल उसकी सतह में वृद्धि होती जायेगी। समुद्रों की सतह बढ़ने से स्पष्ट है कि प्राकृतिक तटों का कटाव शुरू हो जायेगा। जिससे एक बड़ा हिस्सा डूब जायेगा और वहाँ रहने वाले लोग बेघर हो जायेंगे। आये दिन भूकम्प के झटके हम सभी देख ही रहे हैं।

जैन धर्म का मूल संदेश है कि हम सभी प्रकृति एवं प्राणियों का विनाश करके नहीं अपितु प्रकृति एवं प्राणियों के सहयोगी बनकर चलें। हम धर्म स्थानों पर बैठकर केवल अहिंसा का उद्‌घोष करके ही अपने कर्तव्यों की इतिश्री नहीं करलें अपितु जीवन व्यवहार में अहिंसा को स्थान दें।

इन दिनों भीषण गर्मी का मौसम चल रहा है। बेचारे मूक पशु-पक्षी भी इस गर्मी से त्रस्त हैं। ऐसी स्थिति में हम सभी को चाहिए कि अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार पशु-पक्षियों के घास, दाना, एवं पीने की पानी की व्यवस्था अवश्य करें। प्रत्येक घर की छत, बालकनी या जैसी भी उचित व्यवस्था हो बेजुबान पक्षियों के लिए पानी जरूर भर कर रखें। जीव दया एक तरह से अपनी दया है।

जैन कॉन्फ्रेंस के द्वारा जीवदया योजना में भी आप सहयोगी बन सकते हैं और जीव मात्र की सेवा में अपना सहयोगी हाथ बढ़ा सकते हैं।

इस पखवाड़े में उपाध्याय प्रवर पू. श्री फूलचंद जी म. का दिनांक 17 जून को स्मृति दिवस तथा तत् समय आचार्य पू. श्री कांशीराम जी म. का 24 जून को जन्म दिवस आ रहा है। दोनों महापुरुषों के चरणों में शत्-शत् वंदन अभिनंदन नमन्। ✧✧

नाटकीय ढंग से स्वागत हुआ। जो भी आश्रमवासी आश्रम छोड़कर जाना चाहता है, वह सशंक होकर या तो उसे मरवा डालता या हैरान करता। रायन आश्रम देखकर ज्यों ही गुआना एयरपोर्ट पर पहुंचे, अपने दल सहित गोलियों से बींध दिये गए। हा-हाकार मच गया। जोन्स को ड़र था कि गुयाना का पुलिस दल आ पहुंचेगा और बुरी मौत मारे जायेंगे, इसलिए उसने सभी आश्रमवासियों को स्वाभिमानपूर्वक मर जाना चाहिए, ऐसी प्रेरणा दी। आश्रम के युवक डॉक्टर ने 'जोन्स' के आदेश से स्ट्रॉबेरी की सुगंध वाला विषमिश्रत स्वादिष्ट पेय तैयार किया। एक बहुत बड़े टब में भरकर मैदान के किनारे रखा गया। बालको को जबरन माताओं की छाती पर से खींचकर सर्वप्रथम उनके मुंह में यह पेय ड़ाला गया। कहीं कोई भाग न जाए, इसके लिए पहरा बढ़ा दिया गया था। लगभग 900 आश्रमवासियों को यह विषमिश्रत पेय पिलाया गया। लगभग 800 लोगों के पासपोर्ट उसने जब्त कर रखे थे, ताकि कोई भाग न जाए। अंत में स्वयं ने भी आत्म हत्या कर ली। कितनी भयंकर सामूहिक हत्या थी यह! हिप्नोटिक और मैग्नेटिक प्रभाव वाले धर्म-गुरु भगवान और पैग़म्बर बनकर लोगों की विचार शक्ति और श्रद्धा को धर्म और सम्प्रदाय के नाम से अन्धश्रद्धा में लपेट कर अपने चरणों में समर्पित करने को विवश कर देते हैं और फिर विनाशलीला का सृजन करते हैं, इसका यह ज्वलंत उदाहरण है।

✧✧

।।उत्साह भरा जीवन।।

एक चौराहे पर तीन यात्री मिले। तीनों के कंधों पर दो-दो झोले आगे-पीछे लटके हुए थे। अपनी लम्बी यात्रा से तीनों थके हुए थे लेकिन एक यात्री के चेहरे पर प्रसन्नता और उत्साह का भाव था। दूसरा यात्री श्रम से थका हुआ तो था, लेकिन निराश या क्लांत नहीं था, पर तीसरा बेहद मुर्झाया हुआ और दुःखी दिख रहा था। तीनों एक पेड़ की छाया में बैठकर आराम करने लगे। बातचीत होने लगी कि किसकी झोली में क्या रखा है। एक ने बताया कि उसने अपनी पीछे की झोली में कुटुम्बियों और उपकारी मित्रों की भलाईयाँ भर रखी थीं और सामने की झोली में लोगों की बुराईयाँ रखी थीं। दूसरे ने आगे के झोले में अपने मित्रों और हितैषियों की अच्छाइयाँ लटका रखी थी, और उनकी बुराइयों की थैली पीछे लटका रखी थी, जिन्हें देखकर अपनी सराहना करता और खुश होता।

फिर तीसरे यात्री से उन दोनों ने पूछा तुम्हारे झोलों में क्या भरा है? आगे का झोला तो काफी भारी लगता है पीछे का झोला हल्का है। उसने बताया कि उसने भी अच्छाईयों की थैली आगे और बुराइयों की थैली पीछे लटका रखी थी लेकिन पीछे की थैली में एक छेद है इसलिए बुराईयाँ टिकी नहीं, एक-एक कर गिर जाती हैं और पीछे का वजन हल्का हो जाता है। जिस यात्री ने आगे के झोले में अच्छाईयाँ और पीछे के झोले में बुराईयाँ भर रखी थी वह प्रसन्न था क्योंकि चलते समय उसकी नजर हमेशा अच्छाईयों पर ही पड़ती थी और बुराईयों को वह भूला रहता था। जिसके थैले में छेद था वह उत्साह से भी भरा रहता है। क्योंकि चलते समय वह आगे लटकी अच्छाईयों को तो देखता ही था, उस पर बुराइयों का वजन भी कम रहता था। वे रास्ते में धीरे-धीरे गिर जाती थीं। लेकिन जिसने बुराईयों की थैली आगे और अच्छाईयों की थैली पीछे लटका रखी थी, वह हमेशा थका हुआ और निराश रहता था। यही जीवन यात्रा का सार तत्व है।

– रमेश जैन

धर्म के नाम पर होने वाली भयंकर हिंसाएँ

- आचार्य सम्राट पू. श्री आनंदऋषि जी म.सा.

इसी प्रकार धर्म के नाम से या धर्म खतरे में है, ऐसे नारे लगाकर परस्पर दो धर्म-सम्प्रदायों का लड़ना-लड़ाना और एक दूसरे के प्राणों के ग्राहक बन जाना कभी धर्म नहीं हो सकता है। जेरूसलम में लगभग सौ वर्ष तक क्रूसेड (धर्मयुद्ध) चलता रहा, मुस्लिमों और ईसाईयों के बीच में। इसी प्रकार भारत में भी आए दिन साम्प्रदायिक दंगे, धर्म-मजहब के नाम को लेकर होते हैं, प्राचीनकाल में भी जैनों के साथ वैदिकों का, बौद्धों के साथ वैदिकों का घोर संघर्ष हुआ। जिसमें जैनों और बौद्धों पर बहुत अत्याचार हुए। इन सब धर्म के नाम पर होने वाली लड़ाईयों में हजारो आदमी मौत के घाट उतार दिए जाते थे। हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के विभाजन के समय, नोआखाली के दंगे के समय धर्म के नाम पर हजारों निर्दोष व्यक्तियों को मौत के घाट उतार दिया गया।

एक विचित्र हिंसा है धर्म के नाम पर! शायद पहले यह विश्व में कहीं हुई हो तो पता नहीं। अभी-अभी कुछ वर्षों पहले एक शैतान ने की है। -इंडिया ना पोलीश' में सन् 1931 में 'जीम वोरन जोन्स' नामक एक लड़का पैदा हुआ। बचपन से माँ लाईनेटा से उसे ऊटपटांग विचार मिले। 14 वर्ष की उम्र में वह धर्मगुरु बन गया। 18 वर्ष की उम्र में विवाह कर लिया। एक पुत्र हुआ। 8 को दत्तक लिया। 'पीपल्स टेम्पल' चर्च की स्थापना की। केलिफोर्निया के रेडवुड जंगल में जाकर आश्रम की स्थापना की। एक लाख डॉलर बैंक में जाकर जमा किय। फिर तो चारों ओर दसकी प्रशंसा होने लगी। अमेरिका और रूस के राजनेता एवं उच्चाधिकारी उससे मिलने लगे। इससे पीपल्स टेम्पल के अनुयायी बढ़ते जाते थे। अतः 1964 में जोन्स ने दक्षिण अमेरिका में गुयाना के जंगल में 'पीपल्स टेम्पल' नामक आश्रम की स्थापना की।

जोन्स पहले तो स्वयं को ईसा का अवतार बताता था, फिर वह स्वयं को भगवान् के रूप में परिचय देता था। लोगों के शरीर से कैंसर जैसे असाध्य रोगों को मिटा देने का वह दावा करता। उसके चित्रावली माला पहनने से रोग मिटता है, यों कहकर वह अपना छोटा चित्र बांटता था। भक्तों से उनकी बचत ही नहीं, उनकी समस्त मिल्कियत भी ले लेता था। इसी प्रकार उसने डेढ़ करोड़ डॉलर इकट्ठे कर लिये थे। जो उसकी आज्ञा न मानता या अश्रद्धा रखता, उन पर क्रूर अत्याचार भी करता था। जोन्स की राक्षसी लीला के समाचार केलिफोर्निया आदि नगरों में पहुंचते थे। उसके आश्रम के एक अधिकारी ने अमेरिका आकर कहा जोन्स 65 हजार डॉलर प्रतिमास इकट्ठे कर रहा है। सामूहिक हत्या कैसे की जाए? इसकी वह कवायद भी करता है। अनुयायियों को कैद में रखता है, उन पर शारीरिक, मानसिक जुल्म भी करता है। बालकों को नजरबंद रखकर उनके माँ-बाप से धन निकलवाता है।

अमेरिका के संसद सदस्य लियो रायन को गुआना की राजधानी जार्जटाऊन से 150 कि.मी. दूर घने जंगल में बसे हुए जोन्स टाऊन स्थित आश्रम की प्रवृत्ति देखने की इच्छा हुई, तार दिया। पर कोई जवाब नहीं। उसके वकील ने धमकी भरा उत्तर दिया। किंतु रायन साहस करके दलबल सहित आश्रम आये।

काम करो

– आचार्य सम्राट पू. श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

भगवान ने मनुष्य को दो हाथ दिए हैं-काम करने के लिए।

जो आदमी काम नहीं करता, बिना कोई काम किए ही खाता-पीता है, वह चोरी करता है, अपनी धरती माता के साथ अन्याय करता है, समाज पर एक बोझ बनकर जीवित रहता है।

काम करना सम्मान की बात है। सच्ची आनन्दानुभूति की कुंजी है। पूरी मेहनत से कमाकर खाई हुई रूखी रोटी भी अमृत के समान होती है।

और भूलिए नहीं, कोई काम असम्मानजनक नहीं होता। काम छोटा हो या बड़ा, ऊँचे पद पर आसीन होकर किया जाये अथवा नीचे पद पर, काम तो काम ही है। अतः छोटा से छोटा काम करने में भी हमें गौरव की अनुभूति ही होनी चाहिए।

एक नवयुवक विदेश से इंजीनियर बनकर आया। समाज में डाक्टर और इंजीनियर का पद बहुत ऊँचा पद माना जाता है। उस इंजीनियर युवक को अपनी योग्यता के कारण भारत लौटते ही एक बड़ी कम्पनी में प्रमुख इंजीनियर का पद मिल गया। नियुक्ति-स्थल पर उपस्थित होकर काम में जुट गया।

उस युवक का एक परम मित्र था। वह मित्र अपने विदेश से लौटे मित्र से मिलन के लिए बहुत आतुर था। उसने अपेक्षा की थी कि युवक इंजीनियर पहले उससे मिलने आएगा और उसके बाद ही अपनी नौकरी पर जाएगा। किन्तु ऐसा नहीं हुआ तो वह स्वयं ही उससे मिलने के लिए दिल्ली चला गया।

वह अपने मित्र के बंगले पर पहुँचा तो पता चला कि 'साहब' कारखाने का समय हो जाने से काम पर चले गए हैं।

कारखाने पहुँच कर वह 'इंजीनियर साहब' के ऑफिस में आया तो चपरासी ने बताया कि 'साहब' किसी मशीन के लिए पुर्जे को ठीक करने कारखाने के भीतर हैं। कह कर गए हैं कि उनका मित्र आए तो उसे वहीं ले आया जाये।

उस मित्र ने अब कारखाने के भीतर जाकर जो दृश्य देखा उस पर सहसा विश्वास नहीं हुआ। उसने देखा- इतना बड़ा इंजीनियर, इतना बड़ा साहब, एक मामूली मजदूर की तरह एक बड़ी मशीन के ऊपर चढ़ा हुआ, घुटनों के बल बैठे-बैठे मशीन के किसी पुर्जे को पेचकस से कस रहा था। उसके-धुले साहबी कपड़े तेल और कालिख से मैले हो गए थे। उसके चेहरे पर भी कालिख के दाग लग गए थे। किन्तु वे कालिख के दाग श्रम के मस्तक पर सिन्दूरी तिलक जैसे सुशोभित थे। उसके चेहरे पर अपने हाथों से काम करने की आनन्दाभूति छितरी हुई थी।

काम पूरा हो गया तो इंजीनियार नीचे उतर आया और प्रेमपूर्वक अपने मित्र से मिला। मित्र ने कहा – 'इतने लम्बे अन्तराल के पश्चात् तुमसे मिलकर चित्त प्रसन्न हो गया। किन्तु जो काम तुम कर रहे थे वह तो तुम किसी छोटे टैक्नीशियन को बताकर किसी मजदूर से भी करा सकते थे।'

यह सुनकर वह युवक इंजीनियर हँसते-हँसते बोला- 'अरे मित्र जो सन्तोष और आनन्द स्वयं अपने हाथ से काम करने में है वह दूसरों पर हुक्म चलाकर करा लेने में कहाँ धरा है।'

उस कर्मठ युवक का यह कथन बिल्कुल सत्य है। काम कीजिए, और फिर देखिए कि कर्मरत रहने वाले व्यक्ति कितने सुखी होते हैं। ❖❖

श्रमण संघ के तीन ज्योर्तिमय महापुरुष

- युग प्रधान आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिव मुनि जी म.

भगवान महावीर के शासन में अनेक महापुरुषों ने संयम ग्रहण किया। जीवन भर वीतरागता की आराधना करते हुए अंतिम समय में समाधि मरण के साथ शरीर को त्याग और अपने लक्ष्य सिद्धालय की यात्रा पर आगे बढ़ गये।

आचार्य सम्राट पूज्य श्री कांशीराम जी महाराज :

पंजाब की आचार्य परम्परा में आचार्य सम्राट पूज्य श्री कांशीराम जी महाराज का नाम बड़े ही गौरव के साथ लिया जाता है। उनके संयम, मर्यादा और ज्ञान की चर्चा पूरे भारतभर में रही। उन्होंने भारत के विभिन्न क्षेत्रों में विचरण करते हुए पंजाब परंपरा का गौरव बढ़ाया। अंतिम समय उन्होंने अम्बालाल जी म. की पावन धरा पर अपने शरीर को त्यागा । आज उनके नाम से पी. के. आर. स्कूल, कॉलेज आदि अनेकानेक संस्थाएं चल रही हैं। जहां हजारों ही नहीं लाखों बच्चे नैतिकता के संस्कार प्राप्त कर रहे हैं। पूज्य आचार्यश्री जी के स्मृति दिवस पर हम श्रमण संघ की ओर से हार्दिक श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं।

व्याख्यान वाचस्पति श्रमण संघीय मंत्री श्री मदनलाल जी महाराज : व्याख्यान वाचस्पति श्रमण संघीय मंत्री श्री मदनलाल जी महाराज का 54वाँ पुण्य स्मृति दिवस मनाया जा रहा है। पूज्य महाराजश्री जी का जीवन जिनशासन के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित रहा। श्रमण संघ के प्रति आपकी निष्ठा महत्वपूर्ण रही। आपने सादड़ी सम्मेलन में पहुंचकर पंजाब परम्परा का सकारात्मक रूप रखा। संगठन का बिगुल बजाया और आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज को प्रथमाचार्य बनवाने में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। आपकी परम्परा के सभी साधु-साध्वी किन्हीं कारणों से श्रमण संघ से अलग हो गये, किन्तु श्रमण संघ का सबके प्रति मैत्री भाव है। आपके द्वारा श्रमण संघ में हुए कार्यों के प्रति श्रमण संघ सदैव कृतज्ञ रहेगा। आपने अपना अंतिम समय जंडियालागुरु में समाधि पूर्वक वातावरण में व्यतीत करते हुए **साधु के तीसरे मनोरथ** को परिपूर्ण किया। आप जहां भी देवलोकों में विराजमान हों, हमारी यही प्रार्थना है कि आपकी शुभ दृष्टि श्रमण संघ पर बनी रहे। आप इसी प्रकार वीतराग मार्ग पर आगे बढ़ते हुए अपने लक्ष्य सिद्धालय को प्राप्त करें। यही मंगल भावना।

उपाध्याय श्रमण श्री फूलचन्द जी महाराज :

उपाध्याय श्रमण श्री फूलचन्द जी महाराज का स्मृति दिवस भी बड़े ही उत्साह भक्ति के साथ प्रति वर्ष मनाया जाता है। लुधियाना से सैकड़ों यात्री आपकी जन्म भूमि शिंगड़ा जाकर अपने श्रद्धा भाव व्यक्त करते हैं। मनुष्य के जीवन में बदलाव उसकी भक्ति से आता है। महापुरुष तो निमित्त मात्र हैं। आपकी प्रेरणा से बना हुआ प्रेम संघ आज भी निरन्तर आपकी भक्ति करते हुए आपके अधूरे कार्यों को पूर्ण करने में लगा हुआ है।

मेरा आपके साथ बचपन से संबंध था। सामायिक, प्रतिक्रमण के पाठ सीखने से लेकर आगम ज्ञान की परिपक्वता भी मैंने आपसे प्राप्त की। मैं आपके संयम जीवन से अति प्रभावित रहा। मैं आपके निकट रहकर आध्यात्मिक रहस्य प्राप्त करना चाहता था, किन्तु संयोग नहीं बन पाये।

आप जहां भी देवलोकों में विराजमान हों मैं आपके आध्यात्मिक जीवन को नमन करते हुए कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ तथा प्रार्थना करता हूँ कि आपकी शुभ दृष्टि श्रमण संघ पर बनी रहे और आपश्री जी अपने लक्ष्य सिद्धालय की ओर पुरुषार्थ करते रहें। यही हार्दिक मंगल कामना। ✧✧

यातना से यत्ना तक का महापथिक

– श्रमण संघीय महामंत्री श्री सौभाग्य मुनि जी "कुमुद"

यातना के महाशिखर से यत्ना के महाशिखर तक के सफल महायात्री जन जन के श्रद्धा केन्द्र मेवाड संघ शिरोमणी पूज्य प्रवर्तक गुरुदेव श्री अम्बालाल जी म. सा. की 112वीं जन्म जयंती पर उनका पुण्य स्मरण करते हुए उनके चरणों में नतमस्तक हैं।

मेवाड संत परम्परा के महान आचार्य मेवाड़ भूषण पू. श्री मोतीलाला जी म.सा के आकस्मिक संपर्क से उनके मन में जीव जगत से सम्बन्धित प्रश्नों की एक श्रृंखला खड़ी हो गई। साधु जीवन क्यों? ऐसी अनेक जिज्ञासाओं ने पू.श्री को गहरे तक निकट पहुंचाया। जिज्ञासा बढ़ती गई समाधान होते गये। अम्बालाल जी का क्रमशः विश्व स्वरुप का बोध होने लगा। भवभ्रमण की दुःह श्रृंखला अस्तित्व समझकर पू. श्री अम्बालाल जी की उद्विघनता बहुत बढ़ गई। श्रृंखला टूट भी सकती है। सत्य निश्चय और सत्य साधाना से यह तथ्य पाकर मानो वे धन्य धन्य हो गये।

शतस्वरुप का ज्ञान कैसे जीवन में उत्क्रांति ले आता है इसका यथार्थ समझना हो तो अम्बालाल जी के हार्द को समझो। उस युग का अनेक अधिकारों से युक्त मुर्हरिर का राजकीय पद उन्हें एक उपाधि जैसा प्रतीत होने लगा। संसार भाव की तीव्रतम उपरति अंतर में कुछ अलग ही तरह के निश्चय जाग्रत कर रही थी। सुदृढ़ निश्चय की श्रृंखला में एक निणर्य था रत्नत्रय की आराधना का चिंतन आलोडन विलोडन चलते हुए यह निश्चय इतना सुदृढ़ और सक्रिय हो गया कि एक दिन अम्बालाल जी सोनी (ओसवाल) के कदम गुरु चरणों की तरफ बढ़ गये और मन वही रम गया। खूंखार है यह संसार इसके पास साम, दाम, दण्ड, भेद चारो कूट नीतियाँ सर्वत्र मिल जाएगी। स्वयं या किसी के उकसान से दादी ने अम्बालाल जी को संसार में बाँधे रखने की उक्त नीतियों को काम में लेकर अंततः अम्बालाल जी को बंदी बना ही दिया। यत्ना के पथ पर आये अम्बालाल जी को यातना कोटड़ी में जाना पडा। वह मावली का कारागार था।

मैं यह नही जानता कि अम्बालाल जी के कारागृह में पहुंचने पर कारागृह पवित्र हुआ या वह स्वयं ही गुनहगार बन गया। बन्दी अम्बालाल जी वहां भी अपनी साधना में अहर्निश प्रवर्तमान रहे। दृढ़ निश्चयी व्यक्ति को गहरे से गहरा कष्ट भी अपने मार्ग से नही हटा सकता। विश्व स्वरुप का सम्यक् ज्ञान हो जाने पर ही ऐसा हो सकता है।

निरपराध विरक्तात्मा साधक अम्बालाल जी की यातनाओं का अन्त आया। जेल सुपरिडेन्ट एक सुश्रावक ने अध्यात्म के आराधक एक महान मुमुक्षु से सब कुछ जान कर महाराणा को यथार्थ से परिचित किया और यत्ना के पथिक की यातनाओं का अन्त आया और महाराणा की अनुमति से ही मंगलवाड ग्राम में मुमुक्षु अम्बालाल जी जो भाव दीक्षित तो थे ही व्यवहारतः भी संयम धर्म और संयमी वेशभूषा में प्रवेश कर गये। सच्चे साधक को अब तो एक राजमार्ग मिल ही गया फिर क्या था गति प्रगति में तीव्रता से आगे बढ़ते गये और शास्त्रों के गहन अध्येता बन गये। विनय सेवा और सारल्य से अलंकृत श्री अम्बालाल जी म. ने शीघ्र ही समाज में वह गौरव प्राप्त कर लिया जो

कई साधको को लम्बी साधना के बाद भी उपलब्ध नहीं होता। प्रगति चरण निरंतर बढ़े संघ नेतृत्व का अवसर अनायास निकट आकर खड़ा हो गया। आस्था केन्द्र प्रवर्तक श्री अम्बालाल जी म. बन गये।

यह देखा गया कि सत्पुरुषों की बहती जीवन गंगा के मुख्य दो रुप विस्तृत प्रशस्त होते रहते है एक उपकार पक्ष दूसरा चमत्कार पक्ष। पूज्य गुरुदेव श्री के चमत्कार पक्ष पर अभी मैं नही जा रहा हूं दूसरा कारण कि यह विषय ऊहापोह तो लाता ही साथ ही प्रश्नों की श्रृंखला खड़ी कर देता है। जिनका समाधान एक छोटे से आलेख में नहीं किया जा सकता। गुरुदेव का उपकार पक्ष भी बहुत प्रबल रहा। उसके उदाहरण के रुप में आप हमें देख सकते हैं एक छोटे से बारह वर्ष के बच्चे को गुरुदेव श्री ने अपने कर कमलों सदभावों से इस तरह संभाला कि आज हम आपके सामने है। कंकर को शंकर रुप प्रदान करने वाले ऐसे पूज्य गुरुदेव की कृर्तत्व शक्ति को वाह वाह किये बिना नहीं रह सकते। केवल मैं ही नही अन्य भी अनेक संत-सती के निर्माता गुरुदेव श्री रहे हैं। गुरुदेव के हाथों साधु-सध्वियों का निर्माण ही नही हुआ हजारों श्रावक-श्राविका भी उनसे निर्मित रहे। सैकड़ों अजैन को बोध देकर व्यसन मुक्त कर देना, इस्लाम के अनुयायियों के जीवन में भी दया और रहम का झरना बहा देने वाले पूज्य गुरुदेव जन जीवन के भी अनेक विध उपकारी हैं।

समय की पुकार से स्थानकवासी समाज में संघ निर्माण की आवाज़ बुलन्द हुई। गुरुदेव ने उस आवाज़ को संबल प्रदान किया और संप्रदाय व्यामोह से स्वयं को मुक्त कर श्रमण संघ का निर्माण किया। संगठन की धारा के आप जग प्रहरी और संरक्षक बने। अपने शेष जीवन में भी वे निरंतर श्रमण संघ का पोषण करते रहें। समाज में एकता की अलख जगाते रहे। स्वकीय आकाक्षांओं को पद लोलुपता को एक तरफ पटक कर वे सर्वदा श्रमण संघ के हित में काम करते रहे, हमें भी वे ही संस्कार दिये। परिणाम स्वरुप हम भी गुरुदेव श्री के संगठन की मुहिम और आगे बढ़ाने में यथा शक्ति काम कर रहे है।

✧✧

अगर आपको जैन प्रकाश पत्रिका नहीं मिल रहा है तो कृपया ध्यान दें

1. **आपने आजीवन सदस्यता फार्म पर जो पता दिया था अगर वह बदल गया है तो उसकी सूचना आजीवन सदस्यता क्रमांक के साथ केन्द्रीय कार्यालय को देवें।**

3. **अगर आपके परिवार में एक से अधिक पत्रिका प्राप्त हो रही है तो इसकी सूचना भी हमें आजीवन सदस्यता क्रमांक के साथ अवश्य देवें।**

4. **जैन प्रकाश पत्रिका से संबंधित अन्य कोई सुझाव एवं शिकायत है तो कृपया तुरन्त लिख भेजिए। सुझाव आपके, समाधान हमारा। आप अपने सुझाव अथवा शिकायत नीचे लिखे ई-मेल पर हमें तुरंत भेजें।**

aissjc1906@gmail.com एवम् ashokpagariyaandco@gmail.com

- राष्ट्रीय अध्यक्ष / प्रधान सम्पादक

चाणक्य की झोपड़ी

- पू. श्री डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि जी म.

यह बात उस समय की है जब चाणक्य एक जंगल में झोपड़ी बनाकर रहते थे। उनके निवास स्थल पर अनेक लोग उनसे ज्ञान व शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते। वह लोगों की समस्याओं का समाधान भी करते थे। जिस जंगल में वह रहते थे, वह पत्थरों और कंटीली झाड़ियों से भरा हुआ था। उस समय लोग नंगे पैर ही आया जाया करते थे। उनकी झोपड़ी तक पहुंचते-पहुंचते लोगों के पांव कांटे चुभने से लहूलुहान हो जाते। एक दिन कुछ लोग उस मार्ग से बेहद परेशानियों का सामना कर चाणक्य तक पहुंचे। वहां पहुंचने पर एक व्यक्ति उनसे निवेदन करते हुए बोला, 'आपके पास पहुंचने में हम लोगों को बहुत कष्ट हुआ। तमाम ज़मीन पथरीली व कांटों से भरी है। आप राजा से कहकर इस कंटीली ज़मीन व झाड़ियों को चमड़े से ढंकवाने की व्यवस्था करा दें। इससे लोगों का बचाव होगा और उनके पैर लहूलुहान नहीं होंगे।' उस व्यक्ति की बात सुनकर चाणक्य मुस्कुराते हुए बोले, 'महाशय, सिर्फ यहीं चमड़ा बिछाने से समस्या हल नहीं होगी। कांटे व पथरीले पथ तो इस विश्व में अनगिनत हैं। ऐसे में पूरे विश्व में चमड़ा बिछवाना तो असंभव है। हां, यदि आप लोग चमड़े के द्वारा अपने पैरों को सुरक्षित कर लें तो अवश्य ही पथरीले पथ व कंटीली झाड़ियों के प्रकोप से बच सकते हैं।' वह व्यक्ति सिर झुकाकर बोला, 'हां गुरुजी, मैं आपकी बात पर अमल कर ऐसा ही करुंगा।' इसके बाद चाणक्य बोले, 'मेरी इस बात के पीछे भी गहरा सार है। वह यह कि सब को सुधारने के बजाए पहले खुद को सुधारो।' खुद को सुधारने पर तुम अपने कार्य में विजय अवश्य हासिल कर लोगे। दुनिया को नसीहत देने वाला कुछ नहीं कर पाता जबकि उस नसीहत का स्वयं पालन करने वाला व्यक्ति कामयाबी की बुलंदियों तक पहुंच जाता है।' ✧✧

अगर आपको जैन प्रकाश पत्रिका नहीं मिल रहा है तो कृपया ध्यान दें

1. आपने आजीवन सदस्यता फार्म पर जो पता दिया था अगर वह बदल गया है तो उसकी सूचना आजीवन सदस्यता क्रमांक के साथ केन्द्रीय कार्यालय को देवें।

3. अगर आपके परिवार में एक से अधिक पत्रिका प्राप्त हो रही है तो इसकी सूचना भी हमें आजीवन सदस्यता क्रमांक के साथ अवश्य देवें।

4. जैन प्रकाश पत्रिका से संबंधित अन्य कोई सुझाव एवं शिकायत है तो कृपया तुरन्त लिख भेजिए। सुझाव आपके, समाधान हमारा। आप अपने सुझाव अथवा शिकायत नीचे लिखे ई-मेल पर हमें तुरंत भेजें।

aissjc1906@gmail.com एवम् ashokpagariyaandco@gmail.com

- राष्ट्रीय अध्यक्ष / प्रधान सम्पादक

doubt

उप-प्रवर्तिनी पू. श्री मोहनमाला जी म. के दीक्षा षष्टि पूर्ति 4 जून के पावन प्रसंग पर...

अब मन वीणी का आध्यात्मिक नाद गूँज उठा

- साध्वी पू. श्री आरती ज्योति जी म.

यह सत्य है कि जीवन ज्ञानी और अज्ञानी दोनों का एक समान होता है लेकिन जीवन वही सफल माना जाता है जिसने अपने जीवन में सम्यग् ज्ञान-दर्शन व चारित्र को समझ लिया हो, जीवन में उतार लिया हो यानि जीवन का सार समझ लिया हो ।

भगवान महावीर ने कहा है कि-सच्चा त्यागी वही है, जो जीवन में भोग-उपभोग के समस्त साधन उपलब्ध होने पर भी वो उनका त्याग कर दे। जीवन भी वैसा ही है, जैसा हम उसे बनाते हैं, वह मनुष्य की अपनी संरचना है, सृष्टि है। कुमारी माला समस्त सांसारिक सुविधाओं के बीच सुख-सुविधाओं का आनंद उठा रही थी। गृह कार्यों में निपुण सुशील, सुन्दर, रुपवान कन्या की परिवार जनों ने 17 वर्ष की आयु में सगाई कर दी। परिवार में पाँच भाईयों, चार बहिनों व भाभियों के अलावा पिता श्री अमरचन्द जी जैन 'भाबू' और बारहव्रती सुश्राविका माता श्रीमती द्रौपदी देवी की लाड़ली के विवाह की उमंगों ने सबको खुशियों से सराबोर कर दिया। यहाँ तक कि युवती माला स्वयं भी परिवारजनों के साथ मिलकर दहेज की तैयारी के कामों में हाथ बंटाने लगी।एक बार फगवाडा में पू. श्री ज्ञानमुनि जी म., श्री विमल मुनि जी म. आदि ठाणा का चातुर्मास हुआ। एक दिन कुमारी माला गुरुदेवों का प्रवचन बडे ध्यान से सुन रही थी कि प्रवचन में चल रहे एक दृष्टांत को सुनाते हुए, अचानक गुरुदेव ने उपस्थित जनों को ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार करने की प्रेरणा दी तो तब 11 या 12 वर्ष की कुमारी माला ने भी, बिना ब्रह्मचर्य शब्द की गहराई को जाने, अपना हाथ खडा करके शील व्रत अंगीकार कर लिया और अंतर्मन में हर्ष की अनुभूति करने लगीं।

जीवन की नियति से अनभिज्ञ मनुष्य सांसारिकता के पथ पर विचारों के कोलाहल के बीच अपने जीवन लक्ष्य से तब तक भटकता रहता है, जब तक उसके जीवन के सत्य पथ पर चलने के लिए आत्मा से मिथ्या विचारों की धूल न हट जाए। माला के हृदय से मिथ्या विचारों को हटाने का निमित्त भी बन गया, जब एक दिन माला ने सेठ सुदर्शन का चारित्र गुरुदेवों के मुखारविन्द से सुना। कुमारी माला का अंतर्मन झंकृत हो उठा, मन-मानस में मानो आध्यात्म का शंखनाद बजने लगा। विचारों का बाह्य कोलाहल तो थम गया लेकिन माला के हृदय में अंतर्द्वन्द्व अंतर्नाद करने लगा। स्वयं का हृदय ही वह सागर है, जिसकी गहराईयों में उतरकर ही परमात्म तत्व को पाया जा सकता है। धर्म को और गहराई से समझने की उत्कंठा ने युवती माला के हृदय में, समय-समय पर फगवाडा में पधारने वाले साधु-साध्वी वृन्द के प्रवचन श्रवण की लालसा को बढ़ा दिया।

जीवन की दशा व दिशा में एक नया परिवर्तन लाने वाले इस चातुर्मास के कुछ वर्षों के उपरान्त पंजाब प्रवर्तिनी महासती पू. श्री पार्वती जी महाराज की पौत्रा शिष्या महासती श्री सत्यवती जी म., महासती श्री सुभाषवती जी म., चारित्र चूड़ामणि महासती श्री प्रवेश कुमारी जी म. आदि ठाणा का चातुर्मास फगवाडा

में हुआ। माला भी नियमपूर्वक स्थानक जाने लगी, सामायिक-संवर, छोटी-छोटी तपस्याएँ आदि भी होने लगीं। माला की आध्यात्मिक पिपासा मानो तृप्ति पाने लगी थी, एक दिन मन की भावना ने हृदय की बात श्री प्रवेश कुमारी जी म. के समक्ष दो टूक शब्दों में ही खोल कर रख दी। माला कहने लगी कि **'गुरुनी जी! मैं दीक्षा लूँगी।'** महासती जी ने कहा कि **'तेरी तो सगाई हो चुकी है, फिर तू दीक्षा कैसे ले सकती है?'** लेकिन युवती माला तो निर्णय ले चुकी थी। माला ने इस दौरान अट्ठाई, सामायिकों की नवरंगी, पौषध आदि किए तो परिवारजनों को शंका होने लगी कि कहीं यह साध्वी न बन जाए, तो परिवार वालों ने इनके स्थानक जाने पर प्रतिबंध लगा दिया।

युवती माला परिवारजनों के विरोधों-अवरोधों से जूझने लगी, अनेक झंझावातों को सहने के उपरान्त अंततः परिवारजनों ने माला को दीक्षा ग्रहण करने की आज्ञा प्रदान कर दी, इतना सुनते ही माला की मन वीणा का आध्यात्मिक नाद गूँज उठा, श्रमणसंघ को एक ऐसी साध्वी का संसर्ग प्राप्त हुआ, जिनकी 311 व्रतों की तपश्चर्या ने न केवल इतिहास रचा अपितु **"तप विश्व शिरोमणि"** के गरिमापूर्ण पद को वास्तविकता भी प्रदान की।

कहते हैं कि, जैसे वाद्य यदि कुशल हाथों में हो तो उसका नाद विश्व को सम्मोहित कर देता है, ठीक उसी प्रकार आपकी गुरुनी चारित्र चूड़ामणि महासती श्री प्रवेश कुमारी जी म. से आपको कुशल दिशा-निर्देशन मिला जिससे आपकी संयमित आध्यात्मिक यात्रा के साथ-साथ छोटी-बडी तपस्याओं ने न केवल श्रमणसंघ को अभिभूत कर दिया अपितु समस्त विश्व को आकर्षित कर लिया । आपका जीवन श्रमणसंघ इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में अपनी आभा गौरवास्पद रुप से अंकित किए हुए है ।

मेरी, ऐसी महान, गुरुनीवर्या तपाचार्या, तप विश्व शिरोमणि, उप-प्रवर्तिनी पूज्या श्री मोहनमाला जी महाराज की दीक्षा षष्टि पूर्ति के मंगलोत्सव पर कोटिशः वन्दन-नमन एवं हार्दिक बधाई। ✧✧

भाई का कर्तव्य

एक बार दुर्योधन को गंधर्वों ने बंदी बना लिया। उसके सैनिक रोते हुए युधिष्ठिर की शरण में आए। युधिष्ठिर ने भीम को दुर्योधन को मुक्त कराने को आदेश दिया। भीम यह सुनते ही क्रोध से भर उठे और बोले – 'भैया आप उस पापी को मुक्त कराने की बात कर रहे हैं जिसके कारण हमें वनवास की यातनाएं झेलनी पड़ीं। आप उस अन्यायी को छुड़ाने की बात कर रहे हैं जिसने भरी सभा में द्रौपदी के चीरहरण का आदेश दिया था। भैया, ऐसे दुष्ट को छुड़ाने मैं नहीं जाऊंगा।'

यह सुनकर युधिष्ठिर की आंखें भर आईं। अर्जुन यह सब चुपचाप सनु रहे थे। उन्हें युधिष्ठिर की भावनाओं को समझने में देर नहीं लगी। वे दुर्योधन के प्रति अपने वैर भाव को भूल गए और चुपचाप गाण्डीव उठाकर चल पड़े।

उन्होंने गंधर्वों को पराजित कर दुर्योधन को छुड़ा लिया। इस पर धर्मराज युधिष्ठिर बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने अपने भाईयों को समझाया – 'हम पांच पांडव और एक सौ कौरव भले ही आपस में लड़ते-झगड़ते हैं, मगर बाहर वालों के लिए तो हम एक सौ पांच भाई हैं। कोई भी बाहरी ताकत हम में से किसी पर हमला करती है तो हमें उससे संघर्ष करना चाहिए।' युधिष्ठिर की इस बात को सुनकर भीम लज्जित हो गए। ✧✧

संयम की बेजोड़ मूर्त थे - साध्वी पू. श्री अजय जी म.

- पू. डॉ. शिवा जी म. की शिष्या पू. श्री शैली म.

एक जिज्ञासु ने एक विचारक से पूछा, इस संसार में दुर्लभ क्या है? विचारक ने गंभीर चिंतन के बाद कहा अन्य वस्तुएं मिलनी सरल है, सहज है पर सद्गुरु का मिलना कठिन है। सद्गुरु का महत्त्व अपरम्पार है, दीपक को प्रकाशित करने के लिए जैसे तेल की आवश्यकता है, घड़ी को चलाने के लिए चाबी की ज़रुरत है, शरीर को हृष्ट-पुष्ट बनाने के लिए भोजन की आवश्यकता है, वैसे ही जीवन को प्रगतिशील बनाने के लिए सद्गुरु की आवश्यकता है। सद्गुरु ही जीवन के सच्चे कलाकार होते हैं। एक ऐसे सद्गुरु थे सरलात्मका सरलमना सद्गुराणी श्री अजय कुमारी जी म. जिनको आज हमसे दूर गए ग्यारह वर्ष हो गए। जिनका जन्म हरियाणा की पावन भूमि 'चौपटा खेड़ी' जिला जिन्द में हुआ था।

5 नवम्बर 1947 को लाला रामभगत और माता श्रीमती धाईदेवी की कुक्षी से कन्या रत्न की उत्पत्ति हुई। कन्या रत्न को प्राप्त करके पिता की खुशी का कोई ठिकाना ना रहा, कुछ समय बीतने पर बालिका का नामकरण किया गया, चारों ओर से अपने आप का धनाढ़य जानकर पिता श्री रामभगत ने अपनी पुत्री का नाम लक्ष्मी रखा, बड़े लाड़ प्यार से पुत्री का लालन-पालन व विद्या अध्ययन कराया। विद्याध्ययन के साथ कन्या के मन में वैराग्य के भाव उत्पन्न हो चले गए। पर वैराग्य को सबसे अधिक बल तब मिला जब इनकी संसारिक बहन जिनको प्यार से 'छोटी' पुकारा जाता था। वर्तमान में उत्तर भारतीय प्रवर्तिनी के पद पर आसीन हैं। अपनी छोटी बहन को दीक्षा लेते देखकर मन में विचार आया कि जब छोटी बहन दीक्षा ले सकती है तो क्या मैं दीक्षा नहीं ले सकती, दीक्षा लेने की धुन मन में बस गई पर आज्ञा मिल पाना असंभव सा प्रतीत हो रहा था। आज्ञा लेने के लिए बहुत तपस्या करनी पड़ी। धूप में तपना पड़ा, भोजन का त्याग करना पड़ा आखिर बालिका की हठ के आगे पारिवारिकजनों को हार माननी पड़ी और परिवारवालों ने उन्हें उप-प्रवर्तिनी सरलमना श्री शशिकांता जी म. के पवित्र चरणों में समर्पित कर दिया और गुरुणी जी म. ने भी अपनी शिष्या कुमारी लक्ष्मी को भली भांति जान लिया तो 17 मई 1967 को वह शुभ घड़ी आ गई जब कुमारी लक्ष्मी को संयम पथ पर आगे बढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

दीक्षा के पश्चात गुरुणी जी म. संयम साधना में जीन हो गई। तन,मन से गुरु सेवा में समर्पित रहते थे। उनका संयमी जीवन मैंने स्वयं अपनी आँखों से देखा। मुझे उनके सान्निध्य में साढ़े तीन साल ही रहने का अवसर मिला।

फूल खिला तो कही की माया है,
जीवन मरण संसार की माया है।
मैंने जीवन पाया है,
ये मेरी दादी गुरुणी की माया है।।

वे चाहे जितने मर्जी बीमार हो जाए वो कभी भी दवाई नहीं लेते थे, कभी भी नियत समय से अलग भोजन नहीं करते थे। जप उनको प्रिय था, हर समय जप में ही लीन रहते थे, परिवार में या कहीं पर भी जब कोई मुमुक्षु दीक्षा करण करने जाता था ओघे, पात्र

रजोहरण उनके द्वारा बनाए हुए ही लिए जाते थे, वे दुःख वत्सल थे, जो कोई भी उनके चरणों में रोता-रोता आता था। वह मुस्कुराता हुआ जाता था, उनके जीवन में छल, कपट, अहंकार, कोसों दूर था। अमीर व गरीब के प्रति करुणा व कल्याण की भावना थी। पूरे चालीस वर्ष संयम साधना में अपने जीवन को व्यतीत किया। गुरु कृपा से आपश्री जी ने दो शिष्याएं बनाई सरलमना महासाध्वी श्री मंजुला जी म. श्रमणी गौरव डॉ. शिवा जी म. गुरुणी जी म. की छः पौत्र शिष्याएं हैं तथा चार पड़पौत्र शिष्याएं हैं।

गुरुणी जी म. अपनी शिष्याओं के साथ अंतगर्ति से संतुष्ट थे, पर वो काल 7जून 2007 का सूर्य ऐसा उदित हुआ कि गुरुणी जी म. के प्राण ले गया। करनाल घरौड़ा के मध्य सुबह विहार करते समय दुर्घटनाग्रस्त होकर जीवन संघर्ष के लिए जूझते हुए प्रभु चरणों में समर्पित हो गए और दिल्ली तक पहुंच भी ना पाए। वह दृश्य कभी मन में आ भी जाता है तो रोम-रोम सिहर उठता है, किन्तु प्रभु लीला के आगे किसी का बस न ही चलता।

लगता नहीं कि आप चले गए हैं यहाँ से दूर कहीं।
एहसास होता है मन में बसे हैं, हमारे पास ही कहीं।

गुरुणी जी म. की कृ आज भी प्रत्यक्ष रुप से देखती हूं। आपकी ग्यारहवीं पुण्य-स्मृति दिवस पर यहीं प्रार्थना कि जिस प्रकार आप संयम में रत थे, वो संयम हमारे भीतर दिनों दिन बढ़ता रहे।

✧✧

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

जैन कॉन्फ्रेंस एवं अखिल भारतीय स्वाध्याय संघ

अहमदनगर (महाराष्ट्र)
के तत्वावधान में आयोजित

21 जून 2017 से 25 जून 2017 तक

"पंच दिवसीय स्वाध्याय शिविर"

चोपड़ा लान्स, नासिक, (महाराष्ट्र) में अवश्य भाग लें

-: निवेदक :-

जैन कॉन्फ्रेंस परिवार

महासाध्वी राजस्थान प्रवर्तिनी सिंहनी पू. श्री प्रेमवती जी म. का व्यक्तित्व व कृतित्व

= औंकार सिंह सिरोया, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस परमाराध्या श्री प्रेम कुंवर जी म. का जन्म वीर भूमि राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्रांतर्गत प्रसिद्ध नगर कोशीथल, जिला भीलवाड़ा (राजस्थान) में वि.सं. 1983 माघ शुक्ला चतुदर्शी, गुरुवार को हुआ था। आपका जन्म नाम, प्रेम रखा गया। आपके पिता श्री भूरालाल जी पोखरना कोशिथल के एक प्रसिद्ध सुश्रावक थे। उनका विवाह श्रीमती सज्जनबाई के साथ हुआ था। आपने मेवाड़ जैन सम्प्रदाय के तत्कालीन आचार्य गुरुदेव जी मोतीलाल जी म. से ग्राम देवरिया, महासती पू. श्री केरकुंवर जी म. के पास वि.सं. 1996 में 13वर्ष की अल्पायु में दीक्षा ग्रहण की। आपकी माता श्रीमती सज्जनबाई भी दीक्षित होकर साध्वी श्री सज्जन कुंवर के नाम से जानी गई।

मेवाड़ सम्प्रदाय के पू. प्र. श्री अम्बालाल जी म. एवं श्रमण संघीय महामंत्री पू. श्री सौभाग्य मुनि जी म., कुमुद पू. प्र. श्री मगनमुनि जी म. 'रसिक' प्रवर्तक पू. श्री इन्दमुनि जी म. , प्र. पू. श्री मदन मुनि जी म. आदि ठाणा में साध्वी समुदाय की प्रमुख साध्वी हो गई। आपकी शिष्याओं में पू. श्री दमयती जी म. पू. श्री राजमति जी म., पू. श्री हेमप्रभा जी म. पू. श्री विजय प्रभा जी. म., महासती विजय लता जी म.। महासती पू. श्री प्रेमवती जी म. जीवन साधना की एक अखण्ड ज्योति है जिसका प्रकाश अतीत को भी आलोकित करता है। आप सहज सरलता की मूर्ति थे। उनकी वाणी में ओज था व वचन सिद्धथे जो भी किसी को कह देते वह सच में घटित होता था परम श्रद्धेय श्री प्रेम कुंवर जी म. एक विचारिका एवं तत्व वेता साध्वी थी आप जब भी प्रवचन करती तो ऐसा प्रतीत होता जैसे सिंहनी की गंभीर गर्जन हो रही है। आपके प्रवचनों में आगम को गंभीर रहस्य को इस प्रकार उद्घाटित करती जिससे मुमुक्ष साधन विस्मित हो जाता। महासाध्वी का जन्म इस तरह का था **"जिन्दगी केवल जीने का बहाना। जिन्दंगी केवल न सांसों का खजाना। जिन्दगी सिंदूर है, पूरब दिशा का। जिन्दगी का नाम है सूरज उगाना"।**

आपने राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र आदि अनेक क्षेत्रों में विचरण करके जिन शासन के गौरव को बढ़ाया व हजारों लोगों को मदिरा, माँस एवं मादक पदार्थों के सेवन का त्याग करवाकर उन्हें सरल, सात्वीक जीवन जीने का कला सिखाई। आपने देवी-देवताओं को खुश करने के लिए जो पशु बलि दी जाती थी। उसे आपने प्रेरणादायी कारुणिक प्रवचन शक्ति और साधनानिष्ठ व्यक्तित्व से बंद करवाया। पहाड़ी लोगों को समझाया कि सच्ची उपासना हिंसा में नहीं अहिंसा के पालन में है दूसरों के प्राण लेने में धर्म नहीं, सच्चा धर्म जीवों की रक्षा करने एवं दुःखियों का दुःख कम करने में है। आप सदैव दया धर्म पर सबसे ज्यादा जोर देते थे। आपके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर समय-समय पर आपको अनेक उपाधियों से अलंकृत किया गया। जिसमें मुख्यतः राष्ट्र ज्योति राजस्थान सिहनी प्रवचन पियुष आदि आपको अपने अंतिम समय का आभास थां आप कोशिथल स्थानक में गिर गये तब आपने सबको बुलाकर कहा कि मेरे आपको आगे दर्शन नहीं होंगे जिम्मेदारी दी और कहा धर्म ध्यान करना। आपका महाप्रयाण दिनांक 24.06.2000 को कोशिथल में हो गया। आपकी जन्म व निर्वाण भूमि एक हीरही। महासाध्वी जी का 19वां स्मृति दिवस कोशिथल में पू. गुरुदेव श्रमण संघीय पू. श्री सौभाग्यमुनि जी म.सा महाश्रमण पू. प्र. श्री मदनमुनि जी म. आदि ठाणा के साथ मनाया जायेगा। इस अवसर पर महासाध्वी को श्रद्धा सुमन अपर्ति करते हैं। ✧✧

मेवाड़ संघ शिरोमणी परम तपस्वी प्रवर्तक पूज्य श्री अम्बालाल जी म.

प्रस्तुति - प्रसन्न कुमार संचेती जैन, राष्ट्रीय मंत्री, जैन कॉन्फ्रेंस

राजस्थान का मेवाड़ प्रदेश हिन्दुस्तान में शूरवीरों का प्रदेश कहलाता है। उसी मेवाड़ के थामला गाँव में ओसवाल जैन समाज में सोनी गोत्रीय सेठ श्री किशोरी लाल जी एवं धर्मपत्नी श्रीमती प्यार बाई जी निवास करते थे। विक्रम संवत १९६२ ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया को माता प्यार बाई जी ने एक पुत्र को जन्म दिया। किशोरी लाल जी के बड़े भाई जो मावली में रहते थे, निःसंतान ही स्वर्गवासी हो चुके थे। उनकी रामीबाई को मावली में एकाकीपन खटकता रहता था। जो हमीरमल के दादी (बड़ माता) लगती थीं। थामला जाकर हमीरमल को मावली भेजने को कहती रहती थीं। छः साल की उम्र में बालक हमीरमल को दादी मावली लेकर आ गयी और पुत्रवत प्यार से बालक का लालन-पालन करने लगीं। उन्होंने हमीरमल का नाम अम्बालाल दिया। अब बालक अम्बालाल नाम से जाना जाने लगा। तेरह वर्ष की उम्र में बालक अम्बालाल ने मावली में अपर की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। अम्बालाल के रिश्ते में एक मामी थीं जो गृहस्थ में रहकर संयमी तुल्य जीवन यापन करती थी। समय-समय पर अम्बालाल को त्याग-वैराग्य की शिक्षा देती रहती थी।

बारह बर्ष की उम्र में एक ज्योतिष विद्या के जानकार ने बालक की हस्तरेखा देखकर भविष्यवाणी की थी कि यह बालक भविष्य में कोई होनहार शासक या संत बनेगा। अपर पास कर चुके बालक को योग्य समझकर श्री लक्ष्मीचंद जी देपूरा (जो श्रेष्ठ राज्य कर्मचारी थे) ने रामपुरा ब्यावर में स्थित चोकी पर दाणी के पद पर अम्बालाल को नियुक्त कर दिया। दाणी के पद पर रहते हुए अम्बालाल ने अच्छी मुश्तैदी से कार्य किया तो मोतीलाल जी देपुरा ने आपको मुहर्रिर पद पर काम दिया। परंतु माता-पिता के स्वर्गवासी हो जाने के कारण आपने राज-काज छोड़ दिये। दो बार घात से बचे-तैरना जानते नहीं थे, पिछोला चले गये तथा साथियों के साथ पानी में उतर गये। गहराई में डूबने-उबरने लगे तो वहाँ पर स्नान कर रहे लोगों ने उन्हें बचाया। एक बार थामला में तीन मंजिले मकान से गिर गये, परंतु पुण्य प्रबल था बच गये।

गुरु धारणा में एकांत दृढ़ अम्बालाल जी बिना किसी को बताये सनवाड़ पहुंच गये, जहाँ पू. मोतीलाल जी म. आदि विराजमान रहे। आपकी दीक्षा की स्वीकृति हो चुकी थी। आपश्री की दीक्षा भादसोड़ा में होने वाली थी, परंतु भीण्डर रावजी के अधिकार का गाँव होने से वहाँ का भीण्डर राव जी की दखल के कारण आपकी दीक्षा भादसोड़ा में नहीं हो सकी। आपश्री की दीक्षा १९८२ मार्ग शीर्ष शुक्ला अष्टमी सोमवार को मंगलवाड़ में हुई। पहली बार आप गोचरी पधारे तो किसी ने मिर्ची मिला पानी बहरा दिया। स्थानक में लाकर आपने अनुपान किया तो गुरुदेव ने कहा क्यों अम्बामुनि पानी तीखा है? तो नवदीक्षित अम्बालाल जी म. ने जबाब दिया, पानी तो तिखा है पर मेरा मन मीठा है। ऐसे भद्रिक संत थे पू. श्री अम्बालाल जी म.।

अंत में मैं, मेरे परिवार की ओर से पूज्य गुरुदेव श्री जी की जन्म जयंती पर हार्दिक वंदन नमन करते हुए सभी से उनके आदर्शों पर चलने का निवेदन, आव्हान करता हूँ। स्वयं मीठे रहो, दूसरे स्वतः ही मीठे एवं मधुर लगने लगेंगे।

✧✧

समर वैकेशन ... स्वास्थ्य का भी और खाने-पीने का भी रखें ख्याल

प्रस्तुति - सुनील चोपड़ा जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य, जैन कॉन्फ्रेंस

गर्मियों की छुट्टियाँ इंजॉय करने के जितने ऑप्सन हैं, उतने ही टेंशन भी हैं। क्या करें? क्या नहीं करें? और कहां करें? किसी को डाँस में रूचि है तो किसी को कराटे में। कोई स्वीमिंग करना चाहता है तो कोई जंगल में ट्रेकिंग करने की इच्छा लिए है। इस सबके बावजूद मुश्किल इस बात की है कि कहां जाएं? बच्चों को इस दुविधा से निकाल उनकी पसंद की छुट्टियाँ बिताने में उनका मार्गदर्शन करें।

गर्मी अत्यधिक होने के कारण बच्चों का हर प्रकार से ख्याल रखें। उनके पसंदीदा कार्यों में रोक-टोक न करके उन्हें अपनी निगरानी में जो चाहें करने दें। ऐसा करने वे टेंशन फ्री रहेंगे और आपके प्रति अपनत्व और प्यार/विश्वास के साथ रहेंगे। जिससे उनका व्यवहार चिड़चिड़ा न होकर खुशनुमा बना रहेगा।

जैन समाज के माता-पिताओं को एक सलाह अवश्य देना चाहूँगा कि उपरोक्त के साथ-साथ अपने बच्चों को कम से कम एक घण्टा धार्मिक गतिविधियों में बिताने के लिए जैन स्थानक अथवा जैन धर्म की गतिविधियों से अवगत कराएं, ताकि उनका मन धार्मिक गतिविधियों से दूर न हो।

चूंकि मई और जून के महीने वर्ष भर के सबसे अत्यधिक गर्म दिनों में से एक होते हैं तो बच्चों को धूप में न निकलने दें। पर्याप्त मात्रा में पानी एवं प्रोटीन/विटामिनों से भरपूर फल सब्जियों का सेवन कराएं। घर से घूमने के लिए बाहर जाने का उचित समय सायंकालीन का बनाएं, ताकि शाम के खुशनुमा माहौल के आनंद के साथ-साथ स्वास्थ्य का भी ख्याल रखा जा सके। बच्चों को अच्छे पार्क में ले जाएं, मंदिर लेकर जाएं। घूमने जा रहे है तो धार्मिक स्थलों को भी अपने घूमने की सूची में अवश्य शामिल करें, जिससे आपके बच्चों को भी हमारी संस्कृति और धर्म की जानकारी प्राप्त हो।

हाई स्कूल अथवा इंटरमीडिएट अथवा कॉलेज पूर्ण कर चुके बच्चों के लिए समर वैकेशन के दौरान बहुत सी निजी कंपनियाँ भी कॉलेज विद्यार्थियों के लिए शॉर्ट टर्म्स जॉब्स ऑफर करती हैं। कॉलेज विद्यार्थी इन जॉब्स को ज्वॉइन कर सकते हैं, जिससे उन्हें व्यवहारिक जिन्दगी का अनुभव प्राप्त होता है। कॉलेज विद्यार्थी अपने कॉलेज में फ्रेशर के रूप में ज्वॉइन करने के लिए आने वाले नवीन विद्यार्थियों की मदद के लिए एक-दो घण्टा कॉलेज में बिता सकते हैं, जिससे उन्हें एक अलग ही प्रकार का दोस्ताना व्यवहार महसूस होगा। स्कूल पास आउट बच्चे विभिन्न प्रकार के प्रोफेशनल कोर्सेज में एडमिशन लेकर अपनी नॉलेज को इम्प्रूव कर सकते है।

खान-पान का अवश्य ध्यान रखें। गर्मियों में जहां अत्यधिक गर्मी का सामना करना पड़ता है वहीं सबसे ज्यादा बिमारियाँ भी गर्मियों में ही पनपती हैं। रसीले फलों जैसे तरबूज, खरबूज का सेवन करें, परन्तु अत्यधिक मात्रा में न करें। खीरा, ककड़ी आदि को सलाद के रूप में अवश्य इस्तेमाल करें। याद रखें साफ-सुथरी चीजो का ही प्रयोग करें, स्वयं को स्वस्थ एवं स्वच्छ रखें। घर में साफ-सफाई का ख्याल रखें। **'स्वस्थ एवं तंदुरूस्त जीवन हजार नियामत'** तो आईये हम माता-पिता होने का फर्ज निभाएं और बच्चों के साथ बच्चे होकर समर वैकेशन का लुत्फ उठाएं तथा समाज को स्वस्थ एवं सुंदर भविष्य प्रदान करें। ✧✧

दुराग्रही न बनें, औचित्य का वरण करें

- अतुल जैन, दिल्ली प्रांतीय अध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

औचित्य एवं आग्रह में सूक्ष्म भेद है। कब औचित्य आग्रह में बदल जाता है और आग्रह औचित्य में, पता ही नहीं चलता। औचित्य का आग्रह की ओर आना सरल जान पड़ता है, क्योंकि हम आग्रह से ग्रस्त हैं, परन्तु आग्रह को छोड़कर औचित्य की ओर लौटना कठिन है। यह इसलिए है, क्योंकि ऐसा करने में विवेक की जरूरत पड़ती है। **वस्तुतः औचित्य उसे कहते हैं, जिसे करने में किसी प्रकार की कोई समस्या खड़ी न हो। औचित्य का तात्पर्य है किसी कर्म को उसके गुण धर्म के अनुरुप करना। आग्रह उसे कहते हैं, जिसे हम अपनी सुविधा एवं लाभ के अनुरुप करते हैं। इसमें हमारा अपना मोह समाविश्ट होता है।**

औचित्य एवं आग्रह में हम आग्रह की ओर अनायास ही मुड़ जाते हैं। बात औचित्य की करते हैं, सिद्धांत की करते हैं, परन्तु करते समय हमारा आग्रह सामने खड़ा हो जाता है और बताता है कि यह आग्रह ही तुम्हारा औचित्य है। यह प्रक्रिया इतनी सूक्ष्मता के साथ होती है कि पता ही नहीं चलता और हम दुराग्रह के आवेष में औचित्य की केवल बात करते रह जाते हैं एवं करते वही हैं, जो हम करना चाहते हैं। वर्तमान जीवन की यही सच्चाई है। जो यह कहता है कि हम सदा सही कर्म करते हैं, उसे इस कड़वी सच्चाई से रुबरु होना चाहिए।

ऐसा आखिर होता क्यों है? ऐसा भी नहीं है कि इंसान सही कार्य, जिसे करना चाहिए, नहीं करना चाहता है। वह सही कार्य के बारे में सोचता भी है और अंजाम भी देना चाहता है, किन्तु उसके सत्कर्म की यह चाहत कब वाष्पित हो जाती है, पता ही नहीं चलता है। इस संदर्भ में मनोविज्ञानी कहते हैं कि मनुश्य की संरचना बड़ी ही जटिल है। इसके संस्कार अत्यन्त गूढ़ हैं। इसमें कटीली झाड़ियाँ भी है तो मनोरम उपवन भी सजे हैं। संस्कार जिस मसय अपने स्वरुप में अवस्थित होता है, हम उसी के अनुरुप उससे बलात् संचालित होते हैं। इस आवेग एवं आवेष का इतना प्रचंड तूफान मचलता है कि कुछ समझ में नहीं आता है और व्यक्ति बरबस यों ही उड़ती पत्तियों के समान उड़ता चला जाता है।

संस्कार बड़ा बलवान है। वह उचित एवं अनुचित का नहीं अपने अंदर के बल का प्रहार करता है। विवेकवान और बलषाली व्यक्ति ही इस बल को झेल पाने में समर्थ एवं सक्षम होते हैं तथा इस विकट वेला में भी औचित्य की बात पर अडिग होते हैं। ऐसे व्यक्ति संस्कार को समझते हैं, जानते हैं, इसके विज्ञान से परिचित होते हैं और वे ही औचित्य एवं आग्रह की विभेदक रेखा को खींचकर बताते हैं कि इन दोनों में फर्क क्या है। उनके अनुसार औचित्य का मतलब है- वास्तव में क्या करना चाहिए, क्या उचित है। और आग्रह का तात्पर्य है- चाहे कुछ भी हो, हमें तो उसे अपने ढ़ंग से करना है। एक विवेक की बात करता है, दूसरा मूढ़ता का परिचय देता है। एक में पैनी दृश्टि है, दूसरे में अहंकार का आवरण छाया हुआ है।

भगवान कृश्ण सदैव औचित्य की बात कर अपने कर्म में भी यही करते हैं भीश्म पितामह, विदुर आदि भी औचित्य के प्रबल समर्थक हैं, परन्तु धृतराश्ट्र,

दुर्योधन आदि अत्यन्त हठाग्रही, दुराग्रही हैं। द्रोणाचार्य, कृपाचार्य आदि को भी औचित्य का ज्ञान था, परन्तु धर्म के प्रांगण में वे अपने-अपने आग्रह के कारण विवष थे। भगवान कृश्ण के जीवन में झाँके तो उनके द्वारा किया ऐसा कोई भी कर्म नजर नहीं आता, जो कि आग्रह से प्रेरित हो।

उचित अनुचित का भेद वही कर सकता है, जिसकी दृश्टि एवं बुद्धि अत्यंत पैनी एवं सूक्ष्म हो, जो जानता है कि किसे कब और क्यों करना चाहिए और किसे नहीं और फिर उसके लिए कितना भी नुकसान एवं लाभ क्यों न होता हो। वही औचित्य की बात करता है और उसे अपने कर्म में उतार पाता है। परन्तु **जिसे केवल अपना ही लाभ दिखाई देता है, अपने परिजनों व सम्बन्धियों का भला समझ में आता हो और उसे इस क्षुद्र सीमाओं से आगे -पीछे कुछ नजर ही नहीं आता हो, वही आग्रही होता है। केवल और केवल अपने स्वार्थ से प्रेरित होता है। अहंकार से संचालित होता है, इसलिए वह चाहे कितनी भी नीति एवं सिद्धांत की बात क्यों न करे, करता केवल अपने मन की ही है। वह दूसरों का नुकसान करके भी अपना एवं अपनों का भला करने में चूकता नहीं है।**

आग्रही अपनी अपनी हठमान्यताओं को लेकर एक अजीब सी दुनिया बसा लेता है। इस दुनिया में वह केवल अपने स्वार्थ एवं अहंकार को प्रश्रय देता है। बस, सुनने सुनाने की प्रक्रिया में जो जितना अनुकूल होता है, उसका वह उतना ही घनिश्ठ होता है और जो जितना प्रतिकूल होता है, वह उतना ही बैरी होता है। आग्रही की दुनिया का यही राज एवं रहस्य है। आग्रही का हर एक कार्य अपनी मान्यताओं के अनुरुप होता है, फिर वह उचित हो या अनुचित। औचित्य बताता है कि मान्यताओं से बढ़कर विवेक है। यदि मान्यता उचित है तो उसे करने में कोई परहेज नहीं है और यदि असंगत एवं अनुचित है तो भले ही वह सदियों से क्यों न चली आ रही हो, उससे परहेज करना ही सर्वथा श्रेयस्कर है, परन्तु इसे करने में विवेक के साथ साहस की आवष्यकता है। अतः हमें दुराग्रही प्रवृत्ति का त्याग कर औचित्य का वरण करना चाहिए।

✧✧

विनम्र निवेदन ...

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली श्रमण संघ की मातृ संस्था है। वर्तमान में जैन कॉन्फ्रेंस के लगभग 64 हजार आजीवन सदस्य है। देश के लगभग हरेक गांव और शहर में श्रीसंघ स्थापित हैं, जहां पर हमारे श्रमण संघीय संत-सतीवृंद भगवान महावीर के संदेशों का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। आपके यहां के सभी श्रीसंघों को मुफ्त में जैन कॉन्फ्रेंस का आजीवन सदस्य बनवाने का निश्चय जैन कॉन्फ्रेंस ने किया है। अतः आप अपने यहां स्थापित श्रीसंघ के लैटर पैड पर जैन कॉन्फ्रेंस का आजीवन सदस्य बनने का पत्र आजीवन सदस्यता फार्म के साथ भरकर भिजवाने की कृपा करें। ताकि आपका श्रीसंघ भी जैन कॉन्फ्रेंस से जुड़ धार्मिक-आध्यात्मिक गविधियों में शामिल होकर जैन कॉन्फ्रेंस से जुड़ें और जिन आराधना में मजबूती प्राप्त करें।

- प्रधान सम्पादक

अल्पसंख्यक युवाओं के 'कौशल विकास' के लिए 'नई मंजिल' योजना के तहत विश्व बैंक 331 करोड़ रुपये की सहायता करेगा

– संदीप भण्डारी जैन, अखिल भारतीय जैन अल्पसंख्यक सेल

परियोजना विवरण : भारत सरकार ने एक लचीले एकीकृत शिक्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम की जरुरत को पहचाना, जिसने तेजी से बदलती दुनिया में विभिन्न कार्यों को सीखने और उनके अनुकूल बनने के लिए अल्पसंख्यक समुदायों के युवकों के लिए आवश्यक कौशल प्रदान किया। अतः भारत सरकार ने 8 अगस्त 2015 को नई मंजिल योजना 'नए क्षितिज योजना, एक व्यापक शिक्षा और कौशल विकास कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस कार्यक्रम के डिज़ाइन में बुनियादी शिक्षा प्रमाणन की सहायता करने की संकल्पना थी, जिससे कि युवा अधिकांश प्रवेश स्तर की नौकरियों के लिए पात्र हो सकें और उन्हें ऐसा कौशल प्रान किया जा सकें, जिससे वे श्रम बाजार में बेहतर काम कर सकें। नई मंजिल का उद्देश्य अल्पसंख्यक युवकों को शिक्षा और बाजार संगत कौशल प्रशिक्षण के लिए एक एकीकृत कार्यक्रम पेश करते हुए उनके श्रम बाजार परिणामों में सुधार करना है। यह योजना अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय के राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विकास एवं वित्त निगम 'एन.एम.डी.एफ.सी.' के साथ भी जुड़ी होगी जो अल्पसंख्यक युवकों को ऋण प्रदान करता है। यह योजना 1228 समुदाय विकास ब्लॉकों को कवर करेगी, जहां अल्पसंख्यक जनसंख्या कम से कम 25% है।

भारत सरकार के राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन में 2022 तक 500 मिलियन कामगारों के प्रशिक्षण का घोषित लक्ष्य है। इस संबंध में भारत की वैश्विक प्रतिस्पर्धा में सुधार करने की चुनौती को पूरा करने, गरीबी को और कम करने और साझी समृद्धि को बढ़ाने के लिए सरकारी से लेकर निजी संस्थानों के सम्मिलित प्रयासों की आवश्यकता होगी। इसके अतिरिक्त, विश्व बैंक ग्रुप की भारत देश साझेदारी कार्यनीति (सीपीएस) रूपांतरण स्तंभ के एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में उत्पादक रोजगार के लिए बाजार संचालित कौशल विकास में सुधार के साथ-साथ समावेशन स्तंभ के अधीन बहिष्कृत आबादी समूहों की सेवाओं और अवसरों तक पहुंच में सुधार करने पर बल देती है। प्रस्ताविक परियोजना अल्पसंख्यक युवकों की शिक्षा और कौशल विकास पर ध्यान देते हुए इन उद्देश्यों में योगदान देती है और यह सीपीएस कार्यनीति के अनुरूप है।

परियोजना विकास उद्देश्य और लाभार्थी, परियोजना विकास उद्देश्य अल्पसंख्यक समूहों से युवाओं के लिए माध्यमिक शिक्षा पूरी करने में सुधार और बाजार संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम तक पहुंच प्रदान करना है।

परियोजना के मुख्य लाभार्थियों में शामिल है: (क) अल्पसंख्क समूहों से 17-35 वर्ष की आयु के युवा जो कक्षा 8 या कक्षा 10 के शिक्षा प्रमाण-पत्र और किसी बाजार-संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम से लाभ उठाना चाहते हैं। (ख) शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदानकर्ताओं को कार्यक्रमों, पाठ्यक्रमों, प्रशिक्षण विधियों और शिक्षा एवं प्रशिक्षण सामग्री के राष्ट्रीय स्टॉक के विकास से लाभ मिलेगा। (ग) निजी क्षेत्र और नियोक्ता जिनको अधिक संख्या में और बेहतर गुणवत्ता वाले युवकों का लाभ मिलेगा।

पीडीओ स्तर के परिणाम सूचक : पीडीओ की उपलब्धि के लिए प्रगति मापने के लिए निम्नलिखित परिणाम सूचक प्रयोग किए जाएंगे : क) नामांकित लक्षित लाभार्थियों की संख्या जो मुक्त स्कूल व्यवस्था के जरिए माध्यमिक शिक्षा प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हैं।

ख) नामांकित लक्षित लाभार्थियों की संख्या जो एक श्रम बाजार संगत क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त कौशल प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हैं।

ग) नामांकित लक्षित लाभार्थियों की संख्या जो (स्व-रोजगार और इंटर्नशिप सहित) एकीकृत कार्यक्रम पूरा करने के छः महीने के बाद रोजगार प्राप्त करते हैं।

घ) नामांकित लक्षित लाभार्थियों की संख्या जो एकीकृत कार्यक्रम पूरा करने के छः महीने बाद शिक्षा अथवा कौशल प्रशिक्षण में और आगे व्यवसायिक अर्हता प्राप्त करते हैं।

परियोजना घटक : नई मंजिल योजना आर्थिक रूप से वंचित/अल्प-सेवित अल्पसंख्यकों के लिए शिक्षा और कौशल अवसर प्रदान करने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। परियोजना में दो घटक होंगे, जिन्हें इस योजना के कार्यान्वयन में सहायता के लिए कार्यनीतिक रूप से डिजाइन किया गया है। घटक १ शिक्षा तक उन्नत पहुंच और कौशल प्रशिक्षण की बढ़ी हुई बाजार संगतता को प्रोत्साहित करेगा। घटक २ प्रणाली सुदृढ़ीकरण पर ध्यान देने के साथ-साथ कार्यक्रम समन्वय, तकनीकी सहायता, क्षमता निर्माण, परिणाम मॉनीटरिंग एवं मूल्यांकन और अनुसंधान तथा संचार के माध्यम से घटक १ के कार्यान्वयन को सहायता प्रदान करेगा।

क) घटक १: सवंर्धित शिक्षा और बाजार संगत प्रशिक्षण के लए परिणाम आधारित वित्त-व्यवस्था (यूएसडी 45 मिलियन)

ख) घटक २: नई मंजिल योजना के कार्यान्वयन के लिए तकनीकी सहायता (यूएसडी 5 मिलियन)

घटक १: सवंर्धित शिक्षा और बाजार संगत प्रशिक्षण के लिए परिणाम आधारित वित्त-व्यवस्था (यूएसडी 45 मिलियन): नई मंजिल योजना का उद्देदश्य अल्पसंख्यक युवकों में उत्पादक रोजगार को प्रोत्साहित करना है, जिन्होंने 5-8 के बाद स्कूल छोड़ दिया है। यह परियोजना मुख्य रूप में कार्यक्रम क्रियान्वयन एजेंसियों को किराये पर लेने में मदद करेगी। पीआईए 9 से 12 महीने तक गैर-आवासीय शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण प्रदान करेंगे, जिसमें से कम से कम तीन महीने राष्ट्रीय कौशल अर्हता ढांचे (एनएसक्यूएफ) के अनुरुप कौशल प्रशिक्षण को समर्पित किए जाएंगे। इस योजना को कार्यान्वित करने के लिए मुख्य उपकरण अल्पसंख्क कार्य मंत्रालय और पीआईए के बीच परिणामोंन्मुखी कार्य निष्पादन समझौते होंगे जो (अ) मुक्त स्कूल व्यवस्था में प्रवेश लेने के लिए और प्रशिक्षण एवं आकलन करने के लिए लागू दिशा-निर्देशों के अनुसार सहायता करेंगे; (ब) विद्यार्थियों को ओपन स्कूलिंग प्रमाण पत्र प्राप्त करने में सहायता के लिए डिज़ाइन किया गया अतिरिक्त शिक्षा सहायता/ब्रिज़ कार्यक्रम प्रदान करेंगे; (क) गैर-संज्ञानात्मक कौशल सहित उच्च गुणवत्ता का कौशल प्रशिक्षण प्रदान करेंगे जिससे उत्पादक रोजगार मिलेगा; और (ख) प्लेसमैंट के बाद सहायता प्रदान करेंगे ताकि उनके लिए निरंतर रोजगार सुनिश्चित किया जा सके जो श्रमण बाजार में प्रवेश करना चाहते हैं।

कार्य-निष्पादन समझौते में कार्य-निष्पादन मानदण्डो का एक सेट शामिल होगा जो अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय द्वारा पीआईए को वित्तीय संवितरण का प्राथमिक आधार होगा। कार्य निष्पादन समझौतें का उद्देश्य वास्तविक लक्ष्यों सहित सहमति प्राप्त लक्ष्यों को पूरा करने के साथ-साथ शिक्षा और श्रम बाजार परिणामों को इन प्रोत्साहन प्रदान करना होगा। कार्य निष्पादन समझौते भारत में शिक्षा और प्रशिक्षण क्षेत्र में अन्य कार्यक्रमों और अन्य संगत देशों में गहन अनुभव और ली गई सीख पर बनाए जाएंगे जिससे कि विशिष्ट समूहों और श्रम बाजारों की जरुरतों को कारगर ढंग से पूरा करने के लिए अनिवार्य शिक्षा और कौशल विकास के प्रति टेलर्ड दृष्टिकोणों को सुविधाजनक बनाया जा सकें।

घटक २: नई मंजिल योजना के कार्यान्वयन के लिए तकनीकी सहायता (यूएसडी 5 मिलियन): इस संघटक का उद्देश्य कार्यक्रम क्रियान्वयन, योजना और नीति विकास के लिए अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय की क्षमता को सुदृढ़ करना है। सहायता प्रदान किए जाने वाले क्षेत्रों में शामिल है (१) नीति विकास (२) किसी परियोजना प्रबंध यूनिट के माध्यम से कार्यक्रम कार्यान्वयन सहायता; (३) शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के वितरण के लिए श्रेष्ठ प्रथाओं का प्रल्लेखन और प्रचार करना; (४) बालिकाओं के लिए शिक्षा, प्रशिक्षण और रोजगार परिणामों में सुधार पर ध्यान केन्द्रित करते हुए नवीन मध्यस्थों का पथ प्रदर्शन करना; और (५) प्रभाव मूल्याकंनो, ट्रेसर अध्ययनों, गुणवत्ता परख आकलनों और लक्षित समूहों और पात्रता मानदंड से संबंधित उन्नत योजना डिज़ाइन आसान बनाने के लिए तीसरे पक्ष के वैधीकरण अध्ययनों सहित मॉनीटरिंग और मूल्यांकन क्रियाकलाप।

✧✧

पू. श्री अम्बेश गुरुजी म. ने जीवन भर दिया समता का संदेश

- पुखराज सोनी बिनोल

मेवाड़ के पौने आठ सौ गाँवों में गूंजते लोक नारे 'अम्बेश गुरु ने क्या दिया - समता का संदेश दिया' और पू. प्र. दीन दयाल, धन्य-धन्य गुरु अम्बालाल। आज गुरुदेव जी आस्था के प्रतीक बन चुके हैं। मेवाड़ संघ शिरोमणि श्रमण संघीय पू. प्र. गुरुदेव श्री अम्बालाल जी म. जैन जगत की एक ऐसी ऐसी विरल विभूति थे जो जीवन भर लोक आड़म्बर से दूर रहते हुए साधना और लोक मंगल के लिए सर्वदा तत्पर रहे। दिखावा और आत्म ख्याति के स्थान पर उन्होंने स्वयं पर क़ल्याण को ही सर्वाधिक महत्त्व प्रदान किया। उनका जीवन मूर्तिमंत्र सचरित्र का आदर्श था। जो भी व्यक्ति उनके निकट उपस्थित होता गुरुदेव की सादगी और सरलता से प्रभावित होकर ही रहता। राजस्थान और इतर प्रदेशों में आज भी हजारों व्यक्ति मौजूद है जिन्होंने पू. गुरुदेव के दर्शन किये और सान्निध्य प्राप्त किया।

वे गुरुदेव श्री की निश्चछलता और सादगी से आज भी सम्प्रेरित हैं। स्व. गुरुदेव श्री अम्बालाल जी म. का गृहस्थ जीवन का नाम हमीर मल सोनी था। ये सोनी ओसवाल समाज का गोत्र है। वि. सं. 1962 ज्येष्ठ शुक्ला तृतीया को गुरुदेव का थामला मेवाड में जन्म हुआ। प्यारी देवी वह महान मातृपद विभूति पिता हैं जिसने ऐसे महान पुत्ररत्न को जन्म दिया। श्री किशोरी लाल जी सोनी गुरुदेव श्री के पिता श्री थे। अवश्य ही पूर्व जन्म के संस्कार रहे होंगे कि उन्हें खेल खिलौनों के स्थान पर मुख वस्त्रिका का पूंजणी से ही अधिक लगाव था। जब तब थोड़ा सा भी एकांत मिलता बैठ जाना, कोई पास आता तो कहता मेरे सामायिक हैं आप दूर रहे। हमीरमल को ऐसी रुचि देखकर परिवार और अन्य व्यक्ति बचपन में ही बोलने लगे हमीरमल एक दिन साधु बन जायेगा और हुआ भी यही कि हमीरमल एक दिन सन्यास लेकर अम्बालाल बन गये। उन्होंने प्रथम चातुर्मास जयपुर में और अंतिम चातुर्मास मावली में किया। जीवन में अनेक स्थानक, पाठशालाएं, औषधालय, प्रतिक्षालय एवं विहारधाम का निर्माण कराया। पशुबलि रोकने की शर्त पर मुस्लिम की विनती पर बदनोर में चातुर्मास किया। योग्य गुरु के सुयोग्य शिष्य श्रमण संघीय महामंत्री सौभाग्य मुनि कुमुद एवं महाश्रमण प्रवर्तक मदन मुनि पथिक ने गुरु अम्बेश के नाम को भारतवर्ष में सम्पूर्ण जैन समाज में पहचान दिलाई। मावली चातुर्मास में 88 वर्ष की अवस्था में जब कमरदर्द से संकटग्रस्त हुए तब अनंत यात्रा की ओर संकेत करके फतहनगर पहुंचे तथा सम्पूर्ण समाज से खमत खामणा किया और संथारा ग्रहण किया। 15 जनवरी 1994 पौष शुक्ला चतुर्थी की रात्रि में शांति समाधि एवं अनुकम्पा भाव से स्वार्गरोहण किया।

जन्म जंयती गुरु अम्बेश की मिलकर सभी मनाएं।
सेवा भक्ति त्याग भाव का सागर हम लहराएं।।
मंगलवाड़ से दीक्षा धारी मोती भार गुरु पाये।
आगमज्ञाता भाग्य विधाता शासन दीप जलाएं।
महागुरु की महानता का अर्थन मनसे करें हमेश।
पुखराज सोनी बोलो परदे खोलो धन्य-धन्य गुरुदेव।।

✧✧

पूज्य उपाध्याय श्री मूलमुनिजी का वर्ष २००४ का साक्षात्कार द्वारा डॉ. दिलीप धींग

पूज्य उपाध्याय श्री मूलमुनिजी म.

– डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई (तमिलनाडु)

श्रमण संघ के वरिष्ठ उपाध्याय श्री मूलमुनिजी म. का 64वाँ वर्षावास सन् 2004 (वि. सं.2061) में धर्म-ध्यान और त्याग-तप के साथ उदयपुर में हुआ था। उसी पावस-प्रवास के दौरान भामाशाह मार्ग स्थित पंचायती नोहरे में उन्होंने कवि डॉ. दिलीप धींग से भेंटवार्ता में बताया कि संतों में सुविधाभोग और अनुशासनहीनता से अनेक समस्याएँ पैदा हो गई हैं। धर्म क्षेत्र में पंथवाद और झगड़े-टंटे के एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि धर्म का सही स्वरुप समझ लिया जाय तो पंथवाद के दुष्परिणामों से बचा जा सकता है। धर्म में राजनीति अच्छी बात नहीं है। स्थानकवासी परम्परा के पुनरुद्धारक धर्मवीर लोकाशाह जैसे तेजस्वी और निर्भीक व्यक्तित्व की आज आवश्यकता है। आत्मसाधना का लक्ष्य, त्यागवृत्ति, सबके प्रति सद्भाव और गुणानुरागिता से हम संघ और समाज को सुदृढ़ बना सकते हैं।

पूज्य उपाध्यायश्री ने कहा कि कोई ऐसी सम्प्रदाय नहीं जिसमें योग्य संत नहीं हो। हर सम्प्रदाय में **'ज्योतिर्धर संत'** (ऊँचे साधक) हैं। जरुरत है उन्हें पहचानने की और उनका समादर करने की। तरुण-तरुणियों में धर्म के प्रति बढ़ती अरुचि पर उन्होंने कहा कि इसके लिए सर्वप्रथम तो माता-पिता दोषी है और फिर पूरा परिवेश। इस सम्बन्ध में साधु-साध्वियों को भी ईमानदारी से अपनी जिम्मेदारी को समझना चाहिये। शिक्षा-पद्धति और मीडिया की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण है। धर्म हमें अनुशासित और संयमित जीवन जीने की कला सिखाता है, जो आज समय की आवश्यकता है। नई पीढ़ी द्वारा सांस्कृतिक मूल्यों की उपेक्षा शुभ नहीं है। **'वैराग्य कैसे आया?'** इस प्रश्न के उत्तर में उपाध्यायश्री ने तीन कारण बताये:-

1. श्री जवाहराचार्य के शिष्य मुनि पू. श्री कन्हैयालालजी म. से व्याख्यान में जैन दिवाकर मुनि पू. श्री चौथमलजी म. के द्वारा रचित जम्बूकुमार की जीवनी सुनकर सांसारिक भोगों से विरक्ति हो गई। मन में भाव जगा कि भोगों से दूर रहकर आत्म-कल्याण व लोक-कल्याण के लिए जीवन समर्पित करना चाहिये।
2. जब प्रवर्तक मुनि पू. श्री वृद्धिचन्दजी म. की सेवा-भावना व छोटे मुनियों के प्रति वात्सल्य देखा तो दीक्षा का मन बन गया।
3. जब पूज्य जैन दिवाकरजी का पैंतालीसवाँ चातुर्मास सन् 1940 (वि.सं. 1997) में जोधपुर में था तो उनकी प्रभावशीलता से मैं समर्पित हो गया।

मात्र 17 वर्ष की तरुणाई में फाल्गुन कृष्ण 5, वि.सं. 1997 को जैन दिवाकर मुनि पू. श्री चौथमलजी म. से दीक्षा ग्रहण करने वाले मूलमुनिजी म. ने बताया कि जैन दिवाकरजी ने अपने जीवन काल में अहिंसा और मानव धर्म की जो अलख जगाई वह बेजोड़ है। बीसवीं सदी के शुरुआती पाँच दशक

उनके उपकारों से उपकृत है। उपाध्याय मूलमुनिजी कहते हैं कि वे जैन दिवाकरजी के सान्निध्य में दस वर्षों तक रहे। उनके प्रवचनों में सभी धर्म ग्रन्थों के उद्धरण होते थे। सभी धर्मों, वर्गों, पंथों और जातियों के व्यक्ति बिना किसी भेदभाव के उनके प्रवचन सुनते थे। आज हम जैन एकता की बात करते है, दिवाकरजी ने करीब पौन सदी पूर्व जैन एकता और मानवीय एकता के अनेक उदाहरण पेश किये थे। उनका पूरा जीवन अनुकरणीय है। प्रवचन प्रभाकर पू. श्री मूलमुनिजी म. ने बताया कि वे 14 वर्षों तक उपाध्याय पू. श्री कस्तूरचन्दजी म. के समीप रहे। इतने दीर्घ काल में उनमें कभी पलभर के लिए भी क्रोध, आवेश या कषाय नहीं देखा। वे समता के साधक और करुणा के वे सागर थे। वे छोटों को सम्मान देने में भी कभी नहीं चूकते। ये सब सीखने की बाते हैं। साधु यदि साधु होकर रहे तो कोई समस्या ही नहीं है। उपाध्यायश्री का मानना है कि आहार हमारे व्यक्तित्व और समाज पर गहरा असर ड़ालता है। शाकाहार मात्र आहार ही नहीं, अपितु सुविकसित जीवन शैली है। यह पर्यावरण, स्वास्थ्य और संस्कृति का पोषक है। पूरे विश्व में शाकाहार का महत्त्व समझा जाने लगा है। भारत इसका प्रवर्तक है। भारतीयों में इसके प्रति उपेक्षा नहीं होनी चाहिये। जिन संतों की वाणी में जादू है और हजारों लाखों व्यक्ति जिन्हें सुनने के लिए उमड़ते हैं, वे अगर शाकाहार को जन आन्दोलन की तरह आगे बढ़ायें तो समाज का कायाकल्प हो सकता है।

वर्तमान को आपका कोई संदेश के सवाल पर संयम व समय के सजग प्रहरी उपाध्यायश्री ने कहा कि हम हमारी बाल-युवा पीढ़ी को संभालेंगे तो बहुत बड़ा काम करेंगे। सम्भवतः हम हमारी विरासत और जीवन-मूल्यों पर हो रहे प्रहारों से हार गये लगते हैं। आत्म-विस्मृति से बचें और कुछ अच्छा अवश्य करें।

✧✧

हार्दिक निवेदन ...

जैसा कि आप सभी को विदित है कि **'जीवन प्रकाश योजना'** के तहत हम पिछले कई वर्षों से चिकित्सा एवं शिक्षा के क्षेत्र में जरुरतमंदों को सहयोग करते आ रहे हैं। फिर भी अपेक्षा से कम ही सेवा कर पा रहे हैं। अतः हम ज्यादा से ज्यादा जरुरतमंदों के शिक्षा व चिकित्सा में सहयोगी बन सकें, इसके लिए एक योजना आपके समक्ष रखी है।

प्रतिदिन एक रुपये के हिसाब से एक वर्ष के लिए **रुपये 365/-** का एक कूपन बनाया है। 10 कूपन का एक सेट है, जिसकी रकम **रुपये 3650/-** है। जैन कॉन्फ्रेंस के एक सच्चे हितैषी होने के नाते आपका अपना फर्ज है कि इस योजना में आप ज्यादा से ज्यादा सहयोग दें। आप इन कूपनों को अपने क्षेत्र के जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारियों से संपर्क करके प्राप्त कर सकते हैं।

कृपया आप इन कूपनों को अपने रिश्तेदारों, मित्रों को या जैन कॉन्फ्रेंस के सदस्यों को वितरित कर या आप स्वतः उसकी राशि जैन कॉन्फ्रेंस के **'जीवन प्रकाश योजना'** के

बैंक अकाउंट में **दिनांक 31 जुलाई 2017** तक जमा करा दें। बैंक अकाउंट की जानकारी हर एक कूपन के साथ दी गई है। हमें विश्वास है कि आप इस सेवा कार्य में पूरा–पूरा सहयोग कर इस योजना को सफल बनाएंगे। अगर आपको और भी ज्यादा कूपन की आवश्यकता हो तो हमें सूचित करें। हम आपको तुरंत स्पीड पोस्ट द्वारा आपके पास भिजवा देंगे।

नोटः– कूपन के साथ वाले कांउटर फॉईल पर दानदाता का नाम, गांव का नाम व मोबाईल नं. लिखकर, जैन भवन, नई दिल्ली कार्यालय में भिजवाने का कष्ट करें।

– प्रधान संपादक

जैन कॉन्फ्रेंस संविधान हेतु सुझाव

जैसा कि आप सबको विदित है कि जैन कॉन्फ्रेंस संविधान संशोधन का कार्य प्रगति पर है। आप द्वारा अनेकों सुझाव प्राप्त हुये हैं तथा अभी भी आपके सुझाव प्राप्त हो रहे हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए अब राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति के निर्णयानुसार आप दिनांक 30 जून 2017 तक अपने लिखित सुझाव रजिस्टर कार्यालय जैन भवन, नई दिल्ली को ई–मेल, डाक या कुरियर द्वारा भेज सकते हैं ।

यदि आप स्वयं उपस्थित होकर अपने सुझाव संविधन संशोधन समिति के सामने रखना चाहते हैं तो दिनांक 21 जुलाई 2017 को प्राप्त 10:30 बजे से जैन भवन, नई दिल्ली में पधारकर इस विषय पर विस्तृत विचार-विमर्श के लिये सादर आमंत्रित हैं। 21 जुलाई 2017 के पश्चात् प्राप्त होने वाले सुझावों पर कोई विचार-विमर्श नहीं किया जाएगा ।

नोटः- कृपया आपके पधारने की सूचना दिनांक 17 जुलाई 2017 तक जैन भवन नई दिल्ली कार्यालय में दें ताकि हम आपके आवास-निवास की व्यवस्था सुचारू रूप से कर सकें ।

– मोहनलाल चोपड़ा जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष

जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा आयोजित "पंच दिवसीय स्वाध्याय शिविर" का आयोजन

परम पूज्य गुरुदेव श्री आदर्शऋषिजी म. सा. की प्रेरणा से **श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस** द्वारा आयोजित **अखिल भारतीय स्वाध्याय संघ - अहमदनगर** के तत्वावधान में दिनांक 21 जून 2017 से 25 जून 2017 तक **'पंच दिवसीय स्वाध्याय शिविर'** का आयोजन चोपड़ा लान्स नासिक (महाराष्ट्र) में किया जा रहा है। परम पू. गुरुदेव राष्ट्रसंत आचार्य सम्राट श्री आनंदऋषिजी म. सा. द्वारा स्थापित **अखिल भारतीय स्वाध्याय संघ** ने पूरे भारतवर्ष में हजारों स्वाध्यायियों को पढ़ा-लिखाकर स्वाध्यायी बनाया। इन स्वाध्यायियों ने पूरे भारतवर्ष में चातुर्मास काल में जहाँ-जहाँ पर साधु-साध्वीजी का चातुर्मास नहीं होता है, उन श्रीसंघों में आज तक अपनी सेवाएं दी है।

आप सभी से नम्र निवेदन है कि आप स्वाध्यायी बनना चाहते हो तो कृपया इस **पंच दिवसीय स्वाध्यायी शिविर** में अवश्य भाग लें। स्वाध्याय शिविर में आपके आवास-निवास, खाने पीने का पूरा प्रबंध किया गया है। शिविर में धार्मिक अध्ययन के लिये तरह-तरह के शिक्षकों को आमंत्रित किया गया है। अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर इस स्वाध्याय शिविर को सफल बनावें तथा स्थानकवासी जैन समाज की सेवा करने के लिये अपना नाम, पता, मोबाईल नंबर नीचे लिखे हुए पदाधिकारियों के पास जल्द से जल्द रजिस्टर करवाये, ताकि आवास-निवास की व्यवस्था सुचारू रूप से की जा सके।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ ...

मोहनलाल चोपड़ा जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
09423962818

शोभाचंद संचेती जैन
कार्याध्यक्ष
आ. भा. स्वाध्यायी संघ
09405107851

निर्मल छाजेड़ जैन
प्रमुख प्रवक्ता
अ. भा. स्वाध्यायी संघ
09422344408

डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन
राष्ट्रीय महामंत्री
09028736831

ललित मोदी जैन
राष्ट्रीय मंत्री
09422246500

पारस मोदी जैन
राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य
09820060530

अभय चोपड़ा जैन
राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य
09423962828

शशिकुमार 'पिंटू' कर्नावट जैन
राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष
09823955515

रूचिरा सुराणा जैन
राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा
09820004079

श्रीसंघ की महत्ता एवं निर्वाह

– ताराचंद जोगराज, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

पिछले अंक का शेष....

5. **श्रीसंघ विकास हेतु योगदानः-** श्रीसंघ के सदस्यों का धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक उन्नति में श्रीसंघ का बहुमूल्य योगदान होता है इस बात को ध्यान में रखते हुए हमें भी श्रीसंघ के गौरव की अभिवृद्धि के लिये प्रयास रखना है और उसके लिये निम्न बातों की ओर ध्यान देना जरुरी है।

1. श्रीसंघ की आज्ञा-अनुशासन तथा मार्यादा का पालन करने में तन-मन की प्रसन्नता का अनुभव करना।
2. श्रीसंघ परिवार के सदस्यों मे प्रेमपूर्ण आत्मीयता का उचित व्यवहार हो। हर कोई सदस्य सुझाव रख सकता है लेकिन कोई भी अपने सुझाव स्वीकार कराने का आग्रह न करे तथा बहुमत से पारित सुझाव का सहर्ष स्वीकार करके पालन करना चाहिए।
3. श्रीसंघ के पदाधिकारीगण सदस्यों के विचार शांति एवं तन्मयता से सुनें और उस पर गहराई से चिंतन-मनन करें। आवश्यकता हो तो ज्येष्ठ-श्रेष्ठ श्रावक-श्राविकाओं से चर्चा करे, पश्चात निःस्वार्थ तथा निष्पक्षता से श्रीसंघ के हित में निर्णय लेने की क्षमता रखें।
4. श्रीसंघ द्वारा लिये गये निर्णय को सभी सहर्ष स्वीकार करें और उसे कार्यान्वित करने में जुट जायें। आपस में खींचातान, गुटबाजी, असभ्य वचन तथा अनुचित व्यवहार को संघहित में स्थान न दें।
5. सिद्धांतों के पालन में समझौता न करते हुए दृढ़ता से पालन का लक्ष्य रखे।
6. पदाधिकारी पदका मोह तथा गर्व न रखें। स्वयं को श्रीसंघ सेवक समझकर ही आत्मीयता से कार्य करने का प्रयास करें।
7. सभी सदस्यगण अपनी शक्ति अनुसार यथा संभव तन,मन,धन तथा समय के अमूल्य योग के साथ संघ विकास और जिनशासन के प्रभावना का कार्य करे।
8. कार्यकर्त्ताओं को कार्य सोपने के बाद कार्यपूर्ति के लिये अधिकार तथा आवश्यक धनराशि उपलब्ध कराने का पदाधिकारी ध्यान दें।
9. कार्यकर्त्ताओं के कार्य की भूरी-भूरी प्रशंसा करके उन्हें आगे बढ़ाने का लक्ष्य रखें।
10. श्रीसंघ के सदस्यों को प्रोत्साहित करते हुए उन्हें अपनी क्षमता दिखाने का अवश्य अवसर दें।
11. सभी श्रीसंघ के कार्य को अपना ही कार्य समझकर निष्ठापूर्वक समर्पित भाव से संघ-विकास में हो सके उतना योगदान देने का लक्ष्य रखे।

इस प्रकार के नेतागण, पदाधिकारी, कार्यकर्त्ता, सदस्य योगदान देने का प्रयास करें तो श्रीसंघ को उन्नति उत्कर्ष होना निश्चित है।

सार संक्षेपः- श्रीसंघ के उन्नति उत्कर्ष तथा विकास हेतु तन,मन, धन इन तीन तत्वों के सहयोग की आवश्यकता होती है। हर सदस्य का कर्त्तव्य

बनता है कि श्रीसंघ सेवा हेतु तीनों सहयोग के लिये आगे अपने की। वैसे ही ज्ञान-दर्शन चारित्र के विकास से ही श्रीसंघ का विकास संभव है। अतः श्रीसंघ का हर सदस्य धार्मिक, ज्ञानी एवं विद्वान बने। हर सदस्य को चाहिए अपने धर्म, श्रीसंघ के प्रति भक्ति, श्रद्धा, पूर्ण विश्वास रखे। धर्म क्रिया, नैतिकता तथा चारित्रयता की ओर गंभीरता से ध्यान रखने की अति आवश्यकता महसूस करें।

दूसरों के दोषों को देखने की बजाय गुणों को देखने की दृष्टि तथा दूसरों की निंदा करने पूर्व स्वयं को निरीक्षण करने की प्रवृत्ति अपनायें। दूसरा कोई हमें कंट्रोल करें उससे अच्छा स्व-अनुशासन एवं स्वयं का निरीक्षण। हम साधक बनें विराधक नहीं। श्रीसंघ के लिये प्राणवायु का कार्य करके श्रीसंघ कार्यों की सिद्धि में सहायक बनने का प्रयास रखें।

स्वयं के आध्यात्मिक विकास के साथ श्रीसंघ की मजबूती एवं चल रहे प्रकल्पों की सफलता के लिए पूर्ण सम्भाव से पुरुषार्थ करना है, क्योंकि इस धर्म संघ के निर्माण में हमारे पूर्वजों ने जो त्याग, बलिदान तथा आदर्श सेवाएं दी है उसे हमें आगे चलाना है। हमारे श्रीसंघ को आदर्श धर्म श्रीसंघ के रुप में बनाये रखना है। इसलिये यह 'श्रीसंघ हमारा है और इस श्रीसंघ के हैं' यह भावना हमेशा रखें और श्रीसंघ को आत्मनिर्भर बनाने का पुरुषार्थ करना है। इन्हीं मंगलमयी भावनाओं के साथ जय महावीर, जय जिनेन्द्र! ✧✧

अगर आपको जैन प्रकाश पत्रिका नहीं मिल रही है तो कृपया ध्यान दें

1. **आपने आजीवन सदस्यता फार्म पर जो पता दिया था अगर वह बदल गया है तो उसकी सूचना आजीवन सदस्यता क्रमांक के साथ केन्द्रीय कार्यालय को देवें।**

3. **अगर आपके परिवार में एक से अधिक पत्रिका प्राप्त हो रही है तो इसकी सूचना भी हमें आजीवन सदस्यता क्रमांक के साथ अवश्य देवें।**

4. **जैन प्रकाश पत्रिका से संबंधित अन्य कोई सुझाव एवं शिकायत है तो कृपया तुरन्त लिख भेजिए। सुझाव आपके, समाधान हमारा। आप अपने सुझाव अथवा शिकायत नीचे लिखे ई-मेल पर हमें तुरंत भेजें।**

aissjc1906@gmail.com एवम् ashokpagariyaandco@gmail.com

- राष्ट्रीय अध्यक्ष / प्रधान सम्पादक

पूज्या श्री शांतिकुंवर जी म. सा. दिव्य विभूति

– प्रभा कल्याणमल जैन, देवास (मध्य प्रदेश)

श्रमण संघीय परिवार की महान साध्वी मालवमणि प्रवर्तिनी गुरुवर्या श्री चाँदकुंवर जी म.सा. की सुशिष्या बालब्रह्मचारिणी धीर, गंभीर, वात्सल्यता की मूर्ति आदि अनेक गुणों से ओत-प्रोत श्री शांतिकुंवरजी म.सा. का नाम जैसे ही मस्तिक में आता है, मन भाव-विभोर हो जाता है। 7 जून का दिन क्या आ रहा है, एक अनहोनी घटना अचानक घटित हो गई। स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि गुरुवर्या दिल्ली के करोल बाग स्थानक में अंतिम सांस लेंगे व हमसे हमेशा-हमेशा के लिए विदा लेंगे।

चाहे गुरुवर्या हमारे बीच नहीं है, परंतु प्रतिक्षण उनकी मधुरवाणी, उनका व्यक्तित्व, गौर वर्ण, हंसमुख चेहरा, विशाल ललाट, सौम्य, शांत प्यार की मूर्ति, प्रवचनकार, लेखिका, कवियत्री, चित्रकार, रचनाकार आदि विशेषताओं से सम्पन्न हमें प्रेरणा देती रही हैं और प्रेरणा देती रहेंगी।

आपने नौ वर्ष की आयु में पू. श्री चाँदकुंवर जी म.सा के पास दीक्षा लेकर अपने जीवन को धन्य कर लिया, जिनशासन की असीम, प्रभावना कर आदर्शमय जीवन व्यतीत किया। आपने गुराणी के सान्निध्य में सात भाषाओं का ज्ञानर्जन किया। आगमों का अध्ययन कर, संयमपूर्ण जीवन में अपनी अलग पहचान बना दी। आपने कभी यश-पद की कामना नहीं रखी, आप मध्यप्रदेश, मालवप्रांत, निमाड़, यू.पी, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, जम्मू, आदि क्षेत्रों में विचरण कर धर्म प्रभावना की। आपका देवास पर विशेष लगाव था आपको अपनी मृत्यु का आभास दो वर्ष पूर्व ही हो गया था। आपने अपनी अंतेवासी शिष्या पूज्या श्री रमणिक कुंवर जी म.सा दमु को बता दिया था। आपकी सात शिष्याऐं है, तीन गुरु बहनें है। एक पौत्र शिष्या पू. श्री पूनम जी म.सा. है। सभी जिनशासन की महत्ती प्रभावना कर रही हैं। सात शिष्याओं में पूज्या श्री गरिमा श्री जी म.सा. देवलोक हो गए हैं।

आपने रत्नाखेड़ी में 2005 का चातुर्मास कर एक नया इतिहास रचा, वहाँ एक भी जैन घर नहीं, राजपूत बस्ती को शुद्ध शाकाहारी बनाया। भगवान महावीर के सिद्धांतों को अपनी ओजस्वी, सरलवाणी से कूट-कूट कर भर दिया। वहाँ के गुर्जर, ठाकुर समाज के लोगों ने अनेक तपस्यायें भी की व गुराणी पर बहुत श्रद्धा रखते हैं सन् 2015 का चातुर्मास पूज्या श्री रमणीक कुंवर जी मा.सा. ने रत्नखेड़ी में किया। जहाँ भी कहीं आप विराजते थे, भक्तों का मेला लगा रहता था। आज निमाड़ सौरभ रमणिककुंवरजी म.सा. भी देदीप्यमान नक्षत्र की तरह चमक रहे व धर्म की महत्ती प्रभावना कर रहे हैं। गुरुवर्या श्रीजी की दशवीं पुण्यतिथि पर मैं हृदय से भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करती हूँ।

जिनकी आँखों में था, अनुकम्पा का अंजन,
स्वभाव में था, सुसंस्कारों का चंदन,
ऐसी गुरुवर्या को मेरा भावपूर्वक वंदन-नमन।

✧✧

एक छोटी सी चींटी आपके पैर को काट सकती है, लेकिन आप उसके पैर को नहीं काट सकते? इसलिए किसी को छोटा नहीं समझना चाहिए। वह जो कर सकता है शायद आप ना कर पायें।

स्वाध्याय अपनाये जीवन ज्योति जगाये

- दिपाली सुमतिलालजी मुगदिया जैन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

A) स्वाध्याय क्यों करे? (B) किसके लिए करे? (C) कैसे करे? (D) कैसे याद रखे? (E) हम भूल क्यों जाते है?

A) **स्वाध्याय क्यों करे?**

(1) ज्ञान की प्राप्ति के लिए (2)) चित्त एकाग्रता के लिए (3) अपनी आत्मा को स्थिर करने के लिए (4) स्वाध्याय में ज्ञानयोग, कर्मयोग एवं भक्तियोग का समन्वय है एवं जिससे परमात्मा योग की प्राप्ति होती है।

(B) **स्वाध्याय किसके लिये करे?**

1) भावना शुद्ध होती है।

दोहाः- स्वाध्याय जो नित्य करे एकाग्रता को धार।
भावना शुद्ध बने जग में मिले सत्कार।।

2) **समकित की प्राप्ति होती है।**

दोहाः- आत्मशक्ति स्वाध्याय समकित ज्योत प्रकटाय।
मिथ्यात्व विभाव है भव रमे भटकाय।।

3) **कर्मों की निर्जरा होती है।**

दोहाः- स्वाध्याय ही सच्चा आत्म आनंद कहाय।
कर्मो की निर्जरा होवे जो स्वाध्याय कहाय।।

4) **सरलता आती है।**

दोहाः- वितराग के मार्ग को जानकर रहाय।
सरलता के प्रकाश में सदा प्रकाशित।।।

5) **सभा आदि की प्राप्ति होती है।**

दोहाः- स्वाध्याय करने से क्षमा गुण प्रकटाय।
स्थिर बनाता मानव को दुख सारा जल जाय।।

6) **चिंता दूर होती है।**

दोहाः- स्वाध्याय करने से सम्यग चिंतन बढाय।
चिंता किंकर शीघ्र मिटे आनंद मंगल प्रगटाय।।

7) **आत्म बल बढता है।**

दोहाः- आत्मबल बढ़ता रहे तो स्वाध्याय कराय।
सफलता मिले शीघ्र ही जीवन ज्योति जगाय।।

8) **दुर्गती का नाश होता है।**

दोहाः- जिनागम ज्ञान ही सम्यग ज्ञान कहाय।
नित्य स्वाध्याय करने से दुर्गती शीघ्र नशाय।।

9) **द्वार पर आये शत्रु से आदर भावना रहती है।**

दोहाः- स्वाध्याय करने से हृदय विशाल बन जाय।
द्वार पर आये शत्रु से आदर भाव रहाय।।

10) **जिनशासन की रक्षा होती है।**

दोहाः- जिनशासन की रक्षा सम्यगज्ञान कहाय।
स्वाध्याय करने से ही साधक सक्षम रहाय।।

11) **संशय की निवृत्ति होती है।**

दोहाः- तीर्थंकर की वाणी को गणधर प्रभु गुंथाय।
संशय निवृत्ति होती है स्वाध्याय कराय।।

12) **तप, त्याग, वैराग्य की वृध्दि होती है।**

दोहाः- स्वाध्याय जो नित्य करे हृदय उत्साह लाय।
तप, त्याग, वैराग्य की वृध्दि होती है।।

13) **आतिचारो की शुद्धि होती है।**

दोहाः- वृत्तो मे जो दोश लगे अतिचार कहाय।
अतिचारो की शुद्धि होवे जो स्वाध्याय कहाय।।

14) **सदगती की प्राप्ति होती है।**

दोहाः- ज्ञानी ज्ञान भान रहे रागदिक मल खोय।
कुछ कार्य बाकी रहे सद्गति प्राप्त होय।।

15) **उत्कृष्ट रसायन तो तीर्थंकर गौत्र बंधे।**

दोहाः- स्वाध्याय मे रमण करे भाव विशुद्धि कराय।
उत्कृष्ट रसायन आवे तो गौत्र तीर्थंकर बंधाय।।

C) स्वाध्याय कैसे करे?

(1) स्वाध्याय के प्रति अपनी रुची को तेज करना। (2) स्वाध्याय करने के पहले वंदना करना। (3) ज्ञान सिखने के लिये गुरु या गुरुनीसा से आज्ञा लेना। वह नही होने पर भी बोलकर आज्ञा लेना। हे मम उपकारी गुरुदेव! मुझे शास्त्र सीखना है उसके लिये आप मुझे सहायता करना (4) बाद में आपको जितनी भी गाथा याद करनी है वह पढ़के जमा लेना फिर गाथाओं का अर्थ जमा लेना ताकि याद करने में सुविधा हो। (5) गाथा याद करने के पहले ध्यान करना। ध्यान में अचेतन मन को संस्कार देना। (1) मेरी बुद्धि तेज है। (2) मैं याद कर सकती हूँ। (3) जीवन को महान बनाने के लिए ज्ञान मुझे सिखना है। (4) ज्ञान इसभव परभव भवभव मे साथ रहता है इसलिये बहोत उत्साह के साथ मुझे सीखना है। (5) ज्यादा से ज्यादा समय ज्ञान ध्यान मे लगाऊँगी ऐसा दृढ़ निश्चय करना। (6) एक बार पढ़कर ही मैं याद कर लूंगी ऐसा अचेतन मन को संस्कार देना। (7) किताब खोलकर एक चरण पढ़ना फिर किताब बंद करना। फिर आज्ञाचक्र में गाथा घुमाना पाँच बार फिर दूसरा चरण पाँच बार फिर दोनों चरण पाँच-पाँच बार फिर इसी तरह तीसरा और चौथा करते-करते पूरी गाथा आज्ञाचक्र में घुमाना। (8) यह आज्ञाचक्र हमें अपने ही ध्यान में बनाना है। बाद में गाथा नाभिमंडल मे उतारना ताकि सदा के लिये याद रहेगी। ऐसा दृढ़ संस्कार करना। (9) फिर गुरु गुरुणीसा को वंदन करके भक्तिभाव समर्सुपनता से सुनाना। सुनाते समय भय नही रखना। (10) अगर गुरु गुरुणिसा टोका-टोकी करे तो नाराज नही होना। वह जितनी अनुशासन करेंगे उसमे हमारा ही लाभ है।

(D) याद किया हुआ स्वाध्याय कैसे टिकाये?

1) आगम ज्ञान फेरने की रुची जगाना।

दोहा:- आगम की हो चाहना तभी आगे बढ़ाय।
रुची जगाये ज्ञान पर बार-बार फेराय।।

2) एकाग्रता से ज्ञान फेरे।

दोहा:- गुरुदेव के पास में या स्वयं ही फेराय।
एकाग्रता को धारकर स्वाध्याय कराय।।

3) ग्रह किये हुये ज्ञान को सदा के लिये टिकाये।

दोहा:- ग्रह किये ज्ञान को बहोत काल धराय।
अवगुण सारे नष्ट हो आगम ज्ञान सुखदाय।।

4) सिखे ज्ञान का बार-बार स्वाध्याय कराय।

दोहा:- आगम ज्ञान ध्यान कराय स्वाध्याय नित्य कराय।
तब ही ज्ञान ताजा रहे ज्ञानीजन फरमाय।।

5) संशय उत्पन्न होने पर पूछ के निर्णय करे।

दोहा:- शंका नही करे कभी भी जिनागम के माय।
संशय उत्पन्न होने पर पुछ के निर्णय कराय।।

बात सुनने से व्याख्यान सुनने में सौ गुणा रुचि ज्यादा चाहिये।

E) हम भूल कैसे जाते है?

(1) अपनी स्मरणशक्ति पर अविश्वास। (1) याद रखने की अनिच्छा। (2) दिलचस्पी का अभाव। (3) (4) चिन्त की चंचलता। (5) कल्पना शक्ति का अभाव। (5) अर्थ को नही समझने।

बुद्धिमान होने आठ गुण:- (1) शास्त्र श्रवण की इच्छा। (2) शास्त्रों को समझना। (3) मन में उतारना। (4) याद करना। (5) उस पर तर्क करना। (6) उस पर विविध प्रकार से चिंतन करना। (7) तर्क पर योग्य समाधान प्राप्त करना। (8) उसके संबंध मे अंतःकरण में दृढ़ निश्चय करना।

'शिक्षा प्राप्त न होने के कारण'

मान, क्रोध, प्रमाद,रोग, आलस्य

नोट:- शास्त्र में जिस समय जो सूत्र पढ़ने की आज्ञा है उसी समय ही उसे पढ़े। ज्ञान सीखते समय यथाशक्ति तप्र करना। सूत्र को शुद्ध पढ़ना।

।।जय जिनेन्द्र।।

✧✧

महिला शाखा द्वारा आयोजित गतिविधियाँ...

'महिला सुपर वुमन' का ताज मंजु जी दरड़ा जैन को

गंगाखेड़ (महाराष्ट्र) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस महिला शाखा कि ओर से दिया जाने वाला 'महिला सुपर वुमन' का ताज हमारी राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती रुचिराजी सुराना जैन कि उपस्थिति में सौ. ललिताजी बम्ब जैन ने आज दिनांक 23 मई 2017 को गँगाखेड में उद्घोषित किया। राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष श्रीमती मंजु जी दरड़ा जैन को '**सुपर वुमन के ताज**' से अलंकृत किया गया।

प्रेषक : ललिता बंब

दिल्ली प्रान्तीय कार्यक्रम की प्रगति रिपोर्ट

नई दिल्ली : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस महिला शाखा द्वारा नई दिल्ली क्षेत्र में निम्नलिखित गतिविधियों का संचालन जनवरी माह से अभी तक किया गया:-

1. अशोक विहार दिल्ली में आयोजित जैन दीक्षा कार्यक्रम में महिला शाखा द्वारा पुण्य आत्माओं का बहुमान।
2. 26 जनवरी 2017 को जैन स्थानक डेरावाल नगर में रक्तदान शिविर का सफल आयोजन जिसमें 78 यूनिट रक्त इकट्ठा किया गया।
3. महिला दिवस के अवसर पर रोहिणी में महासती पू. श्री श्रेयाजी म. के आशीर्वाद से राशन वितरण किया गया।
4. भगवान् महावीर जयंती के अवसर पर बच्चों को पाठय सामग्री व खाने के डिब्बे का वितरण।
5. महावीर जयंती के अवसर पर अरिहंत नवकार सोसायटी फार ह्यूमेनिटी द्वारा आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया।
6. तालकटोरा स्टेडियम में आयोजित महावीर जयंती के कार्यक्रम में सहभागिता।
7. लेबर डे पर स्थानक के कर्मचारी का सम्मान।
8. महिला संघ लेकर जैन वल्लभ स्मारक में माता पद्मावती के दरबार में सत्संग का आयोजन।
9. योग स्वास्थ्य संस्थान की डेरावाल नगर शाखा का पूरा दायित्व लेते हुए पिछले दो महीने से रोज प्रातः 6-7 बजे तक योग की कक्षा द्वारा महिलाओं एवं पुरुषों में स्वास्थय के प्रति जागरुकता उत्पन्न करना तथा महिलाओं को शारीरिक सशक्तता की ओर बढ़ाना।

गप्रेषक : अर्चना सुशील

आँध्र प्रदेश तेलंगाना प्रांत के कार्यक्रम की प्रगति रिपोर्ट

हैदराबाद (आँध्र प्रदेश) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस महिला शाखा द्वारा क्षेत्र में निम्नलिखित गतिविधियों का संचालन जनवरी माह से अभी तक किया गया:-

१. रवींद्रमुनिजी म. के सान्निध्य में हैंडीकैप सेंटर पुणे में सहयोग राशि प्रदान की गयी।
२. रवींद्रमुनिजी म. के सान्निध्य में पंच सूत्रीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
३. तपचक्रेश्वरी अरुण प्रभाजी म. के १२२ आयम्बिल के पूर पर कबूतरों को दाना एवं भांवा गीत का आयोजन किया गया।

४ण शिक्षा हेतु पाँच सहधर्मी बच्चों को फीस दी गयी।

५ण (ब्वउम वित कर्पेइसमक) में अन्नदान का कार्यक्रम किया गया।

६ण मेगा ब्लड कैम्प का आयोजन किया गया।

७ण विकलांग कला वेदिका आश्रम में वॉटर डिस्पेंसर प्रदान किया गया।

८ण विकलांग कला वेदिका आश्रम में कन्यादान के अंतर्गत दो प्रज्ञाचक्षु जोड़ों को वस्त्र आभूषण कैश बर्तन आदि दिए गये।

९ण पू. श्री प्रवीणऋषि म. के सान्निध्य में **'महिला दिवस'** कार्यक्रम मनाया गाया।

१०ण आचार्य सम्राट आनंदऋषि जी म. की पच्चीसवी पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में काचिगुड़ा रेलवे स्टेशन के पास अन्नदान का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

११ण गुरु पद्म शताब्दी के अवसर पर सिकंदराबाद स्थित स्थानक में स्थाई सेवकों का सम्मान किया गया।

प्रेषक : शोभा बोहरा

राजस्थान प्रांत के कार्यक्रम की प्रगति रिपोर्ट

भीलवाड़ा (राजस्थान) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस महिला शाखा द्वारा क्षेत्र में निम्नलिखित गतिविधियों का संचालन जनवरी माह से अभी तक किया गया:-

1. प्रथम महिला सम्मेलन 6 अक्टूबर 2016 किशनगढ़ में।
2. द्वितीय महिला सम्मेलन 1 मार्च 2017 कोटा में।
3. तृतीय महिला सम्मेलन दिवाकर नगरी डूंगला में 23 अप्रैल 2017
4. ब्लड डोनेशन कैंप आचार्य श्री के जन्मदिन पर भीलवाड़ा में मनाया गया।
5. 15 अगस्त पर आचार्य श्री के सान्निध्य में सांस्कृतिक प्रोग्राम आयोजित किए गए।
6. आचार्य श्रीजी के सान्निध्य मे 20 मासखमण भाई-बहनों का अभिनंदन किया तपस्वियों तथा चाँदी के नारियल से सम्मान।
7. आचार्य श्रीजी के सान्निध्य में भगवान महावीर जन्मोत्सव मनाया और सभी को मिठाइयाँ बांटी गई।
8. जन्माष्टमी पर विचित्र वेशभूषा का प्रोग्राम रखा गया।
9. रोजगार हेतु सिलाई मशीन वितरित की गई।
10. गरीबों को खाना और खाद्य सामग्री दी गई।
11. गरीबों को कंबल और साड़ियाँ वितरण की गई।
12. स्कूलों में बच्चों को ड्रेस, जूते, बच्चों को पारितोषित, दरी, पट्टी, पायदान दिए गये।
13. स्कूल में अध्यापकों का सम्मान किया व वृक्षारोपण किया गया।
14. आखा तीज पर अभी तपस्वियों का चाँदी के सिक्कों से सम्मान किया गया।
15. 22 अप्रैल 2017 को एक ध्यान शिविर आचार्य भगवान के सानिध्य में आयोजित किया गया।

16 राजस्थान में संत-सतियों जी की सेवा में गए।

17. आचार्य भगवान के जन्मदिन पर **'महा ब्लड डोनेशन'** में रक्तदान करते हुए और साथ में सेवा दी।

प्रेषक : लाड मेहता

महिलाओं द्वारा प्रथम व्यापार मेले का आयोजन

गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस महिला इकाई की ओर से पहली बार व्यापार मेला 'उड़ान' का अयोजन किया। मेले में श्री एस.एस. जैन सभा ब्राह्मी सुंदरी महिला संघ ने भी सहयोग दिया। मेले में खाने-पीने के अलावा विभिन्न वस्तुओं के स्टाल भी लगाए गए। मेले का उद्घाटन मधु जैन व सीमा जैन ने किया। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जी.डी. जैन जी भी उपस्थित थे।

मेले में अन्य जिलों से भी जैन समाज के लोग शामिल हुए। सर्वश्री स्वराज जैन, संजीव जैन, हंस कुमार जैन, रमित जैन, डॉ. विद्युत जैन तथा प्रांतीय महिला अध्यक्षा सविता जैन, महामंत्री सोनिया जैन, शिल्पा जैन, अरुण पमेचा, समुन जैन, पंकज जैन, सुनील जैन, संगीता जैन, रुचिरा जैन, अनिता जैन आदि ने महिला व्यापार मेले में भरपूर सहयोग किया।

प्रेषक : ललिता बंब

गुजरात प्रांत के कार्यक्रम की प्रगति रिपोर्ट

सूरत (गुजरात) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस महिला शाखा द्वारा क्षेत्र में निम्नलिखित गतिविधियों का संचालन जनवरी माह से अभी तक किया गयाः- 1. Blood Donation, 2. Learn & play cookery show, 3. Pasti daan abhiyaan, 4. ahinsa saptah 1-9 April, 5. fruit donation in hospitals, 6. donation on labour day.

प्रेषक : ललिता बंब

ब्लड़ डोनेशन शिविरों में महिलाओं की भागीदारी की रिपोर्ट

नई दिल्ली : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस महिला शाखा द्वारा दिनांक 26 जनवरी 2017 को देश भर में लगाए गए ब्लड़ डोनेशन शिविरों में अभूतपूर्व योगदान दिया गया। इन सभी शिविरों में महिलाओं के योगदान से संबंधित प्राप्त जानकारी इस प्रकार से है : -

- पश्चिम बंगाल के कलकत्ता से 60 यूनिट ब्लड़, पंजाब प्रान्त से 1700 यूनिट ब्लड़
- उत्तर प्रदेश से 160 यूनिट ब्लड़, आन्ध्र प्रदेश से 1648 यूनिट ब्लड़
- गुजरात प्रान्त के २२ स्थानों पर लगाए गए शिविरों में से 2200 यूनिट ब्लड़
- राजस्थान प्रान्त के भीलवाड़ा से 150 यूनिट ब्लड़
- महाराष्ट्र के लातूर से 75 यूनिट, परभणी से 75 यूनिट, मुरुड़ से 46 यूनिट गंगाखेड़ से 400 यूनिट ब्लड़,
- मध्य प्रदेश के मंदसौर से 108 यूनिट, नीमच से 75 यूनिट, उज्जैन से 100 यूनिट खांचरौद से 50 यूनिट, देवास से 50 यूनिट, रतलाम से 155 यूनिट, जावरा से 140 यूनिट

उपरोक्त कार्य में राष्ट्रीय महिला कोषाध्यक्षा श्रीमती मंजु जी दर्डा जैन ने अस्वस्थ होते हुए भी गंगाखेड़ में अपना सराहनीय सहयोग प्रदान किया।

प्रेषक : ललिता बंब

समाचार - प्रकाश

युग प्रधान आचार्य सम्राट भगवन पू. श्री डॉ. शिवमुनि म. के स्वागत में उमड़ा जन सैलाब

जावरा (मध्यप्रदेश) : अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के महाप्राण, आत्मज्ञानी, सद्गुरु युगप्रधान पू. श्री डॉ. शिवमुनि जी म. आदि ठाणा-8 शेषकाल में विहार के दौरान विभिन्न क्षेत्रों की स्पर्शना करते हुए 21 मई रविवार को मध्य प्रदेश के मालना की नगरी जावरा, रतलाम में पदार्पण हुआ। श्री वर्धवान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ व आस-पास के श्रीसंघों ने आचार्य श्री के आगमन की ख़बर पाकर सुबह से श्रद्धालुओं की बड़ी संख्या सड़क के दोनों ओर उनकी अगवानी के लिए पलक बिछाए खड़ी थी। आचार्य श्री व संतगणों को जुलूस की शक्ल में गगन भेरी नारों - अहिंसा के अवतार भगवान महावीर स्वाकी की जय हो आचार्य भगवन पू. शिवमुनि जी म. की जय, श्रमण संघ अमर हो, आचार्य सम्राट पू. आनंदऋषि जी म. की जय, जावरा भांटी के प्रज्ञा पू. श्री कस्तूरचंद जी म. की जय करते हुए मुनि मंडल को जनता परिसर में भव्य प्रवेश कराया।

जावरा श्रीसंघ द्वारा आयोजित धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए पू. आचार्य श्रीजी ने कहा कि भगवान महावीर ने अहिंसा का संदेश देकर लोगों को यही समझाना चाहते थे कि सबसे प्रेम करों। सबसे प्रेम करो, प्रेम हर व्यक्ति तक पहुंचने की पहली सीढ़ी होती है। सत्य को अपने भीतर खोजे। जीवों के प्रति करुणा रखे। यही भाव हमें महापुरुष बनाते हैं। अतिथि भगवान तुल्य है। सत्कार में हमें शुद्ध भाव रखना चाहिए। हमें सुपात्र को दान देकर पुण्य अर्जित करना चाहिए। महिलाओं को भोजन बनाते हुए उच्चभाव अंगीकार करना चाहिए तभी घर का वातावरण शुद्ध होगा। श्री वर्धममान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री इन्द्रमल टुकडिया महामंत्री श्री कनकमल चोरडिया ने बताया कि अपने दो दिवसीय के अल्प प्रवास में आचार्य श्री ने यहां से ताल के लिए विहार किया। आचार्य श्रीजी अपने मुनिगणों के साथ बुधवार को आलोट से नागेश्वर की ओर विहार पर थे। धर्मसभा के पश्चात आचार्य श्रीजी एवं संतगण ने जावरा के रावणद्वार के अन्न क्षेत्र का भी अवलोकन किया। अध्यक्ष श्री चन्द्र प्रकाश ओस्तवाल व सचिव संजय दसौत ने आचार्य श्रीजी को वहां संचालित होने वाली गतिविधियों के बारे में बताया। आचार्य श्री ही संचालित सेवा गतिविधियों को से काफी प्रभावित एवं प्रसन्न हुए।

प्रेषक : एस.सी. कटारिया

अम्बाला शहर में महिला अधिवेशन का आयोजन

अम्बाला (हरियाणा) : श्री आल इंडिया स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन, श्री केसरीमल जैन जी बुरड़, श्री पारस जैन जी मोदी व राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमति रुचिरा जैन जी सुराणा तथा कॉन्फ्रेंस के अनेक गणमान्य पदाधिकारियों की गौरवमयी उपस्थिति में दिनांक 21.5.2017 को श्री महावीर जैन भवन अंबाला शहर में महिला अधिवेशन का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती रुचिरा जैन जी सुराणा ने अपने ओजस्वी संबोधन से महिला शक्ति को सामाजिक एवं राष्ट्रीय कार्यों में बढ़-चढ़ कर भाग लेने के लिए प्रेरित किया। अम्बाला से राष्ट्रीय मंत्री श्री विमल जैन जी व श्रीमती नीना जैन जी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम में अंबाला के गणमान्यजन भी उपस्थित रहे। श्रीमती नीना जैन जी ने साधु-साध्वी जी महाराज के लिए अंबाला के समीप के क्षेत्रों में **'विहार आवास धाम'** की आवश्यकता तथा इस पर कार्य करने की अपील की।

प्रेषक : नीना जैन

महाश्रमण पू. श्री जिनेन्द्र मुनि म. से दीक्षा पाकर अभय कुमार चोरडिया बने जयंत मुनि म.

उदयपुर (राजस्थान) : अखिल भारतीय श्री गुरु पुष्कर संगठन समिति उदयपुर के तत्वावधान में महाश्रमण पू. श्री जिनेन्द्र मुनि जी म. के सान्निध्य में गुरुवार को सैक्टर-11 स्थित आदिनाथ भवन के सभागार में उपाध्याय पू. श्री जितेन्द्र मुनिजी म., पू. श्री प्रवीण मुनिजी म., पू. श्री डॉ. हर्ष प्रभाजी म., पू. श्री किरण प्रभाजी म., पू. श्री मंगल ज्योतिं जी म., पू. श्री डॉ. सुदर्शन प्रभा म., पू. श्री विनयवति जी म., साध्वी पू. श्री स्वातिजी म., पू. श्री प्राचीजी म. संत एवं साध्वी वृन्दों सहित हजारों श्रावक-श्राविकाओं की हर्ष हर्ष, जय जय के गगन भेदी जयकारों के साथ भव्य जैन भागवती दीक्षा महोत्सव सम्पन्न हुआ। जालौर के मुमुक्षु अभय कुमार चोरडिया महाश्रमण पू. श्री जिनेन्द्र मुनिजी म.से दीक्षित होकर पू. श्री जयंत मुनिजी म. बने।

दीक्षा समारोह के प्रारम्भ में दीक्षार्थी अभय कुमार ने जिनेन्द्र मुनि सहित सभी मुनिवृन्दों का आर्शीवाद लेकर उपस्थित जनों को अपना परिचय दिया। उन्होंने कहा कि दीक्षा परमात्मा को पाने की पहली सीढ़ी है और अरिहंत के चरणों में स्थान पाने का मार्ग है। दीक्षा भावना तो एक वैराग्य है जो अपने आप स्वयं में उत्पन्न होता है। इसके बाद साधुवृन्द दीक्षार्थी को अपने साथ ले गये एवं सांसारिक परिवेश का त्याग करवा कर साधुवेश धारण करवाया एवं पुनः जयकारों के साथ दीक्षार्थी को गुरुवर के सान्निध्य में लाया गया।

इस अवसर पर हजारों की संख्या मे उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने दीक्षा महोत्सव के बाद गौतम प्रसादी का लाभ लिया। समिति के अध्यक्ष संजय भण्डारी, मुख्य अतिथि के रुप मे नगर निगम महापौर चन्द्र सिंह कोठारी, विशिष्ट अतिथि नगर विकास प्रन्यास अध्यक्ष रविन्द्र श्रीमाली, कार्यक्रम अध्यक्ष के रुप मे तपोमूर्ति जीवन सिंह राजेश सिंह मेहता एवं अनेक गणमान्य उपस्थित रहे। **प्रेषक : संजय भण्डारी**

श्री जंवरीलाल जी सिसोदिया श्री वर्द्धमान शिक्षण समिति ब्यार के निर्विरोध अध्यक्ष

ब्यावर (राजस्थान) : ब्यावर शहर के प्रतिष्ठतम श्री वर्द्धमान कन्या महाविद्यालय ब्यावर एवं भंवरलाल गोठी पब्लिक सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल को संचालित करने वाली श्री वर्द्धमान शिक्षण समिति ब्यावर के चुनावों में जाने माने समाज सेवी श्री जंवरीलाल जी सिसोदिया सर्मसम्मति से निर्विरोध अध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए। ज्ञातव्य है इन शिक्षण इकाईयों में लगभग 2500 विद्यार्थीगण अध्ययनरत हैं तथा महाविद्यालय की छात्रायें अब तक शैक्षणिक श्रेष्ठता अर्जित करती हुई 32 मैरिट हासिल कर चुकी हैं।

प्रसिद्ध समाजसेवी श्री जंवरीलाल जी सिसोदिया, श्री तिजारती चैम्बर सर्राफान गौशाला प्रबंधक संस्था के उपाध्यक्ष, श्री मधुकर अर्चना मेडिकल उपकरण समिति, श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय वरिष्ठ मार्गदर्शक के रुप में सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। **प्रेषक : नरेन्द्र पारख**

समाज 'भूषण अलंकरण' श्रावक इन्द्रमल पगारिया को

मुंबई (महाराष्ट्र) : प्रवासियों की भारी मौजूदगी में मेवाड़ के रेलमगरा स्थित मेला ग्राउंड में अक्षय तृतीया पर पारणा महोत्सव हुआ। श्रमण संघीय महामंत्री पू. श्री सौभाग्य मुनि जी म. मेवाड़ प्रवर्तक पू. श्री मदन मुनि जी म., पू. श्री कोमल मुनि जी म. के सानिध्य में हुए इस शानदार कार्यक्रम में गाँव के वरिष्ठ श्रावक इन्द्रमल पगारिया को समाज भूषण का अलंकरण प्रदान किया गया। इस अवसर पर भारतवर्ष से आये 65 तपस्वियों का पारणा गन्ने का रस मिलाकर करवाया। कार्यक्रम में संपूर्ण भारतवर्ष से हजारों की संख्या में लोगों ने भाग लिया।।

प्रेषक : दिलीप पगारिया जैन

राष्ट्रसंत पू. आचार्य श्री राममुनि 'निर्भय' का चातुर्मास प्रवेश 2 जुलाई को

मुंबई (महाराष्ट्र) : श्रमण संघीय सलाहकार पू. श्री सिद्धांताचार्य राष्ट्रसंत डॉ. श्रीराम मुनि जी म. 'निर्भय' युवा संत रत्न पू. श्री विकास मुनि जी म. ठाणे-2 का मुंबई विरार में चातुर्मास प्रवेश 2 जुलाई को होगा। विरार श्रीसंघ में भारी उत्साह है। प्रवेश की जोर-शोर से तैयारियाँ हो रही हैं। **प्रेषक : ललित कोठारी**

लाईफ डिझाईनिंग-3 शिविर का सफल आयोजन

नागपुर (महाराष्ट्र) : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के तत्वावधान में रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर प.पू. आचार्य श्री प्रवर 1008 श्री हीराचंद जी म., प.पू. उपाध्याय प्रवर श्री मानचंद जी म. एवं शासनप्रभाविका प.पू. श्री तेजकंवर जी म. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री प.पू. श्री इंदुबाला जी म. ठाणा-6 के के शुभसान्निध्य में संत्रानगरी नागपुर की पावन धरा पर 15 वर्ष की आयु से ऊपर की अविवाहित लड़कियों को ज्ञान कवच प्रदान कर सुसंस्कारों के बिजारोपण एवं उनके भविष्य निर्माण हेतु दिनांक 12 मई से 14 मई 2017 के बीच लाईफ डिझाईनिंग-3 शिविर का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। भीषण गर्मी एवं परीक्षा का समय होते हुए भी 45 शिविरार्थियों ने इस त्रिदिवसीय आवासीय शिविर का लाभ लिया। शिविर की मुख्य सूत्रधार प.पू. मुदितप्रभाजी म. ने शिविर को उपयोगी और सार्थक बनाने के लिये अथक प्रयास किये। जिनशासन दिपिका प.पू. श्री सिंधुजी म.का योगदान सराहनीय रहा। भारतीय जैन संघटना के राष्ट्रीय पदाधिकारी रजनीश जैन ने 21 वीं सदी में लड़कियों का सक्षमीकरण विषय पर संबोधित किया। शिविरार्थीयों के आवास एवं निवास की सुंदर व्यवस्था श्रीसंघ द्वारा की गई।

शिविर के सुचारु संचालन में मयूरी कटारिया, ज्योति शेखर लोढ़ा, सुषमा गाँधी, ममता बोरा, शीतल कटारिया, प्रीति पीच्वा, ममता कटारिया के साथ-साथ जलगांव से पधारी छाया भंडारी का योगदान सराहनीय रहा। श्रीसंघ के वरिष्ठ मार्गदर्शक शीतलबाबु सुराणा एवं प्रकाश बाबु चोरडिया ने आयोजन में महती भूमिका निभाई। डॉ गौतम सिंगी के संयोजन में संपन्न उपरोक्त सभी कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिये नरेन्द्र कटारिया, महेन्द्र मुणोत, आनंद कटारिया, कमल भंडारी ने अथक प्रयास किये। **प्रेषक : डॉ. गौतम सिंगी**

एक लाख लोगों का शाकाहार-संकल्प

उज्जैन (मध्यप्रदेश) : 22 मई 2017 को मध्यप्रदेश के उज्जैन में हर जाति और मजहब के एक लाख लोगों ने एक साथ बैठकर हमेशा शाकाहारी रहने का संकल्प किया। बाबा जय गुरुदेव महाराज की पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित त्रिदिवसीय कार्यक्रम में पहले दिन यह ऐतिहासिक पवित्र संकल्प किया। बाबा उमाकान्त महाराज के सान्निध्य में हुए इस कार्यक्रम को विश्व-कीर्तिमान की स्वर्ण-पुस्तक (गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड) में शामिल किया गया है। **प्रेषक : डॉ. दिलीप धींग**

साहित्य पढ़ो क्षयोपशम करो ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता से दस हजार स्वाध्यायियों को जोड़ने का लक्ष्य

थांदला (म.प्र.) : जिनशासन गौरव गणाधीश प्रवर पू. गुरुदेव श्री उमेशमुनिजी म.सा. 'अणु' द्वारा भव्य जीवों की जिज्ञासा के समाधान के लिए रचित पुस्तक **'जिज्ञासा की तरंगें'** पर आधारित साहित्य पढ़ों क्षयोपशम करो ओपन बुक ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता परीक्षा इस वर्ष भी आयोजित की जा रही हैं। परीक्षा का

निरंतर यह 17वाँ वर्ष हैं। ज्ञानवर्धक यह प्रतियोगिता पू. गणधधीश के शिष्य प्रवर्तक पू. श्री जिनेंद्र मुनिजी म. सा. की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से व 'धर्मधारा' धार्मिक मासिक पत्रिका परिवार के तत्वावधान में हो रही हैं। इसमें अणुवत्स पू. श्री संयत मुनिजी म.सा. एवं तत्वज्ञ पू. श्री धर्मेंद्रमुनिजी म.सा. ने अथक पुरुषार्थ कर प्रश्न संयोजन किया हैं। धर्मधारा के प्रधान संपादक श्री भरतजी भंसाली व प्रबंध संपादक श्री दीपकजी रुनवाल थांदला एवं सहसंपादक श्री देवेंद्रजी गादिया दाहोद ने बताया कि इसके तहत 15 मई 2017 से देशभर के कोने-कोने में प्रतियोगिता की सामग्री भेजना प्रारंभ कर दी हैं। इस प्रतियोगिता में प्रतिवर्ष समूचे देश के श्रावक श्राविकाएं बड़ी संख्या में भाग लेकर अपने ज्ञान में अभिवृध्दि करते हैं। गौरतलब हैं कि परीक्षा की तैयारी के लिए समय-समय पर पूज्य प्रवर्तक श्रीजी एवं पूज्य संयमी आत्माओं के मिले सान्निध्य में प्रत्येक श्रीसंघ के श्रावक श्राविकाएं धार्मिक ज्ञान एवं शिक्षण प्राप्त करेगें। इस वर्ष उक्त प्रतियोगिता से दस हजार स्वाध्यायियों को जोड़ने का लक्ष्य रखा गया हैं। संपादक त्रय ने आह्वान किया कि उक्त प्रतियोगिता का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार हो तभी सभी के सहयोग से ही लक्ष्य तक पहुंचा जा सकता हैं। चारित्र आत्माओं की प्रेरणा हैं कि सभी श्रीसंघों में परिवार का प्रत्येक सदस्य ज्ञान वृध्दि रुपी इस भागीरथी अभियान से जुड़कर ज्ञान आराधना का लाभ लेवे। उत्तर प्रपत्र भेजने की अंतिम तिथि 31 दिसंबर 2017 निर्धारित की गई हैं। परीक्षा परिणाम मार्च 2018 में घोषित किए जाएंगे।

प्रेषक : दिलीप दरड़ा

पू. श्री मोहनमुनि जी म. का स्मृति दिवस

रतलाम (मध्य प्रदेश) : श्रमण संघीय सलाहका एवं महामंत्री तपस्वीराज पू. श्री मोहनमुनि जी म. (काले डंडेवाले) के दसवीं पुण्य स्मृति दिवस के मौके पर श्री जैन दिवाकर स्मारक, सागोद रोड, रतलाम पर दिनांक 27 मई शनिवार को प्रातः 7:30 बजे से 9:00 बजे तक नवकार महामंत्र के जाप रखे गए। जाप के पश्चात नवकारसी का आयोजन हुआ। स्मृतिपूर्ण इस अवसर पर अच्छी संख्या में श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित थे। पू. श्री मोहन मुनि जी म. का स्माकर संस्थान से गहरा नाता था तथा इसकी प्रगति का श्रेय भी उन्हें जाता है। इनकी प्रेरणा से स्थापित हुआ जैन दिवाकर हॉस्पिटल उनके उत्साह व कठिन श्रम का उदाहरण है।

प्रेषक : एस.सी. कटारिया

जय गुरु उमेश के जयकारों के साथ अणु शिष्यों का हुआ भव्य प्रवेश'

थांदला (मध्य प्रदेश) : गणाधीश पू. श्री उमेशमुनिजी अणु म.सा. के शिष्य पू. श्री जिनेंद्रमुनिजी म. के आज्ञानुवर्ती अणुवत्स पू. श्री संयतमुनिजी म., पू. श्री दिलीप मुनिजी म. एवं पू. श्री आदित्य मुनिजी म. 12 कि.मी. का उग्र विहार करते हुए सुजापुरा से थांदला आजाद चौक स्थित पौषध भवन पधारें। जैन समाज के हर वय के श्रावक-श्राविका यहाँ तक की बच्चों ने भी आपकी भव्य अगवानी की। पूज्यश्री ने पौषध भवन पर धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा कि भगवान महावीर के शासन में हम-आप सभी धर्म आराधना कर रहे है। आज के आधुनिक युग में भौतिक चकाचौंध में धर्म संस्कार लुप्त होते जा रहे है। ऐसे में सद्गुरुओं के सान्निध्य में समय-समय पर अल्पावधि के लिए आयोजित होने वाले शिविर में माता-पिता को चाहिए कि वे अपनी संतान को इसका हिस्सा बनाये। स्वार्थ से संसार और भटकाव है जबकि देव गुरु धर्म पर श्रद्धा से आंतरिक गुणों का विकास होता है। आंतरिक गुणों के विकास से ही व्यक्ति अच्छा इंसान बनता है, धार्मिक शिविर अच्छे इंसान से भगवान बनने की प्रक्रिया है। इस अवसर पर धार्मिक संस्कार एवं शिक्षण शिविर का आयोजन दिांक 21 मई से शुरु किया गया है। बाहर के 70 सहित 130 बच्चे शामिल हुए। **प्रेषक : पवन नाहर**

जैन सेवा फाउण्डेशन के तत्वावधान में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर

यमुना विहार (दिल्ली) : उत्तर भारतीय प्रवर्तक पू. गुरुदेव भण्डारी श्री पद्मचंद जी म. की जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में रविवार 28 मई, 2017 को श्री एस.एस. जैन सभा यमुना विहार दिल्ली में महावीर इंटरनेशनल दिल्ली (रजि.) के विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का भव्य आयोजन जैन सेवा फाउण्डेशन के तत्वावधान में श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस युवा समिति दिल्ली प्रदेश द्वारा उ.प्र. पू. डॉ. सुब्रत मुनि जी म., श्रमण संघ गौरव श्री विचक्षण मुनि जी म., प्रवचनकार पू. श्री उदितराम जी म., युवा मनीषी पू. श्री जागृत मुनि जी म. तथा सेवाभावी श्री मुदित मुनि जी. म. के पावन सान्निध्य में आयोजित किया गया।

इस शिविर का उद्घाटन श्री अतुल जैन अध्यक्ष जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश ने किया शिविर के विशिष्ट सहयोगी श्री अशोक जी जैन 'खट्टे वाले, अध्यक्ष यमुना विहार जोन, जैन कॉन्फ्रेस दिल्ली प्रदेश थे। इस अवसर पर जहां विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमान प्रमोद गुप्ता निमग पार्षद यमुना विहार उपस्थित थे वहीं जैन कॉन्फ्रेंस के श्री अशोक जी जैन जयचंदा, श्री हंस कुमार जी जैन, श्री ज्ञानचंद जी जैन, श्री संजय जी जैन, श्री रजनीश जी जैन अहीरमाजरा, श्री राधेश्याम जी जैन, श्री जयपाल जी जैन, श्री मनोज जी जैन, श्री गौरव जी जैन भागीरथी जैन, महामंत्री श्री शिखरचंद जी जैन, मंत्री श्री जगरोशन जी जैन, कोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्र प्रसाद जी जैन एवं राजेश कुमार मिश्र आदि उपस्थित थे।

विदित हो कि जैन सेवा फाउण्डेशन द्वारा निरंतर 12 निःशुल्क शिविरों का आयोजन किया जायेगा। इस शिविर में 457 मरीजों ने निःशुल्क स्वास्थ्य जांच का लाभ लिया। जिसमें मोतियाबिंद का 18 मरीजों का नाम निःशुल्क ऑप्रेशन के लिए नामित किया गया। महावीर इंटरनेशनल के कैम्प इंचार्ज श्री कौशलेन्द्र जी व उनकी पूरी टीम के विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा आँख, हार्ट, ई.सी.जी., ब्लड प्रेसर, ब्लड शुगर, ई.एन.टी., फिजियोथैरेपी, साधारण जांच आदि की सुविधाएं निःशुल्क दी गयी। शिविर में मरीजों को चश्मों व दवाईयों का निःशुल्क वितरण किया गया। जैन कॉन्फ्रेंस युवा समिति दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष श्री विपुल जी जैन, महामंत्री श्री दिनेश जी जैन रिंढ़ाना ने अपने सहयोगियों के साथ माला व स्मृति चिन्ह् देकर शिविर उद्घाटनकर्त्ता, विशिष्ट अतिथि एवं अन्य सहयोगियों का स्वागत अभिनंदन किया। शिविर को सफल बनाने में आदि का विशेष सहयोग रहा। श्री कपिल जी जैन, श्री पंकज जी जैन, श्री राकेश जी जैन, 'नगूरा' श्री आशीष जी जैन, श्री अभिषेक जी जैन एवं श्री मनीष जी जैन का योगदान रही वहीं इसके संयोजन में श्री आशीष जी जैन भागीरथी विहार एवं श्री संदीप जी जैन गौतमपुरी के प्रयास सराहनीय रहे।

प्रेषक : दिनेश जैन रिंढ़ाना

चार दिवसीय आर्ट और रेशम सिल्क ज्वैलरी सिखाने के कैम्प का आयोजन

मन्दसौर (मध्य प्रदेश) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस मध्य प्रदेश महिला शाखा के तत्वावधान में मंदसौर में चार दिवसीय आर्ट और रेशम सिल्क ज्वैलरी सिखाने का कैम्प आयोजित किया गया। कैम्प में महिला और बच्चों ने भाग लिया, जिसमें लवासा भी सिखाया गया। सौ. रूपल संचेती जी जैन और सौ. कल्पना जी मेहता जैन के द्वारा ये चीजें सिखाई गई। सभी का आभार कोषाध्यक्षा सौ. मनीषा जी मेहता ने माना। नवकार प्रार्थना जिला अध्यक्षा सौ. अनीता जी बाफना जैन ने की। इस अवसर पर सौ. इंद्रा जी रांका जैन, सौ. ललिता जी मेहता जैन, सौ. रजनी जी भटेवरा जैन, सौ. इंदु जी चौधरी आदि उपस्थित थी।

प्रेषक : शशि मारू जैन

आचार्य पू. श्री हस्तीमल जी म. दीपक के समान एक महान जैनाचार्य

बैंगलोर (कर्नाटक) : 3 मई 2017 बुधवार श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ बैंगलोर व श्री जेन रत्न हितैषी श्रावक संघ ट्रस्ट कर्नाटक के संयुक्त तत्वावधान में श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी बावीस सम्प्रदाय जैन संघ ट्रस्ट, (रजि.) गणेशबाग शिवाजी नगर के गुरु गणेश जैन स्थानक भवन के प्रांगण में सौभाग्य सूर्य उमेश गुरु कृपा प्राप्त श्रमण संघीय उपप्रवर्तिनी सरलमना महासती पू. श्री आदर्श ज्योति जी म. आदि ठाणा, गुरु मिश्री रुप सुकन कृपा प्राप्त श्रमण संघीय प्रखर वक्ता महासती पू.श्री धर्मप्रभा जी म. आदि ठाणा, गुरु पुष्कर देवेन्द्र कृपा प्राप्त श्रमण संघीय तपस्विनी महासती पू. श्री सुभा जी म. आदि की पावन शुभ निश्रा में इतिहास मार्तण्ड, आगम महोदधि, सामायिक स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, चारित्र चुड़ामणि, अखंड बाल ब्रह्मचारी प.पू. गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री 1008 श्री हस्तीमल म. का 26वां पुण्य स्मृति दिवस दो-दो सामूहिक सामायिक व विविध व्रत प्रत्याख्यान से गुरु महिमा गुणगान एवं अपूर्व श्रद्धाभक्ति से मनाया गया। संघमंत्री श्री गौतम ओस्तवाल ने गुरु हस्ती चालीसा व संघ समर्पणा गीत का सामूहिक गान कराया। पू. महासती मंडल द्वारा नवकार महामंत्र गान से मंगलाचरण किया। श्रीमती प्रभा गुलेच्छा न गुरु महिमा का सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए रत्न संघ मंत्री श्री गौतमचंद ओस्तवाल ने आचार्य श्रीहस्तीमल जी म. बहुमुखी व्यक्तित्व व कृतित्व का दिगदर्शन कराते हुए उनकी संक्षिप्त प्रभावी जीवन झांकी विविध प्रभावी संस्मरणों के साथ बड़ी ही ओजस्वी व शालीन भाषा में प्रस्तुत की।

इस अवसर पर करीबन 125 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में अनेक श्रद्धालुओं ने विविध प्रकार के त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किए। यह गुरु हस्ती महिमा गान कार्यक्रम महासतीवृंद के मंगलपाठ से सानंद संपन्न हुआ। कार्यक्रम का सफल संचालन संघमंत्री श्री गौतमचंद ओस्तवाल ने किया। स्वागत व धन्यवाद संघ अध्यक्ष श्री पदमराज मेहता ने किया।

प्रेषक : गौतमचंद ओस्तवाल

अक्षय तृतीया समारोह संपन्न एवं 2017 चातुर्मास का स्वागत

मैसूर (कर्नाटक) : सन 1992 के अविस्मरणी अद्भुत व गरिमामय चातुर्मास की पूर्णता एवं 4 दिसम्बर 1992 की जैन भागवती दीक्षा मैसूर में संपन्न कर 25 वर्षों के अंतरालम पर हमारी लगातार श्रद्धापूरित विनती को मान्य करके अनेक परीषहों को सहकर मैसूर पधारे। उत्तर भारतीय प्रवर्तक शासनसूर्य ध्यानयोगी श्री शांति स्वरुप म. के सुशिष्य श्रमण संघीय सलाहकार भीष्म पितामह राजर्षि तपस्वीरत्न पू. श्री सुमतिप्रकाश जी म. वाचनाचार्य उपाध्याय पू. श्री डॉ. विशालमुनि जी म. उपप्रवर्तक पू. श्री अभिषेक मुनि जी म. मधुर गायक श्री पुनीत मुनि जी म. प्रखरवक्त पू. श्री प्रबुद्ध मुनि जी म. अध्ययनशील पू. श्री तीर्थेश मुनि जी म. आदि ठाणा।

प्रेषक : श्री स्थानकवासी जैन संघ

सिन्हा ने किया विभिन्न रेल परियोजनाओं का उद्घाटन

हुबली (कर्नाटक) : केंद्रीय रेल राज्य मंत्री श्री मनोज सिन्हा ने आज अपने हुबली प्रवास के दौरान रेल सोधा परिसर में स्थित वर्षा जल संग्रहण हेतु बनाये गए टैंक का उद्घाटन किया इस अवसर पर दक्षिण पश्चिम रेलवे महाप्रबंधक श्री ए.के. गुप्ता, मंडल प्रबंधक अरुण कुमार जैन, दक्षिण पश्चिम रेलवे सलाहकार समिति सदस्य जैन समाज गौरव श्री महेंद्र सिंघी, हुबली धारवाड़ नगर पालिका उप महापौर लक्ष्मी बिजवाड़ सहित अनेक

जन उपस्थित थे, नव निर्मित पानी टैंक का निरिक्षण भी किया। सिन्हा के रेल सोधा में आगमन पर रेलवे पुलिस द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। इस दौरान श्री सिन्हा ने दक्षिण पश्चिम रेलवे द्वारा आगामी विभिन्न परियोजना के लिए भी अधिकारियो को दिशा निर्देश दिए और साथ में कहा की यात्रिओं को ज्यादा से ज्यादा सुविधा मिले इस पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। **प्रेषक : सुभाष जैन**

जय जिनेन्द्र की प्रेरणाएँ विषय पर व्याखान

चेन्नई (तमिलनाडु) : अंतर्राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र के निदेशक साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग (एडवोकेट) ने कहा कि जैन चिंतकों ने भारतीय भाषाओं में विपुल साहित्य की रचना की। जिसमें इतिहास और संस्कृति के अनेक उपयोगी तथ्य विद्यमान हैं। ऐसे साहित्य के संरक्षण व अन्वेषण पर ध्यान देना आवश्यक है। श्री एस.एस. जैन संस्कार मंच के तत्वावधान में 21 मई 2017 को मिंट स्ट्रीट स्थित जैन स्थानक में **'जय जिनेन्द्र की प्रेरणाएँ'** विषय पर व्याखान में कवि डॉ. धींग ने कहा कि विनय 'जय जिनेन्द्र' की पहली प्रेरणा है और वाणी-संयम दूसरी। इन सद्गुणों से अनेक समस्याओं को हल किया जा सकता है तथा कई पापों से बचा जा सकता है। अपने बहुचर्चित 'जय जिनेन्द्र गीत' की व्याख्या करते हुए डॉ. धींग ने कहा कि हमें स्वधर्मी वात्सल्य, एकता तथा जैने होने का गौरव कायम रखना चाहिए। उन्होंने आग्रह किया कि जिनेन्द्र भक्ति में गुरु श्रद्धा बाधक नहीं बननी चाहिए।

शुरु में सचिव प्रवीण नाहर ने मुख्य वक्ता डॉ. धींग का परिचय दिया। उन्होंने बताया कि प्रवर्तक पू. श्री रमेश मुनि जी म. के सुशिष्य श्री सिद्धार्थ मुनि जी म. की प्रेरणा से स्थापित संस्कार मंच सेवा और साधना के अनेक कार्य कर रहा है। देवेन्द्र बेताला ने सत्कार किया। इस अवसर पर पूर्व अध्यक्ष सर्वश्री भरत नाहर, शरद भिड़कचा, हस्तीमल लोढ़ा सहित अनेक गणमान्य मौजूद थे। **प्रेषक : मंगलचंद खारीवाल**

भगवान महावीर का जन्म कल्याणक धूम-धाम से सम्पन्न

चेन्नई (तमिलनाडु) : श्रमण भगवान महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक चैत्र शुक्ला त्रयोदशी श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ तमिलनाडु के तत्वावधान में स्वाध्याय भवन, साहूकारपेट, चैन्नई में सामायिक दिवस के रुप में मनाया गया। भगवान महावीर के साधनामय जीवन पर आधारित अनेक प्रसंगों एवं सिद्धांतों पर गुरुभ्राता श्री विनोदकुमार जी जैन ने सुन्दर विवेचन किया। श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक स्वाध्याय करते हुए कर्म निर्जरा की इस अवसर पर अनेक गणमान्य पदाधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन संघी मंत्री श्री गौतमचंद जी लोढ़ा ने किया। **प्रेषक : आर. नरेन्द्र कांकरिया**

छठी पुस्तक सफलता की कुँजी नित्य नियम

चेन्नई (तमिलनाडु) : श्री एस.एस. जैन संघ आवड़ी में श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस महिला शाखा की पूर्व अध्यक्षा कमला जी सज्जन राज जी मेहता द्वारा लिखित एवं संकलित **"छठी पुस्तक सफलता की कुँजी नित्य नियम"** का विमोचन श्रमण संघीय संघ हेतु समता साधक पू. उपाध्याय प्रवर रवीन्द्र मुनि जी म. आदि ठाणा, उपप्रवर्तिनी पूज्य श्री नीधि ज्योति जी म. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में आवड़ी जैन संघ महामंत्री श्री जबरचंद जी खिंवसरा, आयोजन संचालक हीरालाल जी रांका एस.एस. जैन

पुरस्वाकम संघ अध्यक्ष सोहनलाल जी झामड़ मंत्री ललेश जी कांकरिया, अध्यक्ष कमला सज्जनराज मेहता, राजकुमारी मूथा, सुनीता मेहता आदि कर कमलों से संपन्न हुआ।

मंच का संचालन हीरालाल जी रांका ने किया। चंदनबाला महिला मंडल आवड़ी ने मंगलाचरण एवं स्वागत गीत प्रस्तुत किया। युवा आनंद जी ने भजन के माध्यम से गुरु भक्ति का परिचय दिया। कमला जी मेहता ने बताया कि इस पुस्तक को छपवाने का मुख्य उद्देश्य यह है कि व्यक्ति अपनी दैनिक चर्या में प्रतिदिन 12 वृत त्याग, नियम, प्रत्याख्यान लेकर किस प्रकार कर्मबंध से बच सकें साथ ही पर्युषण पर्व में स्वाध्यायी के रुप में सेवा देने वाले श्रावक-श्राविकाओं के लिये यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध हो सके। पूज्य गुरुदेव एवं गुरुजी मैया ने प्रवचन के द्वारा सभी भक्तों को लाभान्वित कराया। साहूकार पेट सघ की ओर से संस्कार मंच सचिव प्रवीन नाहर ने गुरुओं के आगमन पर खुशी जताई। इस अवसर पर अनेक नगरों के प्रतिनिधियों की एवं श्री जैन महावीर महिला युवती मंडल की उपस्थिति सराहनीय रही। **प्रेषक : सज्ज राज मेहता**

उत्तराखण्ड़ में अद्‌भुत धर्म प्रभावना

रूद्रपुर (उत्तराखण्ड़) : संघशास्ता शासन प्रभावक गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. के सुशिष्य गणाधीश पू. श्री प्रकाश मुनि जी म. सा. के गुरुभ्राता संघ संचालक पू. श्री नरेश मुनि जी म. के आज्ञानुवर्ती प्रवचन प्रभावक पू. श्री रोहित मुनि जी म. कर्मठ श्रमण पू. श्री श्रेयांश मुनि जी म. ठाणे-2 सुखसाता पूर्व विराजमान हैं। गुरुदेवों का जसपुर से उत्तराखण्ड़ में प्रभावी विचरण चल रहा है। धर्म की अपूर्व लहर आई हुई है। कैबिनेट मंत्री श्री यशपाल आर्या ने चरणों में पहुंचकर उत्तराखण्ड पहुंचने पर स्वागत किया। कवि सम्मेलन में रूद्रपुर, देहरादून, दिल्ली के कवियों ने महावीर स्वामी की भावपूर्ण स्तुति की। सितारगंज, बिलासपुर श्रीसंघ बस लेकर गुरु चरणों में पहुंचे। रूद्रपुर, हल्द्वानी, काशीपुर, दिल्ली, गन्नोर, पानीपत, गुड़गाँव के गुरु-भगवंतों ने भी प्रवचनों का लाभ लिया। बच्चों ने भी सप्तकुव्यसन का त्याग किया।

कालाढुंगी से नैनीताल वालों की विशेष भावना पर नैनीताल पधारे। श्री जे.के. जैन एवं दिनेश अग्रवाल परिवारों ने भरपूर सेवा का लाभ लिया और उलाहना भी दिया कि बहुत वर्षों बाद नैनीताल संत पधारे। नैनीताल भी प्रवचनों में अच्छी रौनक रही। उत्तराखण्ड़ राजभवन में कर्नल हरीश साह की भावना पर गुरुदेव दर्शन देने पधारे, काफी देर धर्म चर्चा हुई, कर्नल जी बहुत प्रभावित हुई। नैनीताल से गुरुदेव हल्द्वानी पधारे। रास्ते में वीर भट्टी में शिशु-मन्दिर में प्रवचन किया। अध्यापकों से शिक्षा संस्कार, प्रचार की चर्चा हुई। हल्द्वानी लाला जम्मू प्रसाद, राजीव जैन परिवार ने तन,मन,धन से सहयोग दिया। हल्द्वानी में जैन स्थानक में गुरुदेव जी ठहरे। चार-पाँच दिन में ही सम्पूर्ण हल्द्वानी में लहर आ गयी। पू. श्रीदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. की पुण्यतिथि प्रध ाान प्रवीन जैन के संबंधित लाला कैशला चन्द अग्रवाल, अनुराग, श्री बिहारी पैट्रोल पम्प वालों की कोठी पर मनाई गयी। सितारगंज, रूद्रपुर, बिलासपुर, बाजपुर, काशीपुर, किच्छा, रानीबाग के गुरुभक्तों ने प्रवचनों का लाभ लिया। हल्द्वानी से सौलह किलोमीटर के करीब का जंगल पार करके गुरुदेव रूद्रपुर पधारे। 29 अप्रैल संघनायक शास्त्री जी श्री पदमनंद जी म. की प्रथम पुण्यतिथि अवास विकास, शिव मन्दिर में मनाई गयी। स्थानीय विध ाायक श्री राजकुमार ठुकराल जी ने प्रवचनों में पहुंचकर गुरुदेवों का स्वागत किया। निरंतर धर्म लाभ लेने का आश्वासन दिया। गुरुदेवों का इस वर्ष का चातुर्मास सितारगंज उत्तराखण्ड़ में है। **प्रेषक : एस.एस. जैन सभा**

निःशुल्क हृदय एवं कैंसर जांच शिविर का आयोजन

रोहिणी (नई दिल्ली) : पूज्य श्री रामप्रसाद जी म. के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में जैन कॉन्फ्रेंस महिला शाखा एवं श्री वर्धमान जैन महिला मण्डल के तत्वावधान में A.R.T.E.M.I.S. हॉस्पिटल के सहयोग से निःशुल्क हृदय व कैंसर जांच शिविर का आयोजन भगवान महावीर संस्थान केन्द्र रोहिणी सैक्टर ३, दिल्ली में लगाया गया।

जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय महिला उपाध्यक्षा श्रीमती संतोष जी जैन ने बताया कि इस कैम्प में बी.पी. , ब्लड़ शुगर, ई.सी.जी., इको, मैमोग्राफी व दांतों की फ्री जांच की गई, जिसमें बहुत से मरीजों ने स्वास्थ्य लाभ लिया। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन, चेयरमैन श्री रमेश जी जैन 'काहनी' के अलावा श्री नरेश जी जैन, श्री नरेन्द्र जी जैन, श्री निर्मल जी जैन, श्री सुरेश जी जैन, श्री संघ के पदाधिकारीगण, महिला संघ ने पूर्ण सहयोग दिया। श्री संघ के महामंत्री श्री राजेन्द्र जी जैन इस तरह के कैम्प लगाने की प्रशंसा की।

प्रेषक : संतोष जैन

शोक समाचार

श्री भारत भूषण जी जैन का देवलोक गमन

अम्बाला (हरियाणा) : प्रांतीय युवा अध्यक्ष श्री अमन जी जैन के पिताश्री भारत भूषण जी जैन का दिनांक 15 मई 2017 को 57 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण करके प्रभु चरणों में लीन हो गये। आप समाज के लिये मसीहा थे, बहुत धार्मिक प्रवृत्ति के थे। प्रतिदिन सामायिक के साथ लोगस्स का पाठ किया करते थे। अपने अंतिम समय में संथारा संलेखना के साथ इस संसार से विदा हो गये। आपने स्वयं जैसे संस्कार अपने परिवार को दिये हैं। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गये हैं। जैन कॉन्फ्रेंस परिवार दिवंगत आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

प्रेषक : विमल जैन

धर्मनिष्ठ, सुश्रावक एवं समाज सेवी श्री गोपीरामजी जैन (महावरी वाले) का देवलोक गमन

प्रशांत विहार (दिल्ली) : धर्म निष्ठ, श्रावका एवं समाज सेवी श्री गोपीराम जी जैन का गत माह 89 वर्ष की आयु में निधन हो गया। श्री गोपीराम जी चौविहार करने वाले सुश्रावक थे। उनके तीन पुत्र श्री हुकमचंद जैन, विनोद जैन व दामोदर जैन जो सभी धार्मिक व सामाजिक क्षेत्रों में अपना विशेष स्थान रखते हैं। श्री विनोद जैन प्रशांस विहार श्रीसंघ में विभिन्न दायित्वों की सुन्दर रुप में निभा चुके व वर्तमान के कार्यकारिणी सदस्य व मानव मिलन के उप-प्रधान के रुप में अपनी सेवाएँ समाज को दे रहे हैं। तपस्वी पू. श्री रोशन लाल म. की परम्परा में संत पू. श्री रघुनाथ मुनि जी म. श्री गोपीराम जी के समधि हैं व राजऋषि पू. श्री राजेन्द्र मुनि म. (शिष्य संघशास्ता शासन प्रभाव पू. श्री सुदर्शनलाल जी म.) के श्री गोपीराम जी संसार पक्ष से चाचा थे।

प्रेषक : जितेन्द्र जैन

धर्मनिष्ठ, सुश्रावक एवं दानी सेठ श्री मिश्रीमल जी वागरेचा जैन का देवलोक गमन

झाबुआ (मध्य प्रदेश) : धर्मनिष्ठ, दानी, सुश्रावक, समाजरत्न सेठ श्री मिश्रीमल जी वागरेचा जैन का 6 मई 2017 को साढ़े तेरह घंटे के संथारे से प्रयाण हो गया। महासती जी द्वारा एक वर्ष में यह तीसरा संथारा अल्प सयम में फलित हुआ। श्रीसंघ समाज में एकता व संयमी आत्मा की वैय्यावच्च के प्रति आपका पूरा परिवार सदैव तत्पर रहता है। ईश्वर मृत्यात्मा को शांति प्रदान करे।

प्रेषक : सुरेशचंद कुवाड़

धर्मनिष्ठ सुश्राविका सावित्री जैन का स्वर्गवास

प्रशांत विहार (पश्चिम दिल्ली) : धर्म निष्ठ, श्राविका मातेश्वरी सावित्री जैन का गत माह 67 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। मातेश्वरी सावित्री जैन हरियाणा के प्रतिष्ठित राजली वालों की पुत्री थी तथा बड़ौदा गांव के प्रतिष्ठित जैन परिवार में श्री खजांची लाल जैन की धर्मपत्नी बनी। श्री खजांची लाल जैन वर्तमान में प्रशांत विहार निवासी व श्री एस. एस. जैन सभा प्रशांत विहार के संरक्षक पद को सुशोभित करते हैं। मातेश्वरी सावित्री जैन के चार पुत्र श्री सुशील जैन, विकास जैन, अनिल जैन व मुकेश जैन व पुत्री सुमन जैन है।

मातेश्वरी सावित्री जैन के ज्येष्ठ पुत्र श्री सुशील जैन प्रशांत विहार श्रीसंघ के प्रमुख मार्गदर्शक जैन कॉन्फ्रेंस के संरक्षक व मानव मिलन के कोषाध्यक्ष के रुप में समाज व धर्म क्षेत्र में अपनी प्रशंसनीय सेवाएं दे रहे हैं। ईश्वर मृत्यात्मा को शांति प्रदान करे।

प्रेषक : जितेन्द्र जैन

धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती बसन्त देवी डांगी जैन का देवलोक गमन

उदयपुर (राजस्थान) : प्रसिद्ध उद्योगपति एवं श्री तारक गुरु जैन ग्रन्थालय के मंत्री की मातेश्वरी एवं उदयपुर शहर की प्रथम महिला महापौर श्रीमती रजनी डांगी की सास श्रीमती बसन्त देवी डांगी जैन का 85 वर्ष की उम्र में संथारा पूर्वक दिनांक 22 मई 2017 को देवलोकगमन हो गया। जिनका देवेन्द्र धाम में उठावना आयोजित किया गया। पिछले एक माह से अस्वस्थ चल रही बसंत देवी को कल प्रातः साढ़े आठ बजे श्रमण संघीय महाश्रमण जिनेन्द्र मुनि ने 'संथारा' दिलाया और उसके दो घंटे पश्चात इस नश्वर देह को त्याग दिया। श्रमण संघ के तृतीय पट्टधर पू. श्री आचार्य देवेन्द्र मुनि म. एवं श्रमण संघीय महासती पू. श्री पुष्पवती म. माता जी की बसन्त देवी सांसारिक भुआ थी। ईश्वर मृत्यात्मा को शांति प्रदान करे।

प्रेषक : वैभव डांगी

धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती कलावती जी छाजेड़ जैन का स्वर्गवास

उज्जैन (मध्य प्रदेश) : श्री महावीर श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी न्यास, सुभाष नगर, उज्जैन श्रीसंघ की वरिष्ठ धर्मनिष्ठ श्राविका श्रीमती कलावती जी छाजेड़ जैन पत्नी श्री चांदमल जी छाजेड़ जैन का 17 अप्रैल 2017 को स्वर्गवास हो गया। श्रीमती छाजेड का श्रीसंघ के कार्यों, संत-सतियों की सेवा और धार्मिक गतिविधियों में हमेशा अग्रणी भूमिका रहती थी। सभी को भी धार्मिक, सेवा कार्यों हेतु प्रेरणा देती थी। साधु-साध्वियों की वैय्यावच्च तथा अतिथि सेवा में हमेशा सबसे आगे रहती थी। कुछ समय से रुग्नावस्था में रहने के बावजूद संत-सतियों की गोचरी पानी व अतिथि सेवा में सहयोग करती थी। आपके पति श्री चांदमल जी छाजेड़ एडवोकेट हैं एवं सुपुत्र श्री अभय जी व अनिल जी छाजेड़ सुभाष नगर श्रीसंघ के प्रमुख स्तम्भ हैं। ईश्वर मृत्यात्मा को शांति प्रदान करे।

प्रेषक : प्रेमचंद बाफना

दिवंगत आत्माओं के प्रति कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि

जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा संचालित महत्त्वपूर्ण योजनाएँ

आपका सहयोग अनेकों का जीवन बदल सकता है

❖ **जीवन प्रकाश योजनाः** जिसने दिए है, हजारों लागों को सुख और सहयोग के सुनहरे पल। शिक्षा हो या आपात स्थिति, असाध्य बीमारी हो या विपदा में पड़ गया जीवन। जीवन प्रकाश योजना ने अपना यथा नाम तथा गुण सार्थक किया है। कॉन्फ्रेंस की इस गौरवशाली योजना में आधार स्तम्भ बनने के लिए 51,000 रुपये, प्रमुख आधार बनने के लिए 1,01000 रुपये तथा संरक्षक बनने के लिए 2,51,000 रुपये देकर आप भी कर सकते हैं, कई अंधेरी जिन्दगियों में उजाले की रोशनी।

❖ **जीव दया योजनाः** जीव दया योजना हम में अपने आप के जैन होने का गौरव जगाती है। जीव मात्र के प्रति भगवान महावीर का अहिंसा संदेश हम साकार कर सकते हैं। आप स्थान–स्थान पर कॉन्फ्रेंस के बैनर तले जीव दया की गतिविधियों को प्रोत्साहित करके योजना को सार्थक करें। यही विनम्र निवेदन है। आधार स्तम्भ बनने के लिए 51,000 रुपये, प्रमुख आधार बनने के लिए 1,01000 रुपये तथा संरक्षक बनने के लिए 2,51,000 रुपये।

❖ **मानव सेवा योजनाः** कॉन्फ्रेंस की अहिंसा को जीवंत करती योजना है। इस योजना के माध्यम से स्थान–स्थान पर लगाये जाते है– विकलांग सेवा शिविर, कृत्रिम अंग वितरण और स्वास्थ्य जांच शिविर जैसे महत्वपूर्ण सेवा कार्य, नेत्र चिकित्सा शिविर आदि इस योजना के महत्वपूर्ण अंग है। तो उठाइए अपना समर्थ हाथ और भर दीजिए अनेक विकल्प जिन्दगियों में आशा का सवेरा। आधार स्तम्भ बनने के लिए 51,000 रुपये, प्रमुख आधार बनने के लिए 1,01000 रुपये तथा संरक्षक बनने के लिए 2,51,000 रुपये।

❖ **ज्ञान प्रकाश योजनाः** इस योजना के माध्यम से कॉन्फ्रेंस चाहती है कि देशभर में आगम शास्त्रों का वितरण एवं स्वाध्याय की गतिविधियों को प्रोत्साहन। इस योजना को सफल बनाकर आप अपना जीवन सफल बना सकते है।

❖ **वैय्यावच्च समितिः** इस समिति के माध्यम से वैय्यावच्च के अंतर्गत देशभर में विचरणरथ अथवा विराजित साधु–साध्वीवृंद की सेवा, आहार–विहार, गोचरी तथा शिक्षा आदि का कार्य किया जाता है। जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा संचालित यह समिति बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। आप भी इसके साथ जुड़कर धर्म लाभ अर्जित कर सकते है।

:: निवेदक ::

मोहनलाल चोपड़ा जैन	डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन	महेन्द्र बोकरिया जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12 शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली– 110 001